अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन

सहज

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

परिभाषा संहिता

प्रणेता एवं लेखक

ए. नागराज

प्रकाशक :
जीवन विद्या प्रकाशन
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल, अमरकंटक
जिला - अनूपपुर (शहडोल), मध्यप्रदेश

प्रणेता एवं लेखक :
ए. नागराज

संस्करण : प्रथम

मुद्रण तिथि : 11-09-2008

सहयोग राशि :
120/- रुपये

मुद्रक :
रायपुर (छ.ग.)

ग्राफिक्स-डिजायनिंग :
आकाश कम्प्यूटर, रायपुर दूरभाष-94252-04130

प्राक्कथन

मैं इस परिभाषा संहिता को सम्पूर्ण मानव के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। साथ में यह भी सत्यापित कर रहा हूँ कि सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में गठनपूर्ण परमाणु के रूप में जीवन का अध्ययन किया हूँ जिसमें आशा, विचार, इच्छा का प्रकटन मानव परंपरा में हो चुका है। जीव परम्परा में जीने की आशा रूप प्रकट हो चुकी है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान के संयुक्त रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान ध्रुवीकृत होना रहना का सम्पूर्ण आयाम दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्यों में वर्चस्वी, सकारात्मक, फल परिणाम को प्रस्तुत करने योग्य अध्ययन किया हूँ। यह अध्ययन विधिवत होने पर विश्वास करना मेरा कर्तव्य हो गया है कि यह केवल मेरा ही समाधान नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए समाधान है। इसे प्रस्तुत करते समय सोच-विचार से शब्द, शब्द से वाक्य, वाक्य से प्रयोजन इन तीन मुद्दों के आशय को परिभाषा द्वारा मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ। इसे अध्ययन करते हुए मानव अपने मंतव्य को व्यक्त कर सकता है।

इस प्रस्तुति में भाषा अर्थात् शब्द परम्परागत है परिभाषा मेरे द्वारा दिया गया है। परिभाषा परम्परा का नहीं है। इस विधि से इसे एक विकल्पात्मक रूप में हर मानव अपने में अनुभव कर सकता है। जिससे ही सर्वशुभ होने की सम्पूर्ण संभावना है।

11-09-2008

ए. नागराज
प्रणेता : मध्यस्थ दर्शन
सहअस्तित्ववाद
अमरकंटक (म.प्र.)

विकल्प (जीवन विद्या)

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

   विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

   मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता, (जानने वाला), सह-अस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान व मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

   अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए.नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान ''ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'' जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

   उपासना :- देवी देवताओं के संदर्भ में

   कर्म :- स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)

   मनुधर्मशास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।

   कर्म काण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

   इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है ? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

   समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभवपूर्ण समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों के अनुसार- रहस्य मूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय

   विकल्प के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ.

6. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व

रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही ''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद'' शास्त्र सूत्र है।

सत्यापन

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे ?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्‌गाता प्रमाण ?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य, एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और प्रक्रिया होना

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है ? समानता व धर्म निरपेक्षता ?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से -

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।
सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आई।

(4) सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप

रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अट्ठारह घंटे तक होती रही।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारी। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व के रूप में मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाङ्गमय ''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद'' शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे अजीर्ण व परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मनुष्य शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में से के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(i) अस्तित्व में चार अवस्थाएँ
- पदार्थ अवस्था
- प्राण अवस्था
- जीव अवस्था
- ज्ञान अवस्था और

(ii) अस्तित्व में चार पद
- प्राणपद
- भ्रांति पद
- देव पद
- दिव्य पद

(iii) और
- विकास क्रम, विकास
- जागृति क्रम, जागृति है।

जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैं सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो
धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।

- ए. नागराज

अ

अखण्ड – व्यापक वस्तु जड़-चैतन्य प्रकृति में पारगामी व पारदर्शी यही अखण्ड है। जिसका खंड-विखंड, छेद-विच्छेद, संगठन-विघटन न हो- यही अखण्ड है। सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अखण्डता अविभाज्यता स्पष्ट है।

– तीनों काल में सर्वत्र विद्यमान, भाग-विभाग रहित सहज नित्य वर्तमान वैभव (यही व्यापक है, अखण्ड है)।

– मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था व आचरण में सामरस्यता-अखण्ड समाज और चारों अवस्था, यथा-पदार्थ-प्राण-जीव और ज्ञानावस्था संपन्न धरती स्वयं अखण्ड। व्यापक अखण्ड है व्यापक वस्तु में हर धरती अखण्ड है। सहअस्तित्व में चार अवस्थाएं इस धरती में प्रकट है।

अनन्त – संख्या करण क्रिया से वस्तुऐं अधिक होना, अग्राह्य होना या स्थिति में अगणित रूपात्मक अस्तित्व ।

– गणितीय प्रक्रिया में आवश्यकता से अधिक (कम या) धन-ऋण की स्थिति में पाया जाने वाला रूपात्मक अस्तित्व-उक्त दोनों स्थितियों में गणना कार्य अपने को अपूर्ण पाता है।

– मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व में समझने, चाहने, करने, उपयोग, सदुपयोग प्रयोजनकारी आवश्यकता से अधिक संख्या मात्रा व गुणों के रूप में वस्तुऐं वर्तमान है।

अनुभव – चैतन्य इकाई (जीवन) में चारों परिवेशीय शक्तियों को वैभवित करने वाली मध्य में स्थित मध्यांश सहज अक्षय शक्ति और उसका वैभव। क्रिया प्रक्रिया सहज पूर्ण चक्र अनुक्रम से प्राप्त ज्ञान प्रत्यावर्तन विधि से मध्यस्थ सत्ता व्यापक वस्तु सर्वत्र एकसा विद्यमान है यह प्रमाण प्रस्तुत होना अनुभव व समझ है, समझ ही अनुभव है।

– सहअस्तित्व में अस्तित्व सहज परमाणुओं में विकास क्रम, विकास, जीवन, जीवन में जागृतिक्रम-जागृति रासायनिक भौतिक रचना-विरचनाओं सहज यथार्थता वास्तविकता व सत्यता को जानने-मानने की क्रिया। जीवन तृप्ति सम्पन्न होने वाली क्रिया अनुभव क्रिया है। व्यापक वस्तु जड़-चैतन्य प्रकृति में पारगामी है यह मानव परम्परा में ज्ञान प्रमाण व विवेक रूप में प्रस्तुत होना अनुभव है।

– प्रत्येक मनुष्य में संचेतना पूर्णता सहज अर्थ में जानने-मानने, पहचानने और निर्वाह करने के रूप में क्रियारत है। पहचानने व निर्वाह करने की क्रिया जड़ प्रकृति में भी प्रमाणित है। मनुष्य में ही जानने और मानने का वैभव तृप्ति के रूप में है। सम्पूर्ण संबंधों और उसमें निहित मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया। व्यापक वस्तु हर परस्परता में पारदर्शी है यह मानव परम्परा में भी प्रमाणित होना अनुभव है।

अवधारणा – वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य, स्थिति सत्य-सत्य

बोध सहज यथावत् जानने मानने की बोध क्रिया।

– बुद्धि में होने वाले बोध ही अवधारणा है जो मन, वृत्ति चित्त में भास, आभास और साक्षात्कार से अधिक स्थिर होते हैं।

– न्यायपूर्ण व्यवहार, धर्मपूर्वक विचार व सत्य सहज अनुभूति (बोध) ही अवधारणाएं हैं।

अनन्यता – निभ्रम ज्ञान की निरंतरता।

– परस्पर एकात्मता।

– मनुष्य की परस्परता में पूरक क्रिया कलाप प्रामाणिकता व समाधान में निरंतरता। अविकसित के विकास में सहायक क्रिया। सामरस्यता पूर्ण सह–अस्तित्व और उसकी निरंतरता।

अर्थ – क्रिया (यें) शब्दार्थ – अस्तित्व में वस्तु व क्रिया का स्वरूप इंगित होना (रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, स्थिति, गति, देश, दिशा, काल, नियम, नियंत्रण, संतुलन, प्रत्यावर्तन–आवर्तन)।

– जागृति क्रम में न्याय दृष्टि की पहचान।

– जागृति पूर्वक तन, मन व धन सहज पहचान व उनकी अविभाज्य वर्तमान कार्य–व्यवहार में समाधान रूपी फल–परिणाम सहज पहचान।

अंश – – प्रत्येक छोटे से छोटे या बड़े से बड़े इकाई के गठन में पाये जाने वाले समस्त समान रूप, गुण, स्वभाव वाले इकाईयाँ अंश कहलाती है। परमाणु के गठन में पाये जाने वाले समस्त 'कण' परमाणु अंश कहलाते

हैं, अणु के संगठन में परमाणु अणु अंश कहलाते हैं।

– अंश, इकाई के गठन के संदर्भ में समान है, जबकि भाग, विभाग व अंग पिंड व शरीर के संदर्भ में भिन्नता पायी जाती है जैसे शरीर के विभिन्न अंग– परंतु अंश के रूप में कोशिकाओं का समान पाया जाना।

– मानव शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ।

अंकुर – बीज से वृक्ष होने की ओर आरंभिक संकेत–स्तुषी बीज से वृक्ष होने का आरंभिक प्रमाण।

– बीज से वृक्ष होने सहज प्रवृति प्रकाशन।

– योग पाकर विपुल विस्तार होने योग्य स्पंदनशील प्राणियों (वृक्षों) का संक्षिप्त गठन, प्राण कोषाओं सहज सम्मिलित रचनारंभण क्रिया।

अकर्तव्य – प्रत्येक स्तर पर स्थापित संबंध एवं संपर्क में निहित मूल्य, मानवीयतापूर्ण आशा व प्रत्याशा का निर्वाह न करना अथवा अमानवीयतापूर्वक आचरण व व्यवहार करना।

अकाल – ऋतु असंतुलन पीड़ा, समस्या।

अकर्मणत्व – कर्म से मुक्ति पाने का प्रयास (आलस्य और प्रमाद)।

अक्रूर – शाकाहारी शरीर रचना और शाकाहारी जीव व मानव।

अंगहार – भाषा, भाव, भंगिमा, मुद्रा, अंगहार सहज संयुक्त प्रकाशन।

अंगीकार – स्वीकारा समझा हुआ।

– स्वीकारा हुआ – प्रकाशित होने के पक्ष में– सुना स्वीकार हुआ।

अंतर्राष्ट्र – पृथ्वी सहज सम्पूर्ण राष्ट्र की साम्य परस्परता।

अंतर्राष्ट्रीयता की अखंडता – मानवीय संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सहज एकात्मकता।

अचेतन – संवेदनाओं को प्रकाशित करने में व्यतिरेक व व्यवधान।

– कर्म स्वतंत्रता व कल्पनाशील संवेदनाओं को प्रकाशित नहीं कर पाना।

– अस्वस्थता।

अर्चना – यथा स्थिति से श्रेष्ठ आचरण के लिए किया गया प्रकाशन, संप्रेषणा (विचार प्रक्रिया) एवं सहज अभिव्यक्ति पूर्णता के अर्थ में प्रस्तुति।

अण्डज – अण्डों से प्रकट होने वाले कीट पतंग पक्षी जीव।

अन्तरद्वंद्व – आशा विचार इच्छा सहज परस्परता में विरोध।

– संस्कृति सभ्यता विधि व व्यवस्था में परस्पर विरोध।

– कायिक वाचिक मानसिक परस्परता में विरोध।

अन्तर नियोजन – इकाई द्वारा स्वयं के शक्ति (यों) का विकास/जागृति सहज स्वयं में नियोजन।

– समाधान सहज विचारों का अन्तर नियोजन।

– अनुभवगामी प्रणाली में निश्चय व निष्ठापूर्वक किया गया अध्ययन।

अन्तर नियामन – पूर्वानुक्रम संकेत ग्रहण क्षमता (पूर्वानुक्रम = वरीयता क्रम याने आत्मा, बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन)।

– अनुभवमूलक प्रमाण, स्वीकृतियाँ।

अन्तरनिहित – समाया हुआ, समा लिया गया, समाया हुआ का वर्तमान प्रमाण।

अन्तरमुखी – आशा, विचार, इच्छाओं को अनुभव प्रकाश में परिपूर्ण होना।

– संवेदनाओं को संज्ञानीयता अनुरूप होना।

– समाधान सहज रोशनी में समृद्ध होना।

अन्तरंग-व्यवहार – सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण सम्पन्न बुद्धि में बोध और प्रमाणित करने सहज संकल्प।

– बुद्धि में प्रमाणित करने सहज संकल्प, चित्त में चिंतनपूर्वक साक्षात्कार, वृत्ति में विचार रूप में प्रमाणित होने सूत्र सहित चित्रण क्रिया।

– अनुभव व प्रमाण सहज चित्रण रूपी न्याय, धर्म, सत्य सहज तुलन विश्लेषण सहित आस्वादन पूर्ण प्रमाणित करने संबंधों का पहचान सहित चयन करना।

अन्तरंग साधन – सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सम्पन्नता।

– समाधान अभय व न्याय सम्पन्नता।

– वर्तमान में विश्वास।

– मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि एवं उससे उत्पन्न आशा, विचार, इच्छा व संकल्प क्रिया।

अन्तःकलह – भ्रमात्मक कल्पना सोच विचार समस्याओं से पीड़ित रहना।

अन्तःकरण – मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि आत्मा सहज क्रियाकलाप।

अन्तःकरण क्रिया– सहअस्तित्व में अनुभव सम्पन्न जीवन जागृति सहज दृष्टापद क्रिया जागृत जीवन क्रिया।

– न्याय धर्म सत्य सहज प्रमाण सम्पन्न जीवन क्रिया।

अन्तरण – जागृति सहज यथा स्थिति गति। क्रिया परंपरा

अन्तरविरोध– कहने में, बोलने में, सोचने में, करने में, होने में अर्थ व प्रयोजन संगत न होना, अपेक्षाओं के विपरीत फल–परिणाम घटित होना।

– जीवन क्रियाओं सहज परस्परता में विरोध जैसे चयन, विचार, चिंतन व संकल्प में परस्पर विरोध।

अंतर्नाद – आत्मप्रेरणा अनुभव सूत्र, अंतःकरण की समन्वयता सहज अपेक्षा होना।

अन्तरनिहित– चैतन्य इकाई में समाहित।

– चैतन्य इकाई में अविभाज्य।

– चैतन्य इकाई में वर्तमानित प्रमाण।

अन्तरवाणी – अनुभवमूलक वचन, अनुभव सहज स्फुरण।

अन्तरसंबंध – लक्ष्य में समानता का कायिक वाचिक मानसिकता में एकरूपता देश कालानुसार प्रक्रिया, फल परिणाम में एकरूपता।

अन्तरिक्ष – एक ब्रह्माण्डान्तर्गत अवकाश।

अन्यमनस्क – जागृति के लिए आशा किये रहना किन्तु संभव न हो पाना।

अन्तिम प्रक्रिया – फल परिणाम रूप में यथा स्थिति।

अन्तिम संकल्प – दृष्टा पद में जागृति सहज अभिव्यक्ति में, से, के लिए।

– अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या में, से, के लिए।

– सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या में, से, के लिए।

अन्योन्याश्रित – संबंध परस्परता में उपयोगिता पूरकता।

अन्वेषण – स्वयं को पहचानना व पहचानने सहज क्रिया।

– प्राप्य की उपलब्धि के लिए किए गए बौद्धिक एवं भौतिक प्रयास, खोज पूर्वक।

अन्न – शरीर पोषण एवं परिवर्धन के लिए प्रयुक्त वस्तुयें।

अन्नमयकोष – इकाई में प्रवर्त्तित ग्रहण क्रिया, पदार्थावस्था में अंशों का ग्रहण, प्राणावस्था में रस पुष्टि तत्व का ग्रहण, जीवावस्था में जीने के लिए आशा (विषयों का) ग्रहण, ज्ञानावस्था में संस्कार ज्ञान ग्रहण प्रधान क्रिया है।

अन्तराल – अनुभव अध्यापन कार्य व्यवहार व्यवस्था में समायोजित समयावधि।

अन्धेरा – अपारदर्शक वस्तु के एक ओर अधिक तप्त बिम्ब सहज प्रतिबिम्ब होना दूसरे ओर परछाई – अंधेरा।

– धरती के एक ओर सूर्य का प्रतिबिम्ब दूसरे ओर धरती की परछाई।

– परछाई जब तक रहता है इसे रात्रि, प्रतिबिम्ब बेला को दिन की संज्ञा है।

अन्याय – मानवीयता और गुणात्मक विकास में बाधक क्रियाकलाप।

अलंकार – शरीर व लज्जा का रक्षा करना।

– शीत वात उष्णातिरेक से बचाव करना।

अखण्ड समाज – मानवीयता पूर्ण मानव समाज परंपरा, क्रियापूर्णता व आचरण पूर्णता सहज प्रमाण सम्पन्न मानव परंपरा; मानवीय शिक्षा संविधान व्यवस्था आचरण सम्पन्न मानव परम्परा; समुदाय चेतना से मुक्ति मानव चेतना संपन्न परंपरा; भ्रम से मुक्त जागृति सम्पन्न मानव परंपरा; व्यक्तिवाद व अवसरवादी प्रवृत्तियों से मुक्त सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्न मानव परंपरा; न्याय सत्यपूर्ण व्यवहार मानव परम्परा; सर्वतोमुखी समाधान संपन्न शिक्षा संस्कार परम्परा; दस सोपानीय पाँच आयामी सहज व्यवस्था परम्परा; समाधान, समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज मानव परंपरा; मनाकार को साकार करना व मनः स्वस्थता सहज प्रमाण परम्परा।

– सहअस्तित्व, समाधान, अभय, समृद्धि पूर्णता।

– धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनीति सहज पालन, परिपालन में एक सूत्रता।

– मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था व आचरण में सामरस्यता।

अखंड राष्ट्र – मानवीय शिक्षा, संस्कार, राज्य व्यवस्था, संविधान व आचरण में सामरस्यता का वर्तमान।

अखण्डता में ओतप्रोत – व्यापक वस्तु में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति अविभाज्य।

– व्यापक वस्तु में नित्य क्रियाशील प्रकृति।

– नियम नियंत्रण संतुलन प्रमाण।

अग्रिमता – विकास क्रम पद्धति से होने वाली घटना। स्थिति, गति एवं उपलब्धि की संभावना।

अग्रिम प्रक्रिया – अखण्ड समाज सार्वभौम सहज सूत्र व्यवस्था में जीना।

अग्रगामीयता – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम व जागृति सहज निरंतरता।

– मानव परम्परा में अमानवीयता से मानवीयता, मानवीयता से देव मानवीयता, देवमानवीयता से दिव्य मानवीयता और निरंतरता।

– व्यक्ति से परिवार, परिवार से समुदाय, समुदाय से अखण्ड समाज।

– विषय चतुष्टय प्रवृत्तियों से ऐषणात्रय प्रवृत्ति, ऐषणात्रय प्रवृत्ति से लोकेषणात्मक प्रवृत्ति, लोकेषणात्मक प्रवृत्ति से सर्वशुभ प्रवृत्ति अग्रगामीयता है।

अग्रेषण – आगे गति, आगे फल, आगे प्रयोजन।

– अग्रिम विकास के लिए क्षमता, योग्यता, पात्रता की नियोजन क्रिया। अग्रिम विकास पद में संक्रमण, पूरकता व उदात्तीकरण क्रिया जैसे – पदार्थावस्था से

प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था की वर्तमान क्रिया।

अर्जन – स्वत्व होना।

– स्वतंत्र होना।

– जागृति पूर्ण होना।

– योग्यता व पात्रता को लक्ष्य के अर्थ में विवेक और विज्ञान पूर्वक किए गए क्रियाकलापों से प्राप्त प्राप्तियाँ।

नोट :– मानव परंपरा में संपूर्ण प्राप्तियाँ स्वतंत्रता एवं स्वराज्य ही है क्योंकि स्वतंत्रता भ्रम मुक्ति का साक्षी है और स्वराज्य, मानवीयता का साक्षी है। भ्रम मुक्ति ही, मुक्त जीवन है।

– स्वत्व के रूप में प्राप्ति।

अजस्त्र प्रवहन – प्रखरता व पूर्णता में से के लिए समझ सहज निरंतरता।

– समाधान सहज निरंतरता।

– कार्य व्यवहार व्यवस्था सहज निरंतरता।

अजीर्ण – आवश्यकता से अधिक ग्रहण करना अथवा होना।

– आवश्यकता से अधिक संग्रह करना।

– आवश्यकता से अधिक अतिभोग, बहुभोग करना।

अजीर्ण परमाणु – संतुलन व नियंत्रण से अधिक प्रस्थापित अंशों का होना।

– अंशों को विस्थापित करने में प्रयत्नशील परमाणु।

– विकिरण प्रसार कार्यरत परमाणु।

अणु – एक से अधिक परमाणुओं का गठित रचनायें।

अणु बंधन – अणु रचना में परमाणु भार का आधार।

– परमाणु के मध्यांश–भार बन्धन सूत्र है।

अतिमानवीयता– धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणापूर्ण स्वभाव।

– सुख, शांति व संतोष, आनंद रूपी धर्म व सत्यमय दृष्टियाँ। विषय – लोकेषणा तथा अस्तित्व रूपी परम सत्य।

अतिवाद – व्यक्तिवाद, समुदायवाद अधिमूल्यन, अवमूल्यन, निर्मूल्यनवादी वार्तालाप।

अतिभोग – आहार, निद्रा, भय, मैथुनात्मक क्रिया कलाप में लिप्त रहना।

अतिरेक – असंतुलनकारी क्रियाकलाप।

– पूरकता उपयोगिता सहज वैभव से रिक्त रहना।

– समस्याओं से पीड़ित रहना, समस्याकारी कार्य व्यवहार करना।

अतिसंतृप्ति – मानव परंपरा में सदा–सदा के लिए तृप्ति–सर्वतोमुखी समाधान, जागृति, दृष्टा पद प्रतिष्ठा।

– ज्ञानानुभूति (अस्तित्व में अनुभूति और उसकी निरंतरता) में स्थिति व गति।

अतिसूक्ष्मांश – परमाणुओं में संगठित रूप में कार्यरत अंश।

– परमाणु सूक्ष्म क्रिया और परमाणु अंश अतिसूक्ष्म क्रिया।

अतिइन्द्रियानुभव - जीवन में से के लिए अनुभव प्रमाण, जीवन मूल्य मानव मूल्य स्थापित मूल्यों का अनुभव प्रमाण।

अतिविपन्न - तन-मन-धन संबंधी समस्याओं की पीड़ा, भ्रमवश किया गया कार्य व्यवहार का फल परिणाम संबंधी पीड़ा, दीनता हीनता क्रूरतावादी सोच विचार कार्य-व्यवहार सम्बन्धी पीड़ा।

अथक - जागृत मानसिकता सहज प्रमाण।

अर्थतंत्र - जागृत मानसिकता सहित तन व धन की उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता एवं विनिमिय सुलभता प्रमाण।

अर्थनीति - तन-मन-धन का सदुपयोगात्मक सुरक्षात्मक कार्य व्यवहार व निरंतरता।

अर्थशास्त्र - विधिवत किया गया अर्थोपार्जन सहज अर्थ का सदुपयोगात्मक, सुरक्षात्मक एवं विनिमियात्मक विचारों का आवर्तन शील प्रेरणा स्रोत

अर्थ सुरक्षा - अर्थ की अखण्ड समाज में ही सदुपयोग और वर्तमान में विश्वास ही अर्थ की सुरक्षा है (तन-मन-धन के रूप में अर्थ)।

अर्थोपार्जन - ज्ञान विवेक विज्ञान सम्पन्नता, सर्वतोमुखी समाधान संपन्नता, न्यायोन्मुखी प्रवृत्ति सहित समृद्धि सहज अर्थ में किया गया उत्पादन।

अछेद्य - जिसका भाग विभाग न हो । साम्य ऊर्जा, सत्तात्मक अस्तित्व।

अद्यमी - समस्याकारी (भ्रमित मानव)।

अधमता - वीभत्स कार्य व्यवहार घटना।

अर्ध चेतन - पहचान क्रिया में अस्पष्टता।

अर्धांगिनी - पति-पत्नी सहज परस्परता में जागृत मानसिकता सहित एक रूपता, स्व-नारी व स्व-पुरूष संबंध प्रमाणित होता हुआ दाम्पत्य।

अधिकार - ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना सम्पन्नता है।

- सहअस्तित्व में व्यवस्था सूत्र का क्रियान्वयन, चूंकि अस्तित्व में ''प्रत्येक इकाई अपने त्व सहित व्यवस्था है''। मानव के लिए मानवत्व ही स्वराज्य।

अधिकारी - जागृत मानव ही मानवीयता पूर्ण विधि से जीने देते हुए जीने का अधिकारी है।

- गुणात्मक परिवर्तन, विकास।

अधिमूल्यन - जो जिसका रूप गुण स्वभाव धर्म है उससे अधिक मानना।

विकास की ओर गति, जागृति की ओर गति (गठनपूर्णता की ओर विकास, प्रमाणिकता और समाधान की ओर जागृति)।

अधिष्ठान - चैतन्य इकाई का मध्यांश आत्मा है अधिष्ठान। मध्यस्थ शक्ति, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल का वर्तमान।

अध्याहार - तर्क एवं युक्ति संगत पद्धति से व्यवहार प्रमाण सिद्ध करना।

अध्यापक – समझदार मानव, समझदारी प्रमाण सहित समझाने सहज कार्य करने वाला।

– ज्ञान विवेक विज्ञान सहित समाधान सहित व समृद्धि संपन्न मानव।

– स्वयं में विश्वास; श्रेष्ठता का सम्मान; प्रतिभा व व्यक्तित्व में संतुलन; व्यवहार में सामाजिक–व्यवसाय (उत्पादन) में स्वावलम्बी मानव।

अध्यापन – समझा हुआ को समझाना, सीखे हुए को सीखाना, किए हुए को कराना।

– अधिष्ठान के साक्षी में अर्थ बोध कराने के लिए कारण गुण गणित पूर्वक किए गये संपूर्ण क्रियाकलाप।

– हर विद्यार्थी स्वयं में विश्वास श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा व व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक व्यवसाय में स्वावलम्बन योग्य शिक्षा संस्कार में पारंगत होने की क्रिया।

अध्ययन – अधिष्ठान (आत्मा) व अनुभव की साक्षी में स्मरण पूर्वक किए गए क्रिया–प्रक्रिया एवं प्रयास।

अध्ययनगम्य – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व चारों अवस्था त्व सहित व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी का सहज रूप में स्पष्ट होना।

– वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य, स्थिति सत्य स्पष्ट होना।

– सत्यता, यर्थाथता, वास्तविकता स्पष्ट होना।

अध्यात्मिकता – व्यापक वस्तु नित्य वर्तमान सहज ज्ञान सम्पन्नता।

– व्यापक वस्तु में जड़–चैतन्य प्रकृति ऊर्जा संपन्न।

– क्रियाशील नियम नियंत्रण सन्तुलन सम्पन्नता ज्ञान विवेक विज्ञान वैभव परंपरा।

अध्यात्म – समस्त आत्माओं के आधारभूत ''सत्ता''। व्यापक, अरूपात्मक अस्तित्व, निरक्षेप ऊर्जा, परम अवकाश, परमात्मा।

– शून्य ही साम्य ऊर्जा महाकारण, चेतना, परस्परता में दूरी, जड़–चैतन्य प्रकृति में पारगामी, पारदर्शी, पूर्ण।

– मध्यस्थ सत्ता स्थिति पूर्ण है, सत्ता में संपृक्त प्रकृति नियम नियंत्रण संतुलन न्याय धर्म सत्य प्रकाशन पूर्वक त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी पूर्वक परंपरा है।

अध्यास – – शरीर में संपन्न होने वाले क्रियाकलाप–संवेदना।

– यांत्रिक क्रिया (कर्मेन्द्रिय द्वारा भी) बिना मन के सहायता या न्यूनतम सहायता से होने वाली क्रियाओं का सम्पन्न होना, ''चलना सीखने के पश्चात चलना''।

– परम्परागत शारीरिक कार्यकलापों और विन्यासों को गर्भावस्था से ही स्वीकारने के क्रम में जन्म के अनंतर अनुकरण करने की प्रक्रिया।

अध्यात्मवाद – सह–अस्तित्व में अनुभव मूलक पद्धति से सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति सहज अभिव्यक्ति।

– अनुभव मूलक विधि से सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

– अनुभव मूलक विधि से सत्ता में संपृक्त चारों अवस्थाओं का अध्यापन विधि से प्रकाशन।

अध्यात्म विज्ञान– नित्य, सत्य, शुद्ध, बुद्ध सत्ता में अनुभूति योग्य क्षमता हेतु प्रयुक्त प्रक्रिया प्रणाली।

अनवरत – सदा-सदा वर्तमान।

अनर्थ – जिसका जो स्वभाव गुण न हो और जो गुणात्मक परिवर्तन के लिए सहायक न हो, जैसे – मनुष्य मानवत्व के प्रति जागृत न होकर जीवों के सदृश्य जिए।

अनवरत सुलभ – सदा-सदा प्राप्त।

अनावश्यक – प्रतिक्रान्ति, जो विकास में सहायक न हो एवं अहितकारी हो ऐसे क्रियाकलाप।

अनादि – शुरूआत के बिना नित्य वर्तमान।

– अस्तित्व सहज वर्तमान का कारण, गुण, गणित से आरंभ होने का प्रमाण सिद्ध न होना।

– जिसके आदि का कारण न होना अथवा उत्पत्ति का सूत्र ही न होना।

अतिव्याप्ति दोष –भ्रमवश अधिमूल्यन कार्य व्यवहार।

– जिसका अर्थ जैसा है, उसे उससे अधिक मानने की भ्रमित क्रिया।

अनाव्याप्ति दोष –भ्रमवश अवमूल्यन कार्य व्यवहार।

– जिसका अर्थ जैसा है, उसे उससे कम मानने की भ्रमित क्रिया।

अव्याप्ति दोष – भ्रमवश निर्मूल्यन कार्य, व्यवहार।

– निरीक्षण परीक्षण में त्रुटि, अपूर्णता।

– यथार्थता से भिन्न।

– जिसका अस्तित्व जैसा है, उसे उससे भिन्न मानने की भ्रमित क्रिया।

अनासक्ति – भ्रम व अमानवीय विषयों से मुक्ति; मानवीय, देव व दिव्य मानवीय विषयों में प्रवृति प्रमाण।

अनुर्वरा – बीज को पाकर अनेक बीजों को उत्पन्न करने में अनुपयोगी, अक्षम मिट्टी।

अनुकम्पा – अभ्युदय के अर्थ में, सर्वतोमुखी समाधान में, से, के लिए समझदारी, ईमानदारी व भागीदारी से जीने देने के रूप में किया गया उपकार व सहयोग सहायता।

अनुकरण – संप्रेषणा के रूप में किया गया मानसिक, कायिक व वाचिक क्रियाओं का दोहराना।

अनुकूल – स्वीकारने योग्य परिस्थितियाँ-परम्परागत क्रम में मानवीय संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था सहज वर्तमान (आचरण)।

अनुकूल आचरण– मानवीय मूल्य चरित्र नैतिकता सहज प्रमाण परम्परा।

अनुक्रम – विकास क्रम विकास, जागृति क्रम, जागृति और जागृति सहज निरंतरता।

– विकास क्रम में वर्तमान क्रिया-प्रक्रिया और उपलब्धि

का पूर्ण चक्र या संपूर्ण रूप।

अनुक्रम से प्राप्त उत्पत्ति – विकास क्रम में गुणात्मक योग्यता का उपार्जन।

अनुगमन – परम्परा के रूप में अनुकरणीय गति, मानवीयता पूर्ण परम्परा गति में भागीदारी करना।

अनुग्रह – दया, कृपा, करुणा सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

– मानव परम्परा में जागृति सहज क्षमता के लिए योग्यता पात्रता स्थापना कार्य।

अनुदान – अभ्युदय के अर्थ में समर्पण।

अनुपम – मौलिकता सम्पन्न होना। पदार्थावस्था में मृद, पाषाण, मणि धातु के रूप में मौलिक, प्राणावस्था व जीवावस्था मौलिक और ज्ञानावस्था में मानवीयता पूर्ण आचरण सम्पन्न मानव मौलिक है।

अनुपातिक विधि – सहअस्तित्व सहज स्थिति में मात्रा का गति में।

– सहअस्तित्व सहज स्थिति में दूरी का रचना में।

– सहअस्तित्व सहज स्थिति में विस्तार का परस्परता में।

– सहअस्तित्व सहज स्थिति में पूरकता ही अनुपातिक विधि है ।

अनुमान – अनुक्रम से किए गए अपेक्षा क्रिया जो वृत्ति, चित्त और स्मरण (धी) के संयुक्तता में होता है।

– ''निश्चित'' क्रिया-कलाप के पक्ष में किया गया अपेक्षा।

– आवश्यकीय (मानवीय) क्रिया-कलापों के अर्थों में अपेक्षा।

अनुप्राण – अनुरागीय प्रेरणा।

– सहअस्तित्व में विकास क्रम विकास जागृतिक्रम जागृति सहज निरंतरता में परस्परता, परस्पर प्रेरणा है।

– सह अस्तित्व में ही चारों अवस्थायें व पद अनुपातीय विधि से वर्तमान और उपयोगिता पूरकता विधि से प्रेरकता व प्रेरित होना।

अनुप्राण सूत्र – विकास क्रम में भौतिक रासायनिक वस्तु के यथास्थिति सहज वैभव के अर्थ में।

– संपूर्ण प्रकृति परस्परता में पूरक है यही अनुप्राण सूत्र है।

अनुप्राणित – चार अवस्था व चार पद व्यवस्था सहज रूप में प्रमाण परंपरा।

अनुबन्ध – संबंधों में आवश्यकता सहज आधार पर स्वीकृति पूर्वक पूरकता उपयोगिता विधि से निर्वाह।

– स्वीकृति व वचनबद्धता पूर्वक निर्वाह, स्वीकृति जागृति सहित संकल्प पूर्वक त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह।

– अनुक्रमात्मक परस्परता (विकास क्रम की अवधारणा एवं संकल्प सहित निष्ठा)।

अनुबंधानुक्रम – जागृति सहज परम्परा के रूप में निर्वाह।

अनुबन्धित – स्वीकृति, जागृत प्रयास व दृढ़ता।

अनुबिम्ब - हर बिम्ब का प्रतिबिम्ब रहता है, हर बिम्ब का प्रतिबिम्बन अनुबिम्ब कहलाता है जो बहुकोणों में प्रसारित रहता है।

अनुबिम्बन - अनेक कोणों में प्रतिबिम्ब प्रसारण क्रिया।

अभिभूत - अभ्युदय के अर्थ में जागृति पूर्वक अभिव्यक्ति संप्रेषणा सहज सम्पन्नता व प्रमाणित करने की प्रवृत्ति।

अनुभव बल - मानव परंपरा में से के लिए प्रमाण सहज स्त्रोत।

- मानव संचेतना सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

- अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रकाशन।

अनुभव गम्य - अध्ययन पूर्वक अनुभव मूलक विधि से अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

- समीचीन अनुभव मूलक विधि से अनुभवगामी प्रणाली से अध्ययन व प्रमाण।

- मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण।

अनुभवगामी - मानवीयता पूर्ण आचरण रूपी मानव संस्कृति का बोध कराना।

- मानवीय महिमा संपदा का बोध कराने व करने का कार्य।

- सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी में, से, के लिए आवश्यकता बोध कराना।

अनुभव दर्शन- सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहज सत्यापन।

- व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक संपृक्त है यह समझ में आना प्रमाणित होना।

- व्यापक वस्तु सहज साम्य ऊर्जा के रूप में समझ में आना प्रमाणित होने का सूत्र व व्याख्या है।

अनुभवशील - अनुभव क्रम में अध्ययन-अध्यापन करता हुआ मानव।

अनुभवात्मक अध्यात्म-यह अस्तित्व में अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति।

अनुभवात्मक अध्यात्मवाद-सहअस्तित्व में मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति और मध्यस्थ जीवन का अध्ययन, अवधारणा और अनुभव।

अनुभूत - अनुभव सहज सम्पन्नता।

अनुभूति - अनुक्रम से प्राप्त (जागृति क्रम में प्राप्त) सजगता एवं सतर्कता पूर्ण समझदारी की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन (अनुक्रम याने विकास और जागृति)।

- अनुक्रम अर्थात् विकास क्रम में प्राप्त सतर्कता एवं सजगतापूर्ण समझदारी, विचार शैली एवं जीने की कला जो स्वयं मानव परंपरा में प्रामाणिकता व समाधानपूर्ण अभिव्यक्ति, समाधान और न्यायपूर्ण संप्रेषणा तथा न्याय और नियमपूर्ण जीने की कला का प्रकाशन व क्रियाकलाप।

- अनुभूति स्वयं प्रत्येक मनुष्य में होने वाली जीवन जागृति सहज जानने व मानने की क्रिया है।

- सहअस्तित्व ही संपूर्ण भाव है, इस कारण ''प्रत्येक

एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है'' और समग्र व्यवस्था में भागीदार है-इस कारण प्रत्येक एक में वास्तविकता और सत्यता नित्य वर्तमान है, उसे यथावत् जानने मानने की क्रिया ही मनुष्य में अनुभव के नाम से जाना जाता है। इंद्रिय सन्निकर्ष अर्थात् इंद्रिय गोचर जितने भी क्रियाकलाप है वह सब पहचानने एवं निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित होने का नाम ही भाव एवं अध्ययन है।

अनुभूति सर्वस्व- चिदानंद - चित्त में सत्य बोध का आप्लावन, स्वीकृति और अभिव्यक्ति।

- आत्मानंद - आत्म बोध, चित्त में होने वाली अनुभव सहज, बुद्धि में होने वाला आप्लावन।

- ब्रह्मानंद-सहअस्तित्व में अनुभव, उसकी अभिव्यक्ति।

अनुमान - अनिश्चित योजना आंकलन।

अनुमोदन - प्राप्त प्रस्ताव को स्वीकारना।

अनुमोदित - स्वीकृत प्रस्ताव।

अनुयायी - निश्चित योजना कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संकल्पनिष्ठ सम्पन्न मानव।

अनुरंजित - आवश्यकता के अनुसार शोभनीय रूप प्रदान करना, प्रेम सहज तत्परता।

अनुरूप - अनुक्रम से प्रस्तुत रूप।

अनुवर्तित - क्रमागत सार्थक आचरण व प्रक्रिया।

अनुवर्ती क्रिया- बार-बार दोहराना।

अनुष्ठान - मौलिक अधिकार का निर्बाध गति से किया गया आचरण। अनुक्रम पूर्वक उत्थान के लिए किया गया कार्यकलाप।

अनुषंगी - मानव परम्परा में संस्कार, जीवावस्था में वंश परम्परा, प्राणावस्था में बीज वृक्ष परंपरा, पदार्थावस्था में परिणाम परंपरा।

अनुचित - मानवीयता, देव मानवीयता और दिव्य मानवीयता के विपरीत क्रियाकलाप जो स्वयं अमानवीयता के रूप में पशु मानव एवं राक्षस मानव के प्रवृत्ति एवं कार्यकलाप को स्पष्ट करता है ।

अनुशासन - यर्थाथता वास्तविकता सत्यता सहज सम्पन्न होने का क्रम।

अनुशीलन - बोध सम्पन्नता क्रम में स्वयं स्फूर्त संतुलन।

अनुराग - निर्भ्रमता में प्राप्त आप्लावन।

अनुरागीय - क्रमागत विधि सहज स्वीकृति व निष्ठा।

अनुसंधान - मानवीयता पूर्ण परम्परा में से के लिए ज्ञान विवेक विज्ञान संबंधी सहज सूत्र व्याख्या।

- व्यवस्था, आचरण, संविधान स्वीकार होने योग्य पद्धति व शिक्षा।

- अनुभवमूलक उद्घाटन।

अनुस्मरण - अज्ञात को ज्ञात करने अप्राप्त को प्राप्त करने की परम्परागत सूत्र व्याख्या प्रमाण सहित प्रयोगों को अपनाना।

अनुस्यूत - निरंतर अथवा निरंतरता होना।

अनेकता - मतभेद, अवस्था भेद, यथास्थिति।

अनेक कर्म - उत्पादन कार्य में अनेक उपाय व प्रक्रिया।

अनिर्वचनीय - वचन से नहीं बताया जा सकना अथवा नहीं बता पाना।

अनिष्ट - भ्रमात्मक सोच विचार कार्य-व्यवहार के रूप में समस्याएं।

- प्रगति एवं विकास और उसकी अपेक्षा के विपरीत घटना और क्रियाकलाप। (अमानवीयता)

अनिवार्य - समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी।

अनिवार्यता - विकल्प विहीन आवश्यकता, प्रक्रिया।

अनिश्चियता - समाधान सुनिश्चित न होना।

अनीति - तन, मन, धन रूपी अर्थ का अपव्यय।

अत्याशा - अन्तहीन संग्रह सुविधा में प्रवृत्ति विवशता।

अपरा - फलवत ज्ञान। (परा अर्थात् मूलवत ज्ञान)

अपराध - नियति विरोधी सार्वभौम व्यवस्था विरोधी कार्य व्यवहार प्रवृत्तियाँ।

- पर-धन, पर-नारी / पर-पुरुष पर-पीड़न क्रिया।

अपनापन - जागृत मानव सहज परस्पर संबंधों में विश्वास।

अपनत्व - मानवत्व सहज समानता का पहचान विधि सहज प्रवृत्ति आचरण।

अपहरण - बलपूर्वक अन्य के स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार पर

हस्तक्षेप। उन्हें उससे वंचित कर देना।

अपरिग्रह - उत्पादन में स्वावलंबी, श्रमपूर्वक समृद्धि पर विश्वास होना।

अपरिणामी - चैतन्य इकाई, व्यापक वस्तु, गठनपूर्ण परमाणु, जीवन।

- स्थिति पूर्ण सत्ता, अरूपात्मक अस्तित्व ज्ञान, ब्रह्म, ईश्वर, निरपेक्ष शक्ति, चेतना व जीवन।

अपरिणामिता- भारबन्धन, अणुबन्धन, प्रस्थापन-विस्थापन से मुक्त वैभव।

अप्रिय - इंद्रियों से अग्राह्य।

अपरिहार्य - यथास्थिति पूरकता उपयोगिता।

अपरिहार्यता- विकल्प विहीन सुलभ संभावना।

अपव्यय - दीनता, हीनता, क्रूरता में, से,के लिए किया गया तन मन धन रूपी अर्थ का व्यय।

अपव्यय का अत्याभाव - मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

अपारदर्शकता - एक तरफ प्रकाश पड़ने पर दूसरे तरफ परछाई होना अपारदर्शकता का अर्थ है। अपारदर्शी वस्तु भी एक बिम्ब है। उस पर जितने भी प्रकाश पड़ता है वह सब किसी बिम्ब का ही प्रतिबिम्ब है।

अपूर्ण - किसी भी धरती पर चारों अवस्था त्व सहित व्यवस्था प्रकट होने के क्रम में अपूर्ण, प्रकट होने के उपरान्त परंपरा सहज वैभव है।

- इस धरती पर मानव अपने मनाकार को साकार करने

के क्रम में समर्थ मन: स्वस्थता को प्रमाणित करने के क्रम में वर्तमान सन् 2008 तक अपूर्ण।

अपूर्ण फल - मानव समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार, भागीदार होने के पहले अपूर्ण फल है। समुदाय मानसिकता सहित अपूर्ण है।

- जिस फल के अनंतर पुन: फलोपलब्धि के लिए प्रयास शेष हो।

अपूर्ण दर्शन- मानव परंपरा में सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान जीवन ज्ञान मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान संपन्नता पर्यन्त अपूर्ण दर्शन।

अपूर्ण धन - आवर्तनशील अर्थतंत्र के पहले अपूर्ण धन।

अपूर्ण पद - लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद प्रवृत्ति लक्ष्य सुविधा संग्रहवादी सभी पद समस्याओं से ग्रसित हो यही अपूर्ण पद है।

अपूर्ण बल - द्रोह-विद्रोह शोषण युद्ध में, से, के लिए नियोजित किया गया बल का परिणाम अपूर्ण। जीने देकर जीने में प्रयुक्त तन-मन-धन का फल पूर्ण बल है।

अपूर्ण बोध - सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण बोध होने के पहले अपूर्ण बोध।

अपूर्ण समाज- सच्चरित्रता संपन्न होने तक अपूर्ण समाज।

अर्पण - स्व संतोष, तोष अथवा श्रद्धापूर्वक किया गया आदान-प्रदान।

- अपेक्षा सहित नियोजन क्रिया।

अपरिष्कृत - वस्तु अपने निश्चित रूप गुण स्वभाव धर्म से विकृत होना।

अपेक्षा - संवेदनशीलता के आधार पर लाभ भोग काम की आशा आवेश।

- संज्ञानशीलता के आधार पर समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व में प्रमाण।

- आवश्यकीय आशा (परस्पर दायित्व एवं कर्तव्य पालन की इच्छा या पालन में विश्वास)।

अपेक्षाकृत - परस्परता की तुलना में।

अपेक्षित - अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था।

अप्रकाशन - प्रकटन का पूर्व रूप क्रिया। सहअस्तित्व सहज अभिव्यक्ति में असमर्थता।

अभय - वर्तमान में विश्वास।

- सहअस्तित्व और आनंद सहज अपेक्षा में बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि पोषण क्रिया।

- परस्पर विश्वास और पूरक क्रिया।

अभयशील - वर्तमान में विश्वासापेक्षा अभय के लिए आशान्वित।

अभयता - भविष्य में भी अभयता पूर्वक जीने के लिए आशा, विचार परिस्थिति। वर्तमान में विश्वास।

अभ्यस्त - अभ्यास किया, जागृत हो चुके, प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है।

अभ्यास - सर्वतोमुखी समाधान रूपी व्यवस्था सहज साक्षात्कार करने के लिए किया गया प्रयास (चिंतन) व प्रयोग।

– समाधान पूर्ण संचेतना पूर्वक मनुष्य के समस्त क्रिया-कलाप।

– न्याय दृष्टि सम्पन्न, दयापूर्वक समस्त कार्य-व्यवहार मानवीय परस्परता में पूरकता व उदात्त पूर्वक क्रियायें, साम्य मूल्यों समानता व विश्वास सहज निरंतरता के अनुभूति में मानवीय कार्य, साधनों के उत्पादन-विनिमय व सुरक्षा-सदुपयोग की सुनिश्चितता व निरंतरता सहज कार्यकलाप, पारंगत व प्रमाणित होने की प्रक्रिया।

अभ्यास दर्शन – अभ्यास से होने वाले प्रयोजन उपयोगिता व आवश्यकता सहज स्वीकृति।

– समझ सहज आवश्यकता रूप में स्वीकृति।

– समझने के उपरान्त समझाने में ध्यान देने पर स्वीकृति।

अभ्यास त्रय– प्रयोग, व्यवहार और चिंतन।

अभ्युदय – सर्वतोमुखी समाधान (मानवीय शिक्षा, संस्कार, आचरण, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति राज्य व्यवस्था एवं संविधान परंपरा) सम्पन्नता व प्रमाण।

– सार्वभौम राज्य व्यवस्था।

अभ्युदय पूर्ण – अखण्ड सामाजिकता सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी परम्परा।

अभ्युदयशील – सर्वतोमुखी समाधान में, से, के लिए प्रयत्न सहज क्रिया कलाप की स्वीकृति व प्रमाण।

अभिमान – आरोपित मान (मापदण्ड) जिसमें स्व बल, बुद्धि,

रूप, पद, धन को श्रेष्ठ तथा अन्य को नेष्ट मानने वाली प्रवृत्ति एवं क्रिया।

अभिनंदन – अभ्युदय प्रमाण प्राप्तकर्ता के प्रति सम्मान, कृतज्ञता सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा व प्रकाशन।

अभिनय – स्वयं अमानवीयता में प्रवृत्त रहते हुए मानवीयता, देव मानवीयता का काल्पनिक विधि, वेश, भाषा, भाव भंगिमा अंगहार सहित प्रदर्शन।

अभिभावक – पोषण-संरक्षण कार्य सहित अभ्युदय चाहने वाला।

अभिभूत – ज्ञान विवेक विज्ञान सहज संकल्प चिंतन में तत्परता, ज्ञान विचार निश्चयन क्रियान्वयन फल परिणाम ज्ञानानुसार होने व समाधान में स्वीकृत, मुद्रा भंगिमा।

अभिलाषा – समाधान सुखी होने सहज आशा अपेक्षा।

अभिव्यक्ति – सर्वतोमुखी समाधान में से के लिए किया गया कायिक वाचिक मानसिक क्रियाकलाप।

– अभ्युदय के अर्थ में स्वअस्तित्व सहज प्रकाशन। चैतन्य प्रकृत्ति की आशा, विचार, इच्छा, संकल्प एवं अनुभूतियों तथा जड़ प्रकृति रूपी शरीर की रासायनिक तथा भौतिक रचना व क्रिया के द्वारा अन्य को सर्वतोमुखी समाधान, समझ में आने के रूप में किया गया संपूर्ण कायिक, वाचिक, मानसिक क्रिया।

– अभ्युदय अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान का क्रियान्वयन विचार, विन्यास, व्यवहार क्रियाकलाप।

अभिव्यंजना– अभ्युदय (सर्वतोमुखी) में से के लिए प्राप्त प्रेरणाओं को स्वीकार करने और उत्सवित रहने सहज प्रमाण।

अभिशाप - भ्रमवश समस्याओं की पीड़ा से पीड़ित रहना और पीड़ित करना।

अभिहित - समाधान जागृति के लिए निश्चित विधि बोध/समझ में आना।

अभिप्राय - अभ्युदय के परिप्रेक्ष्य में व्यंजना अभ्युदयार्थ व्यंजना। (दूसरों का समझा पाना)

अभीप्सा - अभ्युदय के लिए स्वीकृति व इच्छा।

अभीष्ट - जागृति सहज वैभव परम उपलब्धि के रूप में स्वीकारना प्रकट करना।

- अभ्युदय के अर्थ में प्रयुक्त आशा, आकांक्षा, इच्छा संकल्प।

अभीष्ट समाधान - सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रमाण प्रस्तुत करना।

अमति - अमान्य कर्म, शास्त्र व विचार।

- जीव चेतनावादी।

अमन - सुखी होने का प्रमाण, सुख संतोष सम्पन्नता।

अमरत्व - अक्षय बल व शक्ति सम्पन्न चैतन्य इकाई गठन पूर्णता, चैतन्य क्रिया, चैतन्य पद प्रतिष्ठा और भ्रम मुक्ति तथा उसकी निरंतरता ।

अमर - परिणाम का अमरत्व जीवन रूपी चैतन्य इकाई।

अमानवीयता- हीनता, दीनता, क्रूरतात्मक स्वभाव, प्रिय हित लाभात्मक दृष्टि तथा आहार, निद्रा भय मैथुन-सीमान्तवर्ती विषय प्रवृत्तियाँ।

अमानवीय दृष्टि -प्रिय, हित, लाभ।

अमानवीय विषय - आहार, निद्रा, भय, मैथुन।

अमानवीय स्वभाव - दीनता, हीनता, क्रूरता।

अमानवीयता का भय - द्रोह, विद्रोह, शोषण व युद्ध।

अमीर - अधिक संग्रही या संग्रही।

अमूल्य - मूल्यांकन सीमा से अधिक।

अमोघ - परम, अधिक कम से मुक्ति (पूर्णता)।

अमृतमय - सहअस्तित्व में जागृत जीवन।

अरमान - सकारात्मक अपेक्षायें।

अरहस्यता - समझदारी, सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व वर्तमान।

अरूचि - स्वीकार नहीं होना।

अरूपात्मक वस्तु - सत्ता, साम्य ऊर्जा।

अरुपात्मक अस्तित्व - पारगामी, पारदर्शी महिमा सम्पन्न व्यापक वस्तु।

अलगाव - किसी सम्मति का अलग-अलग करना-मतभेद होना।

अलाभ - अधिक मूल्य के प्रदान में कम मूल्य का आदान।

अलाद चक्र - रस्सी के एक छोर को जलाकर घुमाने से एक ध्रुव में आग रहते हुए आंखों में आग गोलाकार में दिखाई पढ़ता है यही अलाद चक्र है। जबकि रस्सी अति छोटे समय में एक ही जगह होती है। इससे पता लगता है कि सच्चाई आँखों में नहीं आता समझ में आता है।

अलिप्तता - विषय चतुष्टय तथा एषणा त्रय के प्रति मुक्त क्रिया।

अवगाहन - समझने की सफल प्रक्रिया।

– ओत-प्रोत अवस्था। अनुभव की साक्षी में अवधारणा क्रिया।

अवकाश – प्रत्येक इकाई की परस्परता के मध्य में पाये जाने वाले रिक्त स्थान के रूप में ऊर्जा, व्यापक अस्तित्व।

अवतरण – प्रगट होना।

अवतरित – प्रकट हो चुका।

अवतारी – उपकार करने वाला, नासमझ को समझदार होने में सहायक होना।

अवधि – सीमा, सभी ओर से सीमित इकाई, वस्तु।

अवनति-अवकाश – पतन की संभावना, गिरने की संभावना, ह्रास की संभावना, ह्रास की ओर गति।

अवमूल्यन – जो जिसकी मौलिकता है उससे कम आंकना।

– ह्रास = स्वभाव मूल्यों का अप्रकाशन।

अवलंबन – आश्रित अथवा आश्राम (श्रम सहित आश्रय किये रहना आश्राम है)। विकास पूर्ण परम्परा बनाये रखना।

अवयव – एक रचना में समाहित उप रचना।

अवबोधन – अवधारणा में, से, के लिए शिक्षा एवं उपदेश प्रक्रिया।

अवलोकन – निरीक्षण, परीक्षण व सर्वेक्षण, स्पष्टता-समझना, हर अवस्था सहज इकाईयों का रूप गुण स्वभाव धर्म समझना।

अवरोध – रूकावट।

अवश्यम्भावी – भविष्य में घटने वाली घटना।

– किसी भी कार्यकलाप का फल परिणाम होना।

अवसरवादी – प्रिय-हित-लाभात्मक प्रवृत्ति पूर्वक किया गया द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, कार्य।

– इसे आगे पीढ़ी को समझाना यही भ्रमात्मक परम्परा है।

अवस्था – चार अवस्था (पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान)।

– पूरकता उपयोगिता विधि से प्रकटन इसी धरती पर।

अवस्था भेद – चारों अवस्था में निश्चित पहचान मौलिक पहचान और प्रयोजन।

अवस्था चतुष्टय – पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था (मनुष्य)।

अवस्थिति – परम्परा के रूप में स्पष्ट।

अर्वाचीन – प्राचीन से पहले।

अविकसित सृष्टि – पदार्थावस्था प्राणावस्था का संयुक्त प्रकाशन ही अविकसित सृष्टि है। (रासायनिक भौतिक संसार)

अविद्या – भ्रमात्मक दर्शन विचार शास्त्र परिकल्पना कार्य व्यवहार।

– जैसा जिसका रूप-गुण-स्वभाग-धर्म या स्थिति व गति है, उसको उसी प्रकार समझने की अक्षमता।

अविनाशिता – शाश्वत रहना, होना, नित्य वर्तमान।

– व्यापक वस्तु जड़-चैतन्य वस्तु में पारगामी परस्परता में पारदर्शी सहज वैभव होने के रूप में स्पष्ट।

– चैतन्य इकाई, गठनपूर्ण परमाणु, अणु बंधन भार बंधन से मुक्त, आशाबंधन से युक्त, जागृतिपूर्वक आशाबंधन से मुक्ति होने की स्पष्टता।

– सहअस्तित्व।

अविभाज्य – अलग–अलग न होना, साथ में होना–व्यापक वस्तु में जड़–चैतन्य संयुक्त है। चैतन्य इकाई में से कोई अंश अलग–विस्थापित–प्रस्थापित नहीं है। गठनपूर्णता सहज निरंतरता है। जीवन अमर है, व्यापक सत्ता है।

अविरत – सदा–सदा वर्तमान।

अविदित – विकासक्रम विकास–जागृतिक्रम जागृति सहअस्तित्व वैभव है। इसके विपरीत क्रियाकलाप जो मानव ही भ्रमवश करता है यही अविदित है।

अविश्वास – न्याय के प्रति संदिग्धता, छल, कपट, दंभ, पाखण्ड।

अवैध – अमानवीयता पूर्ण क्रियाकलाप।

अशान्ति – समस्या ग्रस्त मानसिकता।

अशेष – सम्पूर्ण (सत्ता में संपृक्त प्रकृति)।

अस्तित्व – व्यापक सत्ता में संपृक्त जड़–चैतन्य प्रकृति रूपी अनंत इकाईयों सहज वैभव।

– ''जो है'' जिसके होने को स्पष्ट व प्रमाण रूप में समझने का प्रयास आदिकाल से ही मानव करता रहा।

– ''होना'' त्व सहित होना। होने के आधार पर सभी वस्तुओं का अध्ययन, सूत्र, व्याख्या व विश्लेषण पूर्वक स्पष्ट होना। भौतिक–रासायनिक वस्तु के रूप में परिणामशील, यथास्थिति परम्परा में उपयोगिता–पूरकता विधि से त्व सहित व्यवस्था है। विकास क्रम, विकास सहज जागृति क्रम जागृति सहज स्थितियों में स्थित इकाईयाँ अपने त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में है।

अस्तित्व दर्शन – सर्वत्र सदा सदा विद्यमान, पारगामी पारदर्शी व्यापक वस्तु में भीगे, डूबे, घिरे जड़–चैतन्य रूपी प्रकृति चार अवस्था में धरती पर है, इसके रूप गुण स्वभाव धर्म सहज त्व सहित व्यवस्था–समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। यही अस्तित्व, अनुभव में प्रमाण, अनुभव सहज तद्रूप विधि से मानसिकता होना पाया जाता है।

अस्तित्व धर्म – विकास क्रम विकास, जागृति क्रम जागृति सहज स्थितियों में स्थित इकाईयाँ अपने त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में है।

अस्तित्व मूलक – होने के आधार पर सभी वस्तुओं का मानव अपने ज्ञान विवेक विज्ञान से अध्ययन करता है। मानव ही ज्ञानावस्था सहज वैभव है यही मानव कुल में जागृत जीवन दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज सूत्र है, होने के आधार पर जीने देने व जीने के आधार पर सोचना समझना करना फल परिणाम समझ के अनुरूप होना।

अस्तित्ववादी – होने देने और होने के हर मुद्दे पर सूत्र व्याख्या विश्लेषण पूर्वक स्पष्ट होना।

अस्तित्वशील – भौतिक, रासायनिक जीवन क्रियाएं परिणामशील यथास्थिति परम्परा में उपयोगिता पूरकता विधि से

विकसित व्यवस्था है।

– विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति में क्रियाशील प्रकृति।

अस्तित्व पूर्ण – सर्वत्र, सर्वदा, व्यापक में अनंत इकाईयों की स्थिति।

अस्तित्व सहज – नित्य वर्तमान होने के रूप में वर्तमान।

अस्तित्व में अखण्डता – सहअस्तित्व।

अस्तित्व सर्वस्व – होने के रूप में, व्यापक वस्तु में समाहित जड़-चैतन्य प्रकृति, व्यापक वस्तु रूपी सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति, सत्ता में भीगा डूबा घिरा हुआ जड़-चैतन्य प्रकृति अस्तित्व ही सह अस्तित्व, सहअस्तित्व ही चार अवस्था पदों में गण्य है। सह अस्तित्व में ही मानव मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता सहज प्रमाण ही जागृति है। अस्तित्व स्थिर व विकास एवं जागृति निश्चित है।

अस्थिर – मानव भ्रमवश अधिकतम अनिश्चयता से पीड़ित।

अस्तु – इसलिए।

असंग्रह – समृद्धि सहज प्रमाण यही असंग्रह वैभव।

असंतुलन – समस्याओं की पीड़ा, भ्रमित मानव ही अमानवीयता वश असंतुलित और असंतुलनकारी, भ्रमवश मानसिकता में किया गया कार्य-व्यवहार अव्यवस्था है।

असंतुलित – भ्रमवश ही संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था में असंतुलन, मनुष्य समस्या ग्रस्त है।

असंतोष – संग्रह सुविधावादी मानसिकता।

असत्य – न्याय, धर्म, सत्य विरोधी मानसिकता।

असत्य ज्ञान – अस्तित्व व अस्तित्व में जो जैसा है उसे उससे भिन्न मानना।

– भ्रमित मानसिकता का प्रकाशन।

असफल – विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति विरोधी मानसिकता प्रवृत्ति से किया गया सभी कार्य-व्यवहार असफल।

असमंजस – निर्णय निश्चय समाधान नहीं हो पाने, समस्याओं से परेशानी।

असमर्थ – नासमझी।

असाध्य – नियति विरोधी कार्य-व्यवहार, विचार से समाधान होने में असाध्य।

असार्थक – भ्रमात्मक मानसिकता।

असार्थकता – गलती व अपराध का परिणाम।

असार्थकता का विकल्प – सार्थकता, ज्ञान, विवेक, विज्ञान।

असीमित – व्यापक वस्तु, सत्ता। ज्ञान परम्परा के रूप में प्रवाहित होती है उसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता है।

अस्वागतीय – न स्वीकारने योग्य।

अस्वाभाविकता– चार अवस्थाओं का स्वभाव निश्चित है। भ्रम में मानव मानवीय स्वभाव से भिन्न मूल्यों का अनुकरण प्रकाशन क्रिया।

अस्मिता – अहंकार। स्वयं को श्रेष्ठ अन्य को नेष्ठ मानना, स्वयं के रूप, बल, धन, पद के प्रति अधिमूल्यन दोष ही अहंकार।

अर्हता – जागृति पूर्वक दृष्टा पद, जागृति सहज प्रमाण सम्पन्नता।

अर्ह – जागृति पूर्वक दृष्टा पद में प्रमाणित होने योग्य।

अहंकार – आत्मानुभूति में अक्षम बुद्धि अथवा भ्रमित विचार।

अहमता – अहंकार, भ्रमित मानसिकता।

अहित – स्वास्थ्यवर्धन व संरक्षण में विघ्न, संकट, शोषण, रोग।

अक्षय महिमा – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में जागृत जीवन।

अक्षय शक्तियाँ – चयन विश्लेषण चित्रण संकल्प व अनुभव प्रमाण सम्पन्न जागृत जीवन शक्ति वर्तमान

अक्षय बल – मूल्यों का आस्वादन, न्याय धर्म सत्य सहज तुलन, साक्षात्कार व बोध, अस्तित्व में बोध व अनुभव ही अक्षय बल है।

अक्षयशील – जीवन, जीवन शक्तियाँ व बल अक्षयशील है।

– जीवन में अक्षय बल का क्षरण नहीं होता। सहअस्तित्व में प्रत्येक इकाई बल सम्पन्नता से मुक्त नहीं है।

अक्षय – क्रिया व कार्य के अनन्तर और क्रिया-कर्म के लिए अर्हताओं का एक सा बने रहना। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व समग्र ही सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति है। चैतन्य प्रकृति पूर्ण बल-शक्ति ही अक्षय-बल-

शक्ति है।

– पूर्ण व पूर्णता अक्षय है। अन्तर्नियोजित बल-शक्ति का प्रक्रिया बद्ध होकर फल परिणाम अवधि में जागृति सहज प्रमाण है। गठन पूर्ण परमाणु में अपरिणामिता है। अक्षय बल शक्ति की स्थिति है।

– शून्याकर्षण में पृथ्वी सहज स्थिति गति अक्षय है।

विकास और विकास क्रम में आवर्तनशील नियम अक्षय है।

संबंधों के निर्वाह में न्यायपूर्ण व्यवहार अक्षय है।

जागृति में आचरणपूर्णता सजगता अक्षय है।

अमर मोक्ष – सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य तथा सारूप्य का संयुक्त स्वरूप ही जागृति है। जागृति का तात्पर्य क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता, अनुभव प्रमाण और सर्वतोमुखी समाधान रूप में। (भ्रम मुक्ति)

अक्षुण्णता – निरंतरता।

अज्ञान – अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति।

अज्ञानता – अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान में वंचित रहना।

अक्षुण्णतारत – अस्तित्व में जागृत जीवन, सहअस्तित्व सहज प्रमाण धरती परम्परा अखण्डता सार्वभौमता के अर्थ में जीवन व जीवन जागृति प्रमाण मानव परम्परायें किसी धरती पर ही होता है।

अज्ञानवश – भ्रमवश समस्या, क्लेश, दुःख, अव्यवस्था।

अज्ञानी – भ्रमित मानव।

अर्थभेद – आवश्यकता के अनुसार/आधार पर उत्पादन।

अधिभौतिक – भौतिक क्रियाकलाप का आधार। (व्यापक वस्तु) (साम्य ऊर्जा)

अधिदैविक – देवताओं का त्राण प्राण, देवताओं का आधार। (देव चेतना सम्पन्न परम्परा)

अद्वैत – शंका, संदिग्धता, संशय विहीन = प्रामाणिकता प्रमाण, सर्वतोमुखी समाधान पूर्ण संचेतना।

अवस्था – विकास के क्रम में आश्वस्त होने में, से, के लिए इकाई की स्थिति, अनुभव के प्रकाश में समाने वाली क्रिया = अनुभूति। (चार अवस्था)

आ

आंकलन – निरीक्षण, परीक्षण व सर्वेक्षण पूर्वक कैसा कितना का स्पष्टीकरण व चित्रण।

आंशिक – अल्प, अधूरा।

आंशिक क्रिया– अल्प रूप में किया गया क्रिया प्रक्रिया।

आकांक्षा – आवश्यकता व उपयोगिता सहज कामनायें।

– आतुरता पूर्वक देखने, समझने, करने व पाने की तीव्र इच्छा।

आकस्मिक – अप्रत्याशित फल परिणाम घटना प्रदूषण।

आकर्षण – ध्यान देने की आवश्यकता।

– परस्पर मिलन में दूरी का ऋणीकरण क्रिया (मिलन

में दूरी का घटना)।

आकार – निश्चित अवधि में स्थिर रचना।

आकाश – धरती का वातावरण।

आकाशगंगा – अगनित अथवा बहु संख्यक ग्रह गोल व्यूह-ग्रह गोलों का समूह।

आकुल – शीघ्रता वादी मानसिकता।

– वांछित के अभाव की पीड़ा।

आकृति – निर्दिष्ट सीमा में छवि या रचना।

– क्रिया-प्रक्रिया पूर्वक अनेक अणुओं के, परमाणु के संगठित रूप। साथ ही अनेक अंशों से संगठित परमाणु।

आक्रोश – आवेशित मानसिकता सहित किया गया कार्य व्यवहार।

आक्रमण – आवेशित गति पूर्वक दूसरे के अस्तित्व व स्वत्व को मिटाने के लिए प्रयुक्त हस्तक्षेप क्रिया।

आगम रूप – सोचना, अग्रिम सोच।

आग्रह – विधि विहित पद्धति, प्रणाली नीतियों की ओर ध्यानाकर्षण विधि अस्तित्व में विकास क्रम विकास जागृति क्रम जागृति सहज निरंतरता।

आख्यान – अलंकार सहित, संदर्भ समेत वांग्मय प्रस्तुति।

आचरण – मौलिकता की अभिव्यक्ति, 'त्व' सहित व्यवस्था सहज प्रकाशन।

– मानवीयता पूर्ण कार्य विन्यास-मूल्य चरित्र नैतिकता

सहज प्रकटन।

– दया पूर्ण पद्धति से किया गया स्व-धन, स्वनारी, स्वपुरुष सम्बन्ध परंपरा।

– त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

आचरण पूर्णता – दिव्य मानव प्रतिष्ठा-दिव्य मानवीयता।

– जीवन मुक्ति (भ्रम मुक्त जीवन) सजगता, कैवल्य, गन्तव्य, विकास का चरमोत्कर्ष।

– गति का गंतव्य = गुणात्मक विकास का परम बिंदु, सत्य, धर्म, निर्भयता, न्याय, नियम, जीवन तृप्ति और उसकी निरंतरता।

आचरण भेद – चारों अवस्था में त्व सहित व्यवस्था। त्व=आचरण।

आचरणात्मक – प्रमाण रूप में आचरण।

आचार – गुणात्मक परिवर्तन क्रिया अर्थात् मानवत्व सहित आचरण यथा मूल्य, चरित्र, नैतिकता सम्पन्न आचरण।

आचार संहिता – जागृत मानव सहज आचरण का सूत्र व्याख्या आलेख संविधान।

आचरित – जागृत मानव द्वारा किया गया आचरण – आचरण परम्परा।

– मानवीयता सहज प्रमाण।

आचरित भक्ति – भय मुक्त आचरण, उपकार प्रवृत्ति सहित किया गया संपूर्ण कार्य व्यवहार, परिवार व्यवस्था में भागीदारी समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण।

आचार्य – जागृति सहज पारंगत व्यक्ति, दृष्टापद जागृति प्रमाण प्रतिष्ठा सम्पन्न मानव।

आजीविका – स्वावलंबन, समाधान सहित समृद्धि पूर्वक आवश्यकता से अधिक वस्तुओं के साथ जीना।

आज्ञा पालन – जागृत मानव परम्परा में, से, के लिए संतानों का पाँच वर्ष के आयु से दस वर्ष तक अनुसरण सहयोग प्रवृत्ति सहज दृष्टि-आज्ञापालन।

आतंक – प्राण भय, मानभय, धनभय, पदभय से पीड़ा।

आतंकवाद – भयकारी प्रक्रिया व्यवहार/वार्ता।

आत्मक्षोभ – भ्रमित मानव जीवन, अनुभव प्रमाण विहीन जीवन।

आत्मदर्शन – सहअस्तित्व में अनुभव सम्पन्न जागृत, पारंगत, वर्तमान में प्रमाणित मानव।

आत्मपुंज – जीवन जीने के आशानुरूप स्थापित कार्य गति पथ, जीवन कार्य के आधार पर प्रमाण।

आत्मबोध – अनुभव बोध प्रमाणित होना ही आत्मबोध।

आत्मविमुख– भ्रमित मानव जो अनुभव बोध पूर्वक जागृति सहज विधि से किया गया क्रियाकलाप से विमुख।

आत्मसंतोष – अनुभव मूलक अभिव्यक्ति।

– अनुभव मूलक विधि से बुद्धि चित्त वृत्ति मन संतुष्ट होने से है।

– अनुभव मूलक विधि से जीवन ज्ञान अस्तित्व दर्शन मानवीयतापूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना।

आत्मा – गठनपूर्ण परमाणु में कार्यरत मध्यांश ।

– चैतन्य परमाणु के केन्द्र में संपन्न मध्यस्थ क्रिया। भार मुक्ति।

– जीवन या जागृत जीवन में सत्यानुभूति-सत्यानुभव, मूल्यानुभव।

आदर्श – आवश्यकतानुसार सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व परम सत्य का लोकव्यापीकरण करना । व्यवस्था में जीने देना जीना है।

– मानवत्व सहित "व्यवस्था", समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

– अनुभव अथवा अनुभव मूलक प्रवर्तन कारी "व्यवस्था" का अनुभवमूलक अथवा अनुभव गामी, आचरण, कार्य, व्यवहार, विचार।

आदर्शवाद – रहस्यमयता से सुखी होने का आश्वासन।

– रहस्यमयता में कल्याण की परिकल्पना।

आदाय – लेना।

आद्यान्त – भौतिक रासायनिक रचना विरचना एवं मानव परम्परा में कार्य व्यवहार फल परिणाम।

आद्यान्त प्रमाण – विकासक्रम, विकास जागृति, दिव्यपद, विधि सहज प्रमाण।

आधार – पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञानावस्था प्रकट होने के लिए यह धरती। ज्ञानावस्था में देवत्व, दिव्यत्व-ज्ञान विवेक व विज्ञान सहज प्रमाण का आधार मानव परम्परा में,

से, के लिए है।

– आश्रित के लिए अनन्य रूपी महत्ता।

आनंद – सहअस्तित्व में अनुभव।

– सहअस्तित्व में अनुभूति, फलस्वरूप सत्यानुभूत इकाई के बुद्धि पर होने वाला आप्लावन प्रभाव।

– अनुभव की अभिव्यक्ति, संप्रेषण क्रिया अर्थात् प्रमाण और प्रामाणिकता की अभिव्यक्ति संप्रेषण क्रिया।

आनंदमय कोष – अनुभव-बोध बुद्धि में होना, विज्ञानमय कोष सम्मत।

– सुख, शांति, संतोष एवं आनंद को प्रकट करने की क्रिया।

आनुषंगिक – क्रमागत रूप से एक दूसरे से जुड़ी हुई।

आनुषंगिक रूप – हर रचना मूल परस्परता पूरकता उपयोगिता से संतुलन।

आपूर्तिकरण – पोषण नियोजन संरक्षण क्रिया।

आप्त कामना – मानवीयता एवं अतिमानवीयता पूर्ण जीवनीय क्रम में, से, के लिए तीव्र इच्छा।

आप्त पुरुष – ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज सत्य बोध कराने वाला।

आप्तवचन – सत्य बोध होने योग्य वाक्य।

आप्लावन – निर्भ्रमता एवं अनुभूति का प्रभाव जो बुद्धि पर होता है।

आप्लावित – सत्य बोध होने का प्रभाव, सभी जीवन क्रियायें प्रभावित होना।

– सत्य बोध कराना।

आबंटन – वस्तुओं के साथ विनिमय, ज्ञानार्जन।

आबालवृद्ध – बचपन से बुढ़ापे तक परंपरा वैभव।

आभास – सत्य सहज होने का सामान्य स्वीकृति।

आमंत्रण – आवश्यकतानुसार लोक स्वीकार होना।

आयतन – विस्तार में रचना।

– विस्तार की सीमा।

आयाम – अविभाज्य रूप में रूप गुण स्वभाव धर्म प्रमाण।

आयुष्मान – दीर्घायु कामना।

आरंभ – समाधान, समृद्धिपूर्वक प्रमाणित होने का शुरुआत।

आराधना – जागृति सहज लक्ष्य पूर्ति के लिए किया गया प्रयोग।

आरोग्य – स्वस्थ शरीर।

आरोप – भ्रमात्मक मूल्यांकन।

आलोक – प्रकाश प्रभावन क्रिया।

– सर्वत्र, सर्वदा ज्ञानमयता।

आवर्तन – दोहराने वाली क्रिया।

– क्रिया (श्रम, गति परिणाम) परम्परा।

– यथास्थिति, उपयोगिता पूरकता सहज परम्परा।

– पदार्थावस्था – परिणामानुषंगी।

प्राणावस्था – बीजानुषंगी।

जीवावस्था – वंशानुषंगी।

ज्ञानावस्था – संस्कारानुषंगीय परम्परा में आवर्तनशील हैं ।

– ऋण धनात्मक गुण स्वभाव प्रकाशन सीमा गतिपथ।

आवर्तनशील – पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से पदार्थावस्था आवर्तनशील।

आवर्तनशीलता – जागृत मानव ही पदार्थ, प्राण और जीवावस्था के साथ उपयोगिता पूरकता सहज प्रमाण।

– अन्य तीनों अवस्थाएं अपने-अपने यथास्थिति में उपयोगी अग्रिम अवस्था के लिए पूरक होना ही आवर्तनशीलता है।

आवर्तनशील विधि – ज्ञान, विवेक, विज्ञान, जागृत मानव परम्परा सहज कार्य व्यवहार फल परिणाम ज्ञान सम्मत होना आवर्तनशीलता।

– मानवीयतापूर्ण आचरण संगत कार्य व्यवहार।

आवर्तित – धरती सूर्य के सभी ओर आवर्तित है।

– परमाणु में मध्यांश के सभी ओर परिवेशों में कार्यरत सभी अंश आवर्तित रहते हैं। इसी के साथ प्रत्येक अंश अपने घूर्णन गति में रहते हैं इसे भी आवर्तन संज्ञा है और धरती भी अपने घूर्णन गति सहित आवर्तनशील है।

आवश्यक – मानवीयता और अति मानवीयता की ओर प्रगति।

आवश्यकता – हर इकाई का अपने अस्तित्व को बनाए रखना एक

आवश्यकता है और हर इकाई अपने त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना एक आवश्यकता। मानव परम्परा में आर्थिक सामाजिक व्यवस्था तंत्र और प्राकृतिक संतुलन सहज आवश्यकता।

– जीवन जागृति रूपी लक्ष्य के प्रति संभावना सहित आशवस्त होना और उसके लिए तीव्र इच्छा सहित निष्ठा का होना। (सामान्य व महत्वाकांक्षी वस्तुओं का उपयोगिता, सदुपयोगिता के आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन।)

आवश्यकतावादी – मानव परम्परा में ही वादी व कारी होना पाया जाता है और इसी क्रम में आवश्यकता की पहचान, सीमा निर्धारण, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता ध्रुवीकरण होने के अर्थ में आवश्यकतावाद।

आवश्यकीय नियम – प्राकृतिक नियम।

– बौद्धिक नियम।

– सामाजिक नियम।

– सामाजिक नियम अखण्ड समाज के अर्थ में।

– प्राकृतिक नियम ऋतु संतुलन के अर्थ में।

– बौद्धिक नियम मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने के अर्थ में सार्थक है।

आवास – आवश्यकतानुसार शरीर संरक्षण के अर्थ में रचित रचना।

आदेश – प्रयोजनशीलता सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में।

– निश्चित कर्म प्रक्रिया व समाधान संप्रेषणा।

– आग्रह पूर्वक ज्ञापन।

आदेशजन्य – आदेश का पालन और फल परिणाम सकारात्मक होना (मानवत्व के अर्थ में)।

आवेशित – भ्रमित होना।

आवेश – भ्रमित कार्य व्यवहार प्रवृत्ति।

– हस्तक्षेप, ह्रास की ओर गति।

– अतिक्रमण या आक्रमण की प्रतिक्रिया में प्राप्त गति।

आवेदित – गुणात्मक परिवर्तन की अपेक्षा में शोध किया गया सूत्र व्याख्या अनुसंधान विधि से।

आविष्कार – परम्परा में अपेक्षित अप्रचलित को प्रमाण सहित प्रचलित करना।

– अप्रचलित अथवा अज्ञात उपलब्धि को या सत्यता को सुलभ करना।

– मानव पंरपरा में, से, के लिए अज्ञात को ज्ञात एवं अप्राप्त को प्राप्त करने में योगदान क्रिया।

आशय – मानव में मानसिकता, प्राणावस्था में प्राणाशय एवं पदार्थावस्था में अन्नाशय और व्यापक वस्तु में प्रेरित रहने की आशय, जीवावस्था में जीने की आशा ही आशय है। भ्रमित मानव में विषयासिक्त में आशय

जागृत मानव में समाधान, समृद्धि पूर्वक उपकार करने का आशय।

– निरंतर रूप में सुख की अपेक्षा।

– मूल्यों का भास एवं आभास, स्वागत व आस्वादन।

आशय रसादि तंत्र विधि – रस तंत्र से मांस तंत्र, मांस तंत्र से मज्जा तंत्र, रस मांस मज्जा तंत्र से अस्थि (हड्डी), स्नायु (नस–नाड़ी) और रक्त तंत्र व वसा तंत्र । इन सात तंत्र विधि से अन्नाशय पक्वाशय प्राणाशय रसाशय मूत्राशय मलाशय गर्भाशय।

आशा – जीवावस्था में जीने की आशा, ज्ञानावस्था में सुख आशा के रूप में।

– सुखापेक्षा सहित, आस्वादन और चयन क्रिया।

– आशय पूर्वक की गई क्रिया।

– चैतन्य इकाई की अंतिम परिवेशीय (चतुर्थ परिवेशीय) अक्षय जीवन शक्ति का वैभव।

आशा धर्म – जीवावस्था में जीने की आशा–आशाधर्म, इसी के साथ अस्त्वि पुष्टि समाहित। ज्ञानावस्था में सुखपूर्वक जीने की आशा।

आशा बंधन – मानव में, से, के लिए चैतन्य इकाई में (गठनपूर्ण परमाणु में) भारबंधन, अणुबंधन से मुक्ति भ्रमित मानव में आशा, विचार, इच्छा बंधन सहित जीने की आशा एवं शरीर को जीवन मानकर जीना।

आशावादी – मानव भ्रमित रहते हुए भी सहज सुख के लिए

आशावादी।

आशित – मानव परम्परा में समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व प्रमाण।

आशित विनिमय – लाभ हानि मुक्त विनिमय विधि।

– उपयोगिता मूल्य के आधार पर वस्तु मूल्य का निर्धारण श्रम नियोजन के आधार पर वस्तुओं में उपयोगिता मूल्य को प्रकट करना और इसका मूल्यांकन होना।

आर्शीवचन – मानव परम्परा में शुभकामनाएं, सार्थक सफल प्रमाणित होने के लिए उच्चारण किया शब्द अथवा वाक्य।

आशीर्वाद – शुभ के लिए सर्वशुभ के लिए निश्चित किया गया लक्ष्य प्रक्रिया और प्रयोजनों का कामना सहज शब्द संप्रेषणा।

आशीष – शुभ कल्पना का उच्चारण।

आश्वस्त – वर्तमान में विश्वास के आधार पर भविष्य में सफल होने के अर्थ में।

आश्वस्ति – भविष्य में सफल होने के लिए आशावादी योजनात्मक सम्भाषण।

आश्वासन – भविष्य में सफल होने के लिए दिया गया योजना कार्यक्रम।

आशित कामना – मानव में मानवीयता सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण ।

आश्लिष्ट – ढका हुआ अथवा डूबा हुआ, सभी ओर से घिरा हुआ।

आश्रयभेद – विचारों के आश्रय में योजना और कार्य संपादन।

आश्रम – स्वीकृतियों को निष्ठापूर्वक निर्वाह करना।

आश्रितांश – परमाणु के मध्यांश के सभी ओर कार्यरत परमाणु अंश।

आसव – मीठा पदार्थ को सड़ाकर किया गया वाष्प संग्रह।

आसवीकरण – वाष्प संग्रह क्रिया।

आसक्ति – लघु मूल्य को गुरु मूल्य मानना, यही प्रलोभन।

– चार विषयों में निमग्नता।

आसक्तिभेद – अतिभोग, बहुभोग में विविधता।

आस्था – समझे बिना समर्पित होना अथवा मान लेना।

आस्वादन – भ्रमवश संवेदनाओं का, जागृति पूर्वक मूल्यों का।

– आशा एवं रूचि सहित ग्रहण क्रिया।

आस्वादन बल – मनोबल। मूल्यों का आस्वादन बल।

आस्तिक – होने का स्वीकार, होने में निष्ठा, स्वयं में विश्वास, सह–अस्तित्व में निष्ठा।

आहार – जागृत मानव के ग्रहण करने योग्य वस्तु सार।

– पुष्टि हेतु ग्रहण करने योग्य तत्व।

आल्हाद – उत्साह, सर्वशुभ कार्य प्रवृत्ति।

– अनुभूति का बोध एवं चिंतन।

आहूत – सम्पन्न किया गया।

आतुरता – पात्रता से अधिक प्राप्ति की कामना एवं चेष्टा का

प्रकटन।

आलस्य – कार्य की उपादयेता को जानते हुए भी व्यवहार में ना होना।

आवेग – आवश्यकतानुसार प्राप्त गति।

आसन्न – अग्रिम संभावना का अविभाज्य रूप उपस्थित होना।

आश्रय – जिससे, जिसका अस्तित्व या कार्य व्यवहार नियंत्रित है।

आत्म प्रतिष्ठा – आत्मा संकेतानुसार बुद्धि, चित्त, वृत्ति एवं मन के क्रियाकलाप।

आत्मदीपन – आत्मोन्मुखी बुद्धि, आत्मा के संकेत ग्रहण योग्य क्षमता सम्पन्न बुद्धि।

आघात – आवेश प्रदायी क्रिया।

आन्दोलन – असंतुलित गति एवं प्रक्रिया।

आयोजन – जागृति के अर्थ में आत्मीयता पूर्वक किया गया सम्मेलन।

आत्मीयता – स्व अस्तित्व की मौलिकता के अनुरूप, अन्य की मौलिकता को स्वीकारना।

आमुष्मिक – जागृत जीवन मरणोत्तर स्थिति में भी जागृत सूत्र सम्पन्न रहता है।

आस्तिकता – सहअस्तित्व, विकास और जागृति में विश्वास और निष्ठा।

आस्था – अस्तित्व में स्थिरता का विश्वास।

इ

इंगित – स्पष्ट हुआ।

इन्द्रिय – इच्छानुसार द्रवित संचालित होने वाला अंग–प्रत्यंग ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय।

इन्द्रिय सन्निकर्ष – इन्द्रियों से इन्द्रियों या वस्तुओं का योग।

इन्द्रिय ज्ञान – संवेदनाओं का स्वीकार सहज प्रकाशन।

इन्द्रिय संवेदना – शब्द स्पर्श रूप, रस, गंधेन्द्रियों में संपादित होने वाली अथवा संपन्न होने वाली क्रिया।

इन्द्रिय सापेक्ष – संवेदनाओं की अपेक्षा में।

इन्द्रियातीत – सुख, शांति, संतोष, आनंद, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व, न्याय, धर्म, सत्य मूल्य, मूल्यांकन।

इकाई – छः ओर से सीमित रचना अथवा पदार्थ।

इच्छा – विश्लेषणात्मक प्रकाशन–अपेक्षा सहित चित्रण क्रिया।

– दर्शन एवं उसके प्रकटन की संयुक्त चिंतन क्रिया।

इच्छानुसार – विश्लेषण और अपेक्षा के अनुसार।

इच्छाबंधन – भ्रमित इच्छाओं की अपेक्षा–समस्त क्लेश।

इच्छुक – अपेक्षाओं का स्पष्टीकरण।

इति – फल परिणाम संपन्नता।

इतिहास – इंगित अपेक्षित फल परिणामों का काल निबंध परम्परा का आंकलन।

– विगत की कृतियों एवं घटनाओं का श्रृंखलाबद्ध किया गया आंकलन।

इत्सित – अपेक्षा सहित तीव्र इच्छा।

इष्ट – भ्रम मुक्ति, सुख, शांति, संतोष, आनंद और समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज प्रमाण।

– पूर्णता (जीवन में जागृतिपूर्वक पूर्णता यथा क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता तथा समृद्धि, अभय सुलभता)

इष्टानुवर्ती – अखण्डता व सार्वभौम व्यवस्था क्रम में परिवर्तित कार्यरत और व्यवहार।

इष्टानुषंगी – सर्वशुभ के नियमों के अनुसार।

ई

ईंधन – इच्छानुसार पक्व तपन भस्म और दहन गलन क्रिया संपन्न होने के लिए प्रयुक्त वस्तु।

ईक्षण – सहअस्तित्व में रूप गुण स्वभाव, धर्म की पहचान।

– जीवन प्रकाश में दृश्य स्पष्ट होने हेतु किया गया क्रियाकलाप।

ईश्वर – ऐश्वर्य संपन्न सर्वत्र विद्यमान सर्व सुलभता की पहचान।

ईश्वरज्ञता – ईश्वर ज्ञान अर्थात सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान संपन्न।

ईमानदारी – समझदारी के अनुरूप निर्णय लेने की और प्रस्तुत होने करने की क्रिया प्रणाली।

ईर्ष्या – पदोन्नति विरोधी मानसिकता, द्वेष, भ्रमित मानसिकता।

ईष्णात्रय – पुत्रेषणा / जनबल, वित्तेषणा / धनबल, लोकेषणा /

यश बल कामना।

ईप्सा – एषणा के प्रति पिपासा।

ईप्सित – इच्छा के अनुरूप प्राप्त, प्राप्तियाँ।

उ

उचित – मानवीयता एवं अतिमानवीयता के पोषण, संरक्षण, उन्नति के लिए उपादेयी आचरण, व्यवहार, कार्य।

उच्चकोटि – गुणात्मक विकास संपन्न अथवा गुणवत्ता संपन्न।

उच्चारण – उत्सवपूर्वक सार्थक वचनों का प्रकाशन।

उज्जवल – स्वभाव गति सहज वैभव।

उत्कंठा – गुणात्मक परिवर्तन के लिए मानव में तीव्र इच्छा।

उत्कृष्ट – उत्थान के लिए श्रेष्ठ, अनिवार्य एवं आवश्यक प्रक्रिया।

– मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना पूर्वक जीना।

उत्तरदायित्व– संस्कृति सभ्यता पूर्वक व्यवस्था के प्रति निष्ठा।

उत्थान – निर्भ्रमता की ओर गति। समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व क्रम में गति।

– मानवीयता एवं अतिमानवीयतापूर्ण जीवन शैली की उपलब्धि। विकास की ओर गतिशील एवं गति प्रदायन क्रिया।

उत्कंठापूर्वक – गुणात्मक विकास के तीव्र इच्छा सहित प्रवृत्ति और कार्य।

उत्तरार्द्ध – फल परिणाम में परिपक्वता।

उत्पन्न – संयोग से उदय होना। बीज धरती में पानी उजाला उष्मा उर्वरक पाकर वृक्ष के रूप में उदय होना। मनुष्य के शरीर का गर्भाशय में रचित होना। मिट्टी और उसके सहायक द्रव्यों से घर–द्वार की रचना करना–धातुओं से यंत्र रचना करना।

उत्पादन – प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य और कला मूल्यों की स्थापना सहित रचित वस्तु।

– प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्यों की स्थापना सहित सामान्य आकांक्षा और महत्वाकांक्षा के रूप में वस्तुओं के रूप प्रदान करने की क्रिया।

– मनुष्येत्तर प्रकृति पर उपयोगिता एवं सुन्दरता की स्थापना किया जाना।

– उपयोगिता मूल्य एवं उत्थान की दिशा में तन, मन और प्राकृतिक ऐश्वर्य में किया गया गुणात्मक परिवर्तन।

उत्पादन कार्य – उपयोगिता सुन्दरता के लिए श्रम नियोजन।

उत्पादन भेंट – आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन संबंधी वस्तु व उपकरण।

उत्पादन विधि – निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहज कार्य प्रणाली।

उत्पादन सुलभता – आवश्यकता से अधिक उत्पादन होना।

उत्पीड़ित – उत्थान के मार्ग में रूकावट, शोषण।

उत्प्रेरित – उत्थान के लिए प्रेरणाओं को स्वीकारना।

उत्सव – उत्थान के लिए हर्षोल्लास पूर्वक प्रवर्तनशीलता का प्रमाण।

उत्सवित – उन्नति के लिए उन्मुख।

उत्साह – उत्थान के लिए साहसिकता पूर्वक धैर्यपूर्वक विधिवत् प्रवृत्ति।

उद्भववादी – सृजनशीलता, उत्थान प्रवृति, उत्साह प्रवृति सहित संवाद।

– सृजनशीलता, उत्पादन के लिए परस्पर संवाद।

उदय – परस्पर सम्मुख होने की घटना क्रिया ।

– उत्थान की ओर गति परस्परता में प्रकटन, विकास क्रम विकास जागृति क्रम जागृति व निरंतरता।

– अनुभव से अधिक अनुमान, संभावना का विशाल होना।

उदयशील – बारंबार प्रगटन होने वाली कार्यप्रणाली।

उदात्तीकरण – पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था के रूपों एवं शरीरों की प्रगटन क्रिया और ज्ञानावस्था में दृष्टापद में जागृति का प्रमाण।

उदान – वायु विरोध सहज संज्ञा इसे मनुष्य शरीर में बलकारी उपयोग के रूप में पहचाना जाता है।

उदारचित्त – बैर विहीन चिंतन, नियति क्रम चिंतन।

उदारता – तन, मन, धन रूपी अर्थ का उपयोग, सदुपयोग प्रयोजनशीलता के अर्थ में नियोजित करना।

– स्व प्रसन्नता पूर्वक दूसरों की आवश्यकतानुसार तन, मन, धन रूपी अर्थ का अर्पण समर्पण क्रिया।

– प्राप्त सुख सुविधाओं का, दूसरों के लिए सदुपयोग करना।

उदितोदित – सर्वशुभ नित्यशुभ सहज निरंतरता।

उद्विग्नता – उत्थान के लिए आतुरता।

उद्‌गमन – स्त्रोत के रूप में स्पष्ट पहचान।

उद्‌गमित – स्त्रोत का प्रगटन।

उद्‌गार – उत्थान के लिए, सर्वशुभ के लिए प्रकाशित भाषा सहित मानसिकता व प्रमाण।

उद्‌घाटन – स्पष्ट प्रमाण सहज सर्वजनों के सम्मुख प्रस्तुत प्रमाण।

उद्‌घाटित – लोकमानस में सर्वशुभ स्वीकृत।

उद्देश्य – मानव में जागृति और दृष्टा पद प्रतिष्ठा।

उद्देश्यपूर्ण – लक्ष्य परम अथवा परम लक्ष्य, मानव लक्ष्य–समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व।

उद्धार – भ्रम बंधन से मुक्ति।

– आशा विचार इच्छा बंधन से मुक्ति, जागृतिपूर्ण मानसिकता से सम्पन्न।

उद्यमिता – उत्पादन कार्य में संलग्न, सृजन शीलता।

उद्यत – प्रयत्नशील।

उद्यमशील – उत्पादन एवं सेवा कार्य में प्रयत्न।

उन्नतावकाश – परम लक्ष्य तक संभावना।

उन्नति – उत्थान की ओर गति, समाधान समृद्धि की ओर गति क्रिया।

– आर्थिक सामाजिक राज्य व्यवस्था सहज सार्वभौमिकता में भागीदारी।

उन्नतशील – उन्नति की ओर गुणात्मक परिवर्तन।

उन्नतोन्नत – उन्नतिपूर्ण परंपरा।

उन्माद – आवेशित गति, मानसिकता, कार्यकलाप।

उन्मादत्रय – लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद से समस्या त्रासदी।

उन्मादत्रय शिक्षा– लाभोन्मादी अर्थशास्त्र, भोगोन्मादी समाज शास्त्र और कामोन्मादी मनोविज्ञान का प्रवर्तन क्रियाकलाप।

उन्नयन – उत्थान की कीर्तिमानता अथवा प्रकाशन।

उन्मेष – उन्नति एवं विशालता के प्रति दृष्टिपात।

उन्मुख – उन्नति की ओर दिशा निश्चयन।

उन्मूलन – जड़ मूल से समाप्त करना, गलती, अपराध को बदलना, सुधार कर लेना।

उपकार – उन्नति और जागृति के लिए किया गया कर्तव्य।

– करने, होने के लिए उपाय और सेवा, उपाय पूर्वक की गई कृतियाँ।

उपकारात्मक स्वरूप – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण,

अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

उपकृत – प्राप्त उपकार का स्वीकृत परिणाम सहित प्रस्तुति।

उपज – धरती में अनाज, औषधि, फल, फूलों का उत्पादन।

उपदेश – अनुभवमूलक सूत्र और आदेश।

उपद्रव – उन्नति, प्रगति, जागृति, व्यवस्था और विश्वास विरोधी।

उपभोग – उपाय पूर्वक आस्वादन, ग्रहण क्रिया में गतित होना।

उपभोक्तावादी – भोगवादी प्रवृति–संग्रह सुविधावादी प्रवृति और कार्य।

उपयोग – शरीर संरक्षण पोषण समाज गति में प्रयुक्ति।

– मूल्यानुभूति व उत्पादन के लिए प्रयुक्त नियोजन।

उपयोगी – आवश्यकता एवं विकास के लिए योजित एवं नियोजित करने योग्य वस्तु।

उपयोग–भेद – उपयोग में वरीयता भेद।

उपयोगिता – आहार–आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन संबंधी कार्य योग्य।

उपयोगिता मूल्य – उपयोगिता के आधार पर मूल्यांन क्रिया।

उपयोग विधि – परिवार सहज आवश्यकता में उपयोग करना और व्यवस्था सहज आवश्यकता में उपयोग करना।

उपयुक्त – उत्थान के लिए उपयोगी।

उपरस – निश्चित रसों के लिए यौगिक क्रिया के लिए प्राप्त वस्तुएं।

उपरांत – किसी कार्य पूर्ति के अनंतर।

उपराम – किसी कार्य को करने के पश्चात् पुन: वैसा ही कार्य नहीं करना।

उपरामिता – अनावश्यकता की समीक्षा।

उपलब्धि – जिस प्राप्ति के अनंतर उसकी निरंतरता की अपेक्षा।

– उपाय में, से, के लिए की गई प्राप्ति।

उपार्जन – उत्पादन के लिए उपायपूर्वक स्थापित किया श्रम नियोजनपूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य का स्थापना उत्पादन प्रमाण।

उपार्जित – उत्थान के लिए समृद्धि के लिए किया गया उत्पादन समृद्धि सहज अनुभव के लिए प्राप्त तादात उत्पादन अनुपात।

उपादान – किसी उत्पादन के लिए सहायक द्रव्य और वस्तु।

उपादेयता – उपयोगिता और पूरकता योग्य।

– मूल्य अभिव्यक्ति और अनुभूति।

उपादेयी – पूरक उपयोगी।

– उत्थान के लिए सहायक सिद्ध होना।

उपाय – विविध उपक्रम से उत्पादन अथवा उत्थान प्रमाणित होना।

– उन्नति के लिए उपयुक्त पद्धति।

उपासना – उपायों सहित लक्ष्य पूर्ति के लिए किया गया क्रियाकलाप।

– इष्ट सान्निध्य के लिए किये गये उपाय।

उपेक्षणीय – जो घटना अनुकरणीय नहीं है।

उपेक्षा – वांछित का अवमूल्यन, निर्मूल्यन।

उपेक्षित – अवमूल्यन क्रिया।

उभय – परस्परता में निश्चित आचरण।

उभय तृप्ति – परस्परता में समाधान।

उभय परिवार– परिवारों में परस्परता।

उभय पक्षीय – परस्परता में अपेक्षाएं।

उभय प्रकार– परस्परता में मौलिकता।

उभय विकृति – परस्परता में विरोध।

– परस्परता के परिणाम में प्रतिक्रान्ति जो ह्रास या अवमूल्यन क्रिया है।

उभय सान्निध्य – परस्परता में समीपता।

उभय सुकृति – परस्परता में उत्थान और जागृति योग्य कार्यकलाप में सहमति।

– क्रांति, गुणात्मक परिवर्तन जो विकास, उदात्तीकरण और संक्रमण है ।

उमंग – अंग–प्रत्यंगों में उत्साह का प्रकाशन।

उर्मि – उत्सव, उत्साह, वीरता, उदारता का प्रमाण।

उम्मीदवारी – निश्चित अपेक्षा उद्देश्य सहित इंतजार।

उल्कापात – ब्रह्मांडीय किरणों के सहयोग से वातावरणीय अणुएं अधिकाधिक तप्त एकत्रित होना और धरती को छूना।

उल्लास – मुखरण / उत्थान की ओर उन्मुक्त प्रस्तुति या गति।

– उत्थान की ओर त्वरित गति।

उर्वरा – बीज पाकर अनेक बीज तैयार करने वाली वस्तु संयोग अथवा ऐसी क्षमता पूर्ण मिट्टी।

उर्वरक – धरती को अधिक उपजाऊ बनाने वाले द्रव्य।

उष्ण – स्वाभाविक सामान्य ताप से अधिक होना।

उष्मा – सामान्य ताप से बहुत अधिक होने के उपरांत परावर्तित होना।

ऊ

उँचाई – धरती के समानान्तर रेखा के 90^0 में।

ऊर्जामयता – व्यापक वस्तु सहज पारदर्शी पारगामी में सम्पृक्त संपूर्ण इकाईयाँ।

ऊर्जास्रोत – मूलतः ऊर्जा साम्य रूप में प्राप्त व्यापक वस्तु होते हुए प्रत्येक इकाई में क्रियाशीलता प्रमाणित। क्रियाशीलता ही श्रम गति परिणाम के रूप में स्पष्ट है। इनमें से गति सहज विधि से उसका प्रभाव क्षेत्र होता है यह मानव को ज्ञात है। इस प्रभाव क्षेत्र को भी अथवा प्रभाव प्रवाह को भी कार्य ऊर्जा और ऊर्जास्रोत माना व जाना जाता है।

ऊर्जित – क्रियाशील स्वभाव गति संपन्न।

ऊर्ध्व – धरती के समानान्तर रेखा के 90^0 पर होने वाली दिशा।

ऊर्जा – सत्ता (निरपेक्ष शक्ति)।

– प्रत्येक इकाई में, से, के लिए सदा साम्य रूप में प्राप्त मध्यस्थ सत्ता।

– सम्पूर्ण क्रिया में, से, के लिए प्राप्त नित्य साम्य गति दबाव विहीन प्रभाव, वैभव और वर्तमान।

– अस्तित्व पूर्ण नित्य साम्य वैभव।

– प्रत्येक इकाई की स्थिति, गति में नियंत्रण और वैभव।

– प्रत्येक इकाई में प्रकाशन बल।

– प्रत्येक इकाई में पूर्णता का साम्य स्रोत।

– प्रत्येक इकाई में पूर्णता पर्यन्त विकास। सम्भावना स्रोत और अवकाश।

ऊहा – अनुमान।

ऋ

ऋणाकर्षण – स्थिरता अधिक, अपने वातावरण में जितने भी वस्तुएं होती हैं उन्हें आकर्षित करने का बल।

ऋतंभरा – सत्य सहज वैभव की अभिव्यक्ति करने की संपूर्ण पृष्ठभूमि।

– पूर्ण अधिकार।

ऋतुक्रम – वर्षा, शीत और ग्रीष्मकालीन धरती के साथ पूरकता विधि, ऋतु संतुलन, धरती पर चारों अवस्थाएं उपयोगिता पूरकता सहित वैभवित रहने योग्य अनुपातीय प्रवृत्ति।

ऋतुमान – ग्रीष्म ऋतु में उष्मा का तापमान, वर्षा ऋतु में वर्षा का

अनुपात या आंकलन, शीत ऋतु में शीत का निश्चित आंकलन।

ए

एक – सभी ओर से सीमित पदार्थ पिण्ड, छोटा-बड़ा रचना-ग्रह गोल धरती।

एकता – रूप सहज गुण सहज स्वभाव सहज धर्म सहज-अस्तित्व परम्परा का होना।

एकत्व – समान रूप गुण स्वभाव धर्म के आधार पर।

एकदेशीय – किसी एक देश में होने वाले खनिज वनस्पति अथवा जीव।

एकरूपता – आकार आयतन घन में समानता।

एक सूत्रता – गुण स्वभाव धर्म समानता।

– विकास के क्रम में संलग्नता।

एक सूत्रात्मक – गुण समानता स्वभाव समानता धर्म समानता की परस्पर पहचान और प्रभाव।

एकात्मता – अनुभव मूलक प्रमाण में व्यवहार व प्रयोग में एकता।

एकोदर – एक ही माँ के पेट से प्रगट हुए संतान।

एषणात्रय – पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा।

एषणा – सर्वशुभ के अर्थ में इच्छाओं का प्रकटन।

एषणाजित – एषणा त्रय से प्रभाव विहीनता, साथ ही उन पर नियन्त्रण पाना।

एषणान्वेषण – ऐषणा त्रय व उसकी सुलभता की अपेक्षा में किया

गया क्रियाकलाप।

ऐ

ऐक्य – समान रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सहज अनेक एक रूप में प्रकाशित रहना।

– जिस योग के अनंतर विलगीकरण न हो।

– सजातीय इकाइयों का मिलन, सह-अस्तित्व।

ऐच्छिक निराकर्षण – स्वेच्छा से भ्रमकारी मानसिकता व क्रियाकलाप से निरर्थकता की अस्वीकृति तथा यथार्थता की स्वीकृति।

ऐश्वर्यमयी – दृष्टापद और जागृति का प्रमाण।

ऐश्वर्य – अनवरत जागृतिपूर्ण स्थिति।

ओ

ओझिल – देखने को नहीं मिलना, समझ में नहीं आना, मूल्यांकन नहीं कर पाना।

ओतप्रोत – संपूर्ण प्रकृति सत्ता में ओतप्रोत, जीवन जागृति पूर्वक जागृति में ओतप्रोत।

औ

औचित्य – अनुकरणीय, अनुसरणीय, उपयोगी पूरक।

औषधि – शरीर के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी और रोग निवारण योग्य द्रव्य।

क

कल्पना – प्रमाणित न होने वाली प्रस्तुतियाँ, अस्पष्ट ज्ञान विवेक

विज्ञान विधि।

– प्रमाण व मापदण्ड बिना विचार।

कल्याण – समृद्धि, प्रामाणिकता एवं समाधान की संयुक्त उपलब्धि (प्रकाशन क्रिया)।

– भ्रम मुक्ति।

कल्पनात्मक – आशा विचार इच्छा की अस्पष्टता का प्रकाशन।

कल्पनाशील – यर्थाथता के अर्थ में सोच।

कल्पनाशीलता – शोध कार्य के लिए प्रवृत्ति।

कल्पित – यर्थाथता, वास्तविकता, सत्यता से भिन्न चित्रण भ्रमित मानव में।

कलाकरण – प्रकाशन क्रिया में मौलिकता को प्रदान करना, उत्पादित वस्तु एवं स्थान का अलंकरण, मनुष्य का अलंकरण नृत्य वाद्य गीत संगीत प्रदर्शन होना।

कसैलापन – जीभ में ऐंठन व अरूचि है, जीभ में रसोदय कम होना।

कर्त्तव्य बुद्धि– उत्पादन कार्य में कुशलता निपुणता को नियोजित करने की विधि सहज प्रवृत्ति।

कर्त्तव्यवादी– उत्पादन संबंधी व्यवहार को पूरा करने में कटिबद्धता।

कर्त्तव्य – उत्पादन कार्य में प्रमाणित होने की प्रक्रिया और सेवा कार्य।

– प्रत्येक स्तर में प्राप्त संबंधों एवं सम्पर्कों और उनमें निहित मूल्य निर्वाह।

कर्तव्य-निष्ठा – ''त्व'' सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

– समृद्धि सम्पन्नता का प्रमाण।

– मानवीयतापूर्ण शिक्षा, संस्कार, आचरण, व्यवहार में निष्ठा। स्वतंत्रता स्वराज्य में निष्ठा।

– उत्तरदायित्व का वहन।

कर्त्तापद – आवश्यकताओं की पूर्ति करने की मानसिकता सहित किया गया कर्म व्यवस्था।

क्लेशोदय – समस्याओं से घिरना।

कठोर – स्पर्शेन्द्रिय के लिए प्रतिकूल अस्वीकृत असहनीय वस्तु पदार्थ।

कठोरता – अधिक भार और दबाव को वहन करने वाली क्षमता सम्पन्न वस्तु।

कटुता – सविरोधी मानसिकता सहित प्रस्तुति।

कड़ी – एक दूसरे से जुड़ी परस्परता में पूरक उपयोगी गतिविधि और वस्तु।

कडुवा – जिह्वा में होने वाली रस क्रिया के विरोधी, अस्वीकृत मानसिकता।

कर्त्ता – निपुणता कुशलता पांडित्य संपन्न मानव।

– कार्य व्यवहार में समाधान समृद्धि प्रमाण।

कथन – कर्त्तव्य, दायित्व के प्रति किया गया सोच विचार, प्रमाणीकरण विधि का सत्यापन।

कपट – विश्वासघात के अंतर उसका प्रकट या स्पष्ट होना।

कर्म – जागृति सहज प्रमाणीकरण क्रियाकलाप।

– संज्ञान व संवेदनशील इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रयास पूर्वक किया गया श्रम, सेवा, व्यवहार, कायिक वाचिक, मानसिक और कृतकारित व अनुमोदित प्रकारों से की गई सम्पूर्ण क्रिया।

कर्म (मानव के संदर्भ में)– प्रत्येक मनुष्य में पाई जाने वाली, कायिक वाचिक, मानसिक, कृत कारित, अनुमोदित प्रभेदों से किया गया क्रियाकलाप। जैसे – किया गया, कराया गया, कराने के लिए मत दिया गया। बोला गया, बुलवाया गया, बोलने के लिए मत दिया गया। सोचा गया, सोचवाया गया, सोचने के लिए सम्मति दी गई। इस रूप में यह प्रत्येक मनुष्य में सर्वेक्षित है।

कर्म-दर्शन (मानवीय कर्मदर्शन)– मानवीयता के लक्ष्य में अर्थात् मानवीयतापूर्वक व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में मनुष्य द्वारा किया गया कायिक, वाचिक, मानसिक क्रियाकलाप ही स्वयं स्वतंत्रता, स्वराज्य-कर्म, आचरण कर्म, व्यवहार कर्म, उत्पादन कर्म, विनिमय कर्म, स्वास्थ्य संयम कर्म, न्याय सुरक्षा कर्म और उसके प्रचार, प्रकाशन, प्रदर्शन, साहित्य, कला की अभिव्यक्ति संप्रेषणाएँ कर्म हैं ।

कर्मकाण्ड – उत्सवों का निर्वाह विधि, मरणोत्तर मानसिकता की अभिव्यक्ति, कृतज्ञता का प्रकाशन, तत्संबंधी कार्य व्यवहार।

कर्मठता – उत्पादन कार्य में निष्ठा।

कर्मदर्शन – कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधि से सुखी होने की विधि।

कर्माभ्यास – उत्पादन और प्रमाणीकरण कार्यकुशलता निपुणता का उपार्जन।

कर्माभ्यासपूर्वक – कर्माभ्यास संपन्न होने के पश्चात प्रमाण, पहचानने करने सीखने समझने के क्रम में होना।

कर्म स्वतंत्रता – हर मानव कल्पनाशीलता सहज विधि से कर्म स्वतंत्र होना प्रमाण।

कर्मेन्द्रिय – जिव्हा, हाथ, पैर, गुदा, लिंग।

कर्मजित – जिनकी मानसिकता कर्मों से प्रभावित न हो।

कर्मवीर – कायिक वाचिक, मानसिक क्रिया में सामरस्यता एवं उसकी निरंतरता।

– जिसमें दायित्व एवं कर्तव्य निर्वाह क्षमता वर्तमान है।

करतलगत – अभ्यस्त, अभ्यास सम्पन्न।

करूणा – क्षमता योग्यता को स्थापित करने का क्रियाकलाप।

– जिनमें पात्रता और वस्तु न हो, उनको उसे उपलब्ध कराने वाली क्षमता।

कलंकित – पद प्रतिष्ठा अवस्थागत मौलिकता से विपरीत।

कंपन – कंपनात्मक गति परमाणुओं में, धरती में वर्तमान और रोग के रूप में मनुष्य के शरीर में वायु रोग।

कंपन-प्रदत्त – परिणाम परिवर्तन।

कसौटी – परीक्षण निरीक्षण सर्वेक्षण का माप विधि।

क्या – वस्तु पहचानने का प्रेरणा।

कहाँ – निश्चित देश को पहचानने की मानसिक प्रक्रिया।

क्यों – प्रयोजनों और उपयोगिता को पहचानने की मानसिक प्रक्रिया।

कितना – तादाद (संख्या)।

कला – अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन में खूबियाँ इंगित कराने का, सार्थक बनाने का क्रियाकलाप।

– उपयोगिता एवं सुन्दरता की संयुक्त उपलब्धि (प्रकाशन) एवं योग्यता।

कलामूल्य – उपयोगिता विधि में सहायक संरक्षकता सहज अर्थ में सार्थकता।

कलाविद् – अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन कार्य व्यवहार में पारंगत।

कलात्मक – इंगित होने के लिए क्रमबद्ध, लयबद्ध, प्रयोजनशीलता का इंगित होना।

कान्ति – मौलिकता सहित प्रकाशमानता।

कांक्षा – अपेक्षावादिता अथवा अपेक्षाऐं।

– कारण सहित आशा।

कातुर – वांछित उपलब्धि के प्रति शीघ्रता से कार्यरत होना।

– तीव्र गति से लक्ष्य की ओर गति।

कामना – संज्ञानशीलता में नियंत्रित संवेदनशीलता।

– प्राप्त समझदारी व्यक्त करने हेतु उत्पन्न बौद्धिक संवेग।

काल – क्रिया की अवधि।

कालखण्ड – अवधि का भाग विभाग।

कालवादी – प्रयोजनशीलता नित्य वर्तमान ज्ञान।

कालवादी परिज्ञान – वर्तमान में प्रयोजन सहज निरंतरता का अनुभव।

– परिष्कृत ज्ञान प्रमाण समेत ज्ञान।

कालक्रम – घटना की समयावधि के अनन्तर दूसरी घटना का कार्यविधि।

कालान्तर – एक घटना और दूसरी घटना के बीच में अन्तराल।

कारणानुक्रम – निश्चित कारणों से अनुबंधित कार्य।

– हर घटना अपने में क्रम से ही घटित होना ऐसे क्रम का नाम अनुक्रम।

कारणविधि – अस्तित्व में होना ही संपूर्ण उपलब्धि, यथास्थिति विकास, जागृति के लिए कारण।

कारणवादी – मूल कारणों के आधार पर हर क्रिया फल परिणाम को पहचानना।

कानून परस्ती – शासन नियंत्रण के अर्थ में जो नियमों की जनस्वीकृति है उसे स्वीकारना।

कार्य – व्यवहार कार्य, उत्पादन कार्य, सेवा कार्य, अध्ययन कार्य, व्यवस्था कार्य।

– विचार पक्ष के आकार अथवा निर्देश का अनुकरण करने के लिए जड़ पक्ष का योगदान।

कार्यकलाप– उत्पादन कार्य, व्यवहार कार्य, आचरण कार्य का संयुक्त स्वरूप और आहार विहार व्यवहार।

कार्यक्रम – सामाजिक आर्थिक परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था के आधार पर।

– कांक्षा सहित नियति – क्रमानुषंगीय क्रियाकलाप।

कार्यक्रम त्रय – सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक।

कार्य मर्यादा – सफलता के अर्थ में नियंत्रण

कार्यगति पथ – चैतन्य इकाई में गठन पूर्णता होने के आधार पर अणु बंधन–भारबंधन से मुक्ति और आशाबंधन वश जीने की आशा के आकृति में अपने कार्य गति पथ को बनाये रखना।

कार्य योजना – समझदारी, ईमानदारीपूर्वक निर्णीत निर्णयों के आधार पर योजनाएं सम्पन्न होना, ऐसी योजना के आधार पर क्रियान्वयन विधि सहित कार्य योजना स्पष्ट होना।

कार्य विधान – क्रियान्वयन गतिक्रम।

कार्यविधि – करने के लिए स्वीकारा गया नियम उपक्रम सहित क्रियान्वयन प्रक्रिया।

कार्यशैली – क्रियान्वयन पूर्वक स्वरूप देने के क्रम में निपुणता कुशलता पाण्डित्य विविधता और खूबियाँ।

कार्यक्षेत्र त्रय – बौद्धिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक।

कारीगर – उत्पादन कार्य को क्रियान्वयन करने वाले पारंगत व्यक्ति।

काव्यभेद – मानव परम्परा में आशित–प्रत्याशित, घटित भेदों में वर्णन कथन प्रस्ताव।

कारण पिण्ड – आत्मा और बुद्धि का संयुक्त स्वरूप।

कारणात्मक भाषा– यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज अनुभव मूलक अभिव्यक्ति।

कारकता – प्रेरणा, मार्गदर्शन, क्रियान्वयन में आवश्यकीय पृष्ठभूमि।

कारित – दायित्व कर्त्तव्य वाक्य संरचना को दूसरों से कराना।

– तीव्र गति से लक्ष्य की ओर गति।

– वांछित उपलब्धि के प्रति शीघ्रता से कार्यरत होना।

कारण – हर कार्य का मूल सूत्र।

– क्रिया की पृष्ठभूमि।

कायिक – मानसिकता सहित शरीर के द्वारा किया गया दायित्व कर्त्तव्य।

कायिक कर्म – शरीर द्वारा किया गया आचरण एवं व्यवसाय, व्यवहार।

कालक्षेप प्रक्रिया– समय को निरर्थक विधि से प्रलोभन के अर्थ में प्रयोग करना।

क्रिया – श्रम गति परिणाम के रूप में जड़–चैतन्य प्रकृति सहज प्रमाण; गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के रूप में चैतन्य प्रकृति में प्रमाण जागृत जीवन के रूप में।

– श्रम + गति + परिणाम का अविभाज्य वर्तमान।

– स्थिति एवं गति का संयुक्त रूप में वर्तमान।

क्रियाकलाप – समन्वित क्रिया समूह।

क्रियान्वयन– प्रमाणित होने के लिए किया गया व्यवहार क्रियाकलाप।

क्रियात्रय – प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम।

क्रियापूर्णता– जागृति सहज सर्वतोमुखी समाधान, सहअस्तित्व में जीने का प्रमाण।

– सतर्कता, मानवीयतापूर्ण क्रियाकलाप।

क्रिया प्रतिक्रिया – भ्रमित क्रिया कलाप का विपरीत फल परिणाम। भ्रमित मानसिकता से आशित रूप में किया गया क्रियाकलाप का विपरीत फल परिणाम सहज अनुमानात्मक प्रस्तुति।

क्रियावादी – उत्पादन कार्य सफलता में क्रम सहज प्रकाशन।

क्रियावादी तंत्र – सर्वतोमुखी समाधान की ओर प्रवृत्ति और कार्य।

क्रियाशील – जीवन (चैतन्य इकाई) क्रिया, रासायनिक तंत्र के मूल में परमाणु क्रिया, भौतिक तंत्र के मूल में परमाणु क्रिया–नित्य क्रियाशील है। इस प्रकार भौतिक रासायनिक एवं जीवन क्रिया के मूल में परमाणु ही नित्य क्रियाशील है। भौतिक रासायनिक क्रिया में श्रम गति परिणामशील है, जीवन क्रिया के मूल में गठनपूर्ण परमाणु क्रिया नित्य वर्तमान।

किरण – ताप का बिम्ब, प्रतिबिम्ब एवं अनुबिम्ब क्रिया।

किरणग्राही – किरणों को अपने में पचाने वाली क्रिया; सूर्य किरणों

को अथवा सूर्य उष्मा को धरती पचाती है। इसी प्रकार सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ने वाले जितने भी धरती है सूर्य उष्मा को पचाते हैं, अपने में उपयोग कर लेते हैं यही किरण ग्राहिता का मतलब है।

– प्राप्त किरण की इकाई में उपयोग योग्य क्षमता।

किरण स्त्रावी – मणियों में किरणस्त्राविता पारदर्शिता के आधार पर स्पष्ट है।

– इकाई में अंतर्निहित अग्नि के प्रभाव से प्राप्त प्रसारण क्रिया।

किरण–विकिरण – इस धरती पर किरण ग्राही एवं विकिरण स्त्रावी दोनों होते हैं जिसमें से विकिरण स्त्रावी धातुएं होती है। इसके मूल में अजीर्ण परमाणु का ही स्त्रोत है। ऐसी विकिरण तरंग हर धरती के वातावरण में फैला ही रहता है। इसी का नाम ब्रम्हाण्डीय किरण है। ये विकिरणीय वैभव विकासक्रम विकास के लिए योगदायी है।

कीर्ति – अपने सीमा पर प्रभाव क्षेत्र से अधिक दूर–दूर तक पहचान। उदाहरण रूप में गुणवत्ता के आधार पर।

– विगत में, विकास के संदर्भ में की गई श्रेष्ठता व सुलभता की प्रामाणिक प्रस्तुति।

कुलीनता – प्रमाण सहित जागृत मानव वंश परंपरा, भ्रम मुक्त परम्परा, समाधान समृद्धि को प्रमाणित करता हुआ परम्परा।

कुशलता – आवश्यकतानुसार प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता

मूल्य एवं सुन्दरता मूल्य को स्थापित करने वाली मानसिकता सहित किया गया क्रियाकलाप।

कुटुम्ब - संबंधों को पहचाना और निर्वाह करता हुआ संयुक्त स्वरूप प्रमाण सम्पन्नता।

कृपणता - आय को व्यय से मुक्ति दिलाने की प्रवृत्ति।

कृति - निश्चित रचना।

- आशा, विचार, इच्छानुरूप की गई रचना, निर्माण।

कृत - किया गया।

कृपा - उपलब्धि के अनुसार योग्यता सहज पात्रता स्थापना।

- वस्तु है पर उसके अनुरुप पात्रता नहीं है, उसको पात्रता उपलब्ध कराने वाली क्षमता।

कृतकारित अनुमोदित - किया गया, कराया गया, करने के लिए सहमति दिया गया।

कृत-कृत्य - करने योग्य सभी क्रिया कलापों को सर्वतोमुखी समाधान प्रस्तुत कर चुके।

कृतज्ञता - जिस किसी से भी उन्नति और जागृति के लिए सहायता मिला हो उसकी स्वीकृति।

कृतघ्नता - प्राप्त सहायता की अस्वीकृति।

कृत्रिमता - नियति क्रम के विपरीत प्रयास।

- भ्रमित प्रयास।

केन्द्र - मध्य बिन्दु।

केन्द्रिकृत मन:स्थिति - अनुभव मूलक मानसिकता व प्रमाण।

कैवल्य - समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण।

- सहअस्तित्व में अनुभूति की निरंतरता, आनंद की निरंतरता व प्रमाणिकता की निरंतरता।

- सुख, शांति, संतोष, आनन्द सहज अनुभव प्रमाण।

कोण - बिन्दु के सभी ओर फैला हुआ रेखायें।

कोष - पंच कोष, धनधान्य का संग्रहण स्थली।

- आशय तथा प्रयोजन सहित क्रियाशील अंग।

काल त्रय - भूत, भविष्य, वर्तमान ।

काव्य - इकाई के भाव, विचार एवं कल्पना को प्रसारित करने हेतु की गई वाङ्मय रचना।

कौतूहल - अज्ञात को ज्ञात करने, अप्राप्त को प्राप्त करने हेतु प्राप्त संवेग।

क्रूरता - स्व अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बलपूर्वक, दूसरे के अस्तित्व व स्वत्व को मिटाने का प्रयास।

क्रूरता वश - हिंसक प्रवृत्तियों के वशीभूत।

क्रीड़ा विनोद - स्वास्थ्य के अर्थ में क्रीड़ा, प्रयोजनों के अर्थ में विनोद, विनम्रता पूर्वक प्रसन्न मुद्रा सहित सार्थकता के लिए उत्सव की स्वीकृति।

क्रीड़ा विद्या- स्वास्थ्य वृद्धि के साथ ज्ञानवर्धक क्रियाकलाप।

क्रीड़ा विधि- खेल कूद का नियम।

क्रोधावेश - विरोधवश विरोधों को व्यक्त करना, वध, विध्वंस करना।

क्रोध दर्प – क्रोध व अपराध को उचित ठहराना।

क्रम – विकास की ओर श्रृंखलाबद्ध प्रगति।

ख

खण्ड – किसी भौतिक-रासायनिक तात्विक इकाई का विभक्त भाग।

– इकाई में से किया गया भाग।

खण्डित – कोई भी रचना को विकृत रूप प्रदान करना।

खनिज – उत्खनन पूर्वक धरती में से प्राप्त होने वाले भौतिक रासायनिक द्रव्य।

– धरती सहज संतुलन के अर्थ में ठोस रूप में होने वाले द्रव्य।

खुशी – सफलता सार्थकता की अभिव्यक्ति, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी की अभिव्यक्ति।

खट्टा – जीभ में अम्ल वस्तुओं का संयोग।

खारा – जीभ में क्षारीय वस्तुओं का संयोग।

खेल – स्वास्थ्य वर्धन के लिए हर्षोल्लास से किया गया कार्य।

ख्यात – सर्वाधिक लोगों को विदित रहना।

ख्याति – सर्वाधिक लोगों में पहचान होना।

– तीनों काल में प्रमाण के रूप में विद्यमानता।

खेद – आवश्यकीय तत्वों की पूरकता के अभाव की या वियोग की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन क्रिया।

ग

गम्य – समझ में आना, प्रमाणित होने योग्य, समझ आया।

– नियम पूर्वक बोध होना और व्यवहार में अवतरित होना।

गण्य – गणना योग्य और स्वीकार योग्य।

गहन – गंभीरता से सोचने योग्य मुद्दा, सोचने की आवश्यकता सहज स्वीकृति।

गत – बीता हुआ।

गतित – रूपात्मक गति रचना क्रम में, गुणात्मक गति कार्य में। साम्य ऊर्जात्मक गति, त्व सहित व्यवस्था गति मानवेत्तर प्रवृत्ति में भ्रमवश मानव इसके विपरीत अमानव रूप में।

गठन – उद्देश्य पूर्ती के लिए एक से अधिक इकाईयों का गठन संयुक्त क्रियाकलाप।

– एक से अधिक अंश, कण या इकाइयों के नियमपूर्वक लक्ष्य सहित प्रक्रियारत होना।

गठनशील – भौतिक-रासायनिक क्रियाओं में भागीदारी करता हुआ परमाणु।

गठनपूर्ण परमाणु – चैतन्य इकाई, जीवन-ऋतम्भरा अनुभव प्रमाण, आशा विचार इच्छा का प्रकाशन।

गठनपूर्णता – परमाणु में मध्यांश व परिवेशिय अंशों का निश्चित संख्यात्मक विधि से संतुष्ट होना। प्रस्थान-विस्थापन से मुक्त होना।

गतिशील - स्थानान्तरण, परिवर्तन, स्थानान्तरण में दूरी का आंकलन, दूरी अपने में व्यापक वस्तु परस्परता के मध्य दूरी।

गति - स्वयं स्फूर्त प्रवर्तित रहना, क्रिया के रूप में प्रवृत्ति निरंतरता, स्थानांतरण।

- इकाई के गंतव्य क्रम में नित्य वर्तमान।

- गठन पूर्णता के गन्तव्य क्रम में, परमाणु में अंशों की संख्या में परिवर्तन के साथ मात्रात्मक परिवर्तन, फलस्वरूप गुणात्मक परिवर्तन । परिवर्तन का अंतिम परिणाम अथवा संक्रमण गठन पूर्णता । यही परिणाम का अमरत्व है।

- क्रिया पूर्णता के गंतव्य क्रम में केवल गुणात्मक परिवर्तन अर्थात् अमानवीयता से मानवीयता और मानवीयता से सतर्कता जो परिष्कृत संचेतना अर्थात् अतिमानवीयता का प्रकाशन और प्रतिष्ठा।

- आचरण पूर्णता के गंतव्य क्रम में श्रेष्ठ और श्रेष्ठतम गुणात्मक परिवर्तन, परिमार्जन जिसका प्रमाण सजगता जो परिष्कृति पूर्ण संचेतना का प्रकाशन और प्रतिष्ठा है ।

गम्यस्थली - लक्ष्य को प्रमाणित करना। मानव लक्ष्य, समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व को प्रमाणित करना।

गणतंत्र - मानव के द्वारा संयुक्त रूप में स्वीकारा गया विधि न्याय संहिता परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में, से, के लिए मानवीयता पूर्ण आचार संहिता संविधान।

गमन - स्थानांतरण प्रक्रिया।

गद्दी परस्त - धर्मगद्दी, राजगद्दी में बैठने के उपरान्त स्वयं को श्रेष्ठ मानना।

गति का गंतव्य - आचरणपूर्णता, मानव परम्परा में ही आचरण परम मानवीयता पूर्ण आचरण के रूप में स्पष्ट हो जाता है दिव्य मानवीय गुण धर्मों के आधार पर मानवीयता पूर्ण आचरण को प्रमाणित करना–स्वभाव।

- परिणाम का गंतव्य अमरत्व में और उसकी निरंतरता। श्रम का गंतव्य विश्राम में और उसकी निरंतरता, गति का गंतव्य आचरण पूर्णता में और उसकी निरंतरता में वर्तमान है।

गतिवश - गति के कारण।

गति रहित अस्तित्व- व्यापक वस्तु, पारगामी, पारदर्शी और गति दबाव मुक्त।

गति अवरोध - गुणात्मक परिवर्तन या जागृति में अड़चन।

गति प्रदत्त - रचना से भिन्न वस्तु के संयोग से उत्पन्न गति।

गति त्वरित - तीव्र गति, तीव्र गमन।

गलती - कार्य संपादन, वस्तु संपादन में अपूर्णता अर्थात् निपुणता, कुशलता में अपूर्णता।

गलाना - धातुओं को द्रव रूप प्रदान करना।

गणित - इकाइयों की पहचान और ऋण धन स्थिति रूप में इकाई की पहचान और निर्वाह।

- एक अथवा अनेक एक की ऋण धनात्मक क्रिया।

गणितवादी – गणना विधि से तथ्यों को प्रकाशित करना।

गणना – जोड़ना, घटाना।

– काल, क्रिया, विस्तार ।

गणितात्मक – आंकलनात्मक-सांख्यकी विधि से प्रकाशन।

गणितानुक्रम – आंकलनात्मक विधि से स्पष्ट होना।

गरिमामयी – श्रेष्ठता और सार्वभौमता की ओर मार्ग दर्शन क्रिया।

गायन – लयबद्ध विधि से आशय सहित कर्ण-श्राव्य अथवा कान के लिए मधुरिम विधि से स्वरों को संजोकर प्रस्तुत करना।

ग्रामशिल्प – गाँव की आवश्यकता की वस्तुओं को गाँव में तैयार करना।

ग्राम परिवार – ग्राम के सभी परिवार निश्चित उद्देश्य के लिए तत्पर होना, प्रमाण प्रस्तुत करना, कार्यरत रहना।

ग्राहकता – ग्रहण करने वाली क्रिया।

ग्राम समूह – ग्राम परिवार के रूप में प्रमाणित एक से अधिक गाँवों का संयुक्त कार्यकलाप।

ग्राम क्षेत्र – गाँव का कार्यकलाप कार्य सीमा धरती पर किसी क्षेत्रफल में फैले रहना।

गामी – गम्य स्थल तक पहुँचने वाला।

ग्राह्य – ग्रहण करने वाले के लिए उपयोगी, आवश्यक, अनिवार्य, सार्थक वस्तु।

ग्राह्यता (ग्रहिता) – ग्रहण करने की क्षमता।

ग्राह्य क्षमता – ग्रहण करने की प्रक्रिया।

ग्रह – सौर मंडलानुसार शासनानुवर्ती भूमियाँ।

ग्रहण करना – पाने योग्य पाया गया, धरती जैसे ही अनेक धरतियों का होना इसकी स्वीकृति होना।

– उपयोगिता एवं अनिवार्यता पूर्वक मूल्यांकन को आत्मसात करना और स्वीकार करना।

ग्रस्त – भ्रम से घिरा, रोग से ग्रस्त, समस्या से ग्रस्त।

– विरोध पूर्वक प्रतिक्रांति।

ग्रसित – भ्रम-समस्या के चुंगल में फँसे रहना।

ग्रन्थी – अनसुलझी, सुलझने में कठिनाई।

ग्रहणशीलता – समझने, स्वीकारने व अध्ययन करने की गति।

गृहस्थ – परिवार समेत पहचान सम्पन्न घर में निवास करने वाला, आवास को अपनत्व के साथ अपने सुरक्षा के रूप में पहचाना हुआ।

गुणानुवादन – मानवत्व समझ परम्परा का गुण वर्णन।

गुणात्मक – उपयोगिता पूरकतावादी प्रयोजनों के अर्थ में प्रमाण क्रम।

गुरु – जागृत मानव, प्रमाणिक।

गुरुमूल्यता – श्रेष्ठता के रूप में प्रमाण।

गुरुत्व – भौतिक-रासायनिक वस्तुओं में बड़ी-छोटी रचना, ज्यादा जगह (स्थान) में फैला हुआ; स्थान मूलतः व्यापक वस्तु। मानव में गुणात्मक विकास जागृति,

जीवन में श्रेष्ठता, श्रेष्ठता के अनंतर और श्रेष्ठता-दृष्टा पद जागृति के रूप में मानव परंपरा में है।

– लघुत्व को आत्मसात करने की क्षमता।

गुण – गति के रूप में अभिव्यक्ति प्रकाशन व सम्प्रेषणा के रूप में।

– परस्परता में प्रभाव।

– सापेक्ष शक्तियाँ।

– सम-विषम मध्यस्थ गतियाँ।

– स्वभाव गति अथवा अपेक्षित गति का प्रकाशन।

गुणांक – गुणों का आंकलन, गत्यात्मक -प्रत्येक में रूप गुण स्वभाव धर्म अविभाज्य।

गुणानुषंगी – उत्तरोत्तर गुण वर्धन, परम्परागत गुणों का स्वीकार।

गुणवादी – श्रेष्ठतावादी, श्रेष्ठता की ओर ध्यान दिलाना, प्रमाण प्रस्तुत करना।

गुणानुक्रम – गुणवत्ता सहित गति में स्पष्ट होना।

गुणात्मकता– अधिकमूल्यन, दीर्घ परिणाम, अपरिणाम की ओर गति।

गुणात्मक भाषा – गति संबंधी वस्तुओं में गुणात्मक परिवर्तन संबंधी, मनुष्य में गुणात्मक परिवर्तन संबंधी स्पष्ट प्रकाशन।

गुणात्मक परिवर्तन – विकास की ओर गति व संक्रमण।

गुणात्मक विकास – जीवन जागृति क्रम, जागृति स्वरूप व क्रिया।

गुण सजातीयता –प्राणावस्था में बीजनुषंगीय आधार पर गुण सजातीयता।

– जीवावस्था में वंश के आधार पर गुण सजातीयता पदार्थावस्था में परमाणु अंशों के आधार पर गुण सजातीयता।

गुरुत्वाकर्षण - लघुत्व को आकर्षित करने वाली क्षमता ऋणाकर्षण।

गोचर – देखने में समझ में आना।

गोल – धरती की रचना जैसी है, वैसा ही सभी धरती की रचना स्वाभाविक है क्योंकि धरतियाँ अपने में घूर्णन गति परिवेशीय गति में निरंतर क्रियाशील है, शून्याकर्षण की यही महिमा है।

गोष्ठी – उद्देश्य समझने के लिए किया गया संयुक्त प्रयास।

गौरव – जागृति और उसकी प्रमाण परम्परा।

– निर्विरोध पूर्वक अंगीकार किये गये अनुकरण।

गौरवमय – जागृति परम्परा के रूप में प्रमाण होना।

गौण – अपेक्षाकृत महत्वहीन । लघु मूल्य।

गंध – मिश्रित विरल पदार्थ।

घ

घटना – भौतिक-रासायनिक घटना जीवन जागृति क्रम जागृति घटना।

– योग, संयोग, वियोग-प्रयोग प्रक्रिया से उत्पन्न परिस्थितियां।

घन – किसी वस्तु का भार (बोझ) सहित लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई में गणना करना, किसी वस्तु का भार।

घनीभूत – ठोस रूप में परिवर्तित होना रहना।

घर्षण – परस्परता में एक अच्छी दूरी से कम होने के उपरांत परस्पर अस्तित्व प्रदर्शन के रूप में एक दूसरे के बीच होने वाली संघर्षात्मक क्रिया।

घायल – शरीर व्यवस्था में अवरोध पैदा करना।

घुटन – समाधान सहज अपेक्षा के विपरीत समस्याओं से पीड़ित होना।

घृणा – भ्रमवश अवमूल्यन क्रिया का प्रकाशन।

घिरा – पानी में पत्थर डूब कर पानी से घिरा रहता है।

– व्यापक वस्तु में जड़-चैतन्य वस्तु घिरा रहता है।

– मानव भ्रमवश समस्याओं से घिरा रहता है।

– मानव ही समाधान पूर्वक उन्मुक्त स्वतंत्र गतिशील है।

घोषणा – अन्तिम निष्कर्षों को प्रकट करना, सत्यापन करना।

च

चयन – चुनने का क्रियाकलाप।

– चरितार्थता में सहायक आवश्यक अथवा अनिवार्य तत्व, वस्तु विषय का ग्रहण।

चमत्कार – एक व्यक्ति जिस विधि से कुछ भी प्रदर्शित करता है वह दूसरे के समझ में न आने की स्थिति तक।

चरितार्थ – चरित्र जागृति पूर्वक सार्थक होना, आचरण पूर्वक सार्थक होना, त्व सहित सार्थक होना, अर्थ सहित

आचरण।

चक्रवात – धरती सहज रूप में घूर्णन गति व वर्तुलात्मक गतिरत है इस दोनों के योगफल में आकस्मिक रूप में घटित होने वाली वायु प्रवाह।

चक्षु – देखने के अर्थ में पाँचों इन्द्रिय होते हैं। जिसमें से रूप को पहचानने वाला इन्द्रिय। रूप ग्राही इन्द्रिय, रूप प्रतिबिम्ब ग्राही इन्द्रिय को आँख या चक्षु संज्ञा है।

चरमोत्कर्ष – परम स्थली, गम्य स्थली।

चरित्र – मानव चरित्र अपने में स्वधन, स्वपुरुष/नारी, दयापूर्ण कार्य व्यवहार।

– प्रतिभा व व्यक्तित्व के संतुलन पूर्वक चरितार्थता (आचरण)।

चरित्र प्रधान – चरित्र के आधार पर पहचान।

चरम परिणिति – अंतिम परिणाम।

चरमोपलब्धि – अंतिम उपलब्धि।

चयनवादी – चुनाव करने की प्रवृत्ति सहित।

चरपरा – जीभ और मिर्च के संयोग से होने वाले रासायनिक द्रव्य का परिवर्तन।

चलित – चलाया गया।

चाहत – इच्छाओं का प्रगटन।

चालन – किसी वस्तु को स्थानांतरित परिवर्तित करने की क्रिया।

– दूसरे के स्वभाव से अधिक या भिन्न गति प्रदायी क्रिया।

चिन्तनाभ्यास – जागृत जीवन प्रमाणित करने की प्रक्रिया प्रणाली।

चिन्तनशील– अनुभव सहज प्रमाणों को प्रस्तुत करने की रूपरेखा।

चित्रकला – वास्तविकताओं को; यथार्थताओं को और सत्यता को चित्र के रूप में प्रस्तुत करना कारण गुण व गणितात्मक विधि से

चिराशित – सुदूर विगत से आशा किया गया, अपेक्षा किया गया, आवश्यकता महसूस किया गया।

चिन्हित व्यतिरेक – अड़चन, अवरोध का निश्चयन।

चित्त गुणग्राही – साक्षात्कार में गुणों का स्वभाव के अनुसार पहचान, आवश्यकता उपयोगिता रूप में चित्रण।

चित्त क्षोभ – साक्षात्कार विधि में रिक्तता, अध्ययन न हो पाना, जागृति सहज अध्ययन की कमी और यर्थाथता वास्तविकता की अपेक्षा।

चिराकांक्षित – सुदूर विगत से अपेक्षाएं मानव कुल में बना रहना।

चित्त – चिन्तन और चित्रण क्रिया (जीवन का प्रयोजन व निश्चयन)।

चित्रणवादी – सुनिश्चित करने की प्रवृत्ति और स्पष्टीकरण।

चिदानंद – सत्य में अनुभव सहज प्रमाण का चित्त पर प्रभाव।

चित्रण – उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता को चिन्हित रूप देना।

चेतना – संज्ञानीयता, ज्ञान विज्ञान विवेक संपन्नता।

– ज्ञान, साम्य ऊर्जा, ईश्वर, परमात्मा शून्य, निरपेक्ष शक्ति।

चेष्टित – क्रियारत।

चेष्टा – श्रम गति परिणाम का अविभाज्य प्रगटन।

चेतना क्रम – जागृति क्रम, जागृति।

चेतनायुक्त स्मरण – चित्रण पूर्वक स्पष्ट करना।

चैतन्य – गठन पूर्ण परमाणु में जीने की आशा सहज प्रकाशन।

– जीवन पद प्रतिष्ठा।

चैन – शान्ति समाधान समृद्धि का संयुक्त प्रमाण।

चैतन्य इकाई – जीवन।

चौड़ाई – फैलाव को स्पष्ट करने की सीमा में रचित रचना।

चैतन्य शरीर – जीवन्त शरीर।

चुम्बकीय बल – परस्पर चुम्बकीय ध्रुवों के मध्य चुम्बकीय धारा।

चुम्बकीयता – ऐसी भौतिक वस्तु की रचना जिसमें विद्युत ध्वनि और ताप संयुक्त प्रभाव का प्रभावीकरण।

चोषण – चूसने की क्रिया।

चतुरायाम – व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति।

चतुधर्मीयता– पदार्थ, प्राण, जीव एवं ज्ञानावस्था ये क्रम से अस्तित्व, पुष्टि, आशा एवं सुख।

चिंतन – इच्छा शक्ति में, से, के लिए परिमार्जन, प्रकटन

क्रिया।

चिदाकाश – चिन्तन की कार्य सीमा।

चैतन्य क्रिया – जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई जितनी है उससे अधिक क्षेत्र में उसकी सक्रियता और जीवन क्रियाकलाप जिसमें आशा, विचार, इच्छा, संकल्प एवं अनुभूति का प्रकाशन हो।

चैतन्य बल – मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि एवं आत्मा।

छ

छवि – इकाई का प्रभाव क्षेत्र, मानव परंपरा में अनुभव प्रभाव क्षेत्र।

छल – विश्वासघात के अनंतर भी उसका भास, आभास एवं प्रतीति न हो।

छन्द – भाषा में विशिष्ट तरंग की निर्माण क्रिया।

ज

जनवाद – मानवीयतापूर्ण व्यवहार, उत्पादन, विनिमय, आचरण सूत्र व्याख्या रूपी वाङ्गमय।

– जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य के लिए किया गया चर्चा, वार्तालाप, संवाद, प्रबन्ध, निबन्ध।

जड़ प्रकृति – भौतिक-रासायनिक क्रियाकलाप।

जनचेतना – मानवीयतापूर्ण आचरण व्यवहार व व्यवस्था में प्रतिबद्धता संकल्प और निष्ठापूर्ण क्रियाकलाप।

– जनमानस, शिक्षा व्यवस्था संविधान आचरण में व्यवस्था संपन्न रहना।

जनमत – मानवापेक्षा, मानव सहज आवश्यकता और जागृति, जागृत मानव परम्परा में होना।

जनप्रतिनिधि – परिवार प्रतिनिधि दस सोपानीय परिवार व्यवस्था में।

जन्मोत्सव – आगे पीढ़ी में जागृति और श्रेष्ठता सहज अपेक्षा उदय और उत्सवित होना ।

जप – जागृति, सार्थकता सहज अर्हता के लिए प्रार्थना।

जलवायु – विभिन्न भौगोलिक परिस्थिति।

जनतांत्रिकता – परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था।

जन्मसिद्ध अधिकार – समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीना, जागृतिपूर्वक जीना, अखण्ड समाज सार्वभौम सूत्रों को प्रमाणित करने का अधिकार।

जनादेश – लोकमानस जनमानस का स्पष्ट अभिव्यक्ति।

जटिलता – समझने सोचने करने में बाधा।

जागृति – गति का गन्तव्य, ज्ञान विज्ञान विवेक संपन्नता-ज्ञान, जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयपूर्ण आचरण ज्ञान की संयुक्त अभिव्यक्ति, जीवन लक्ष्य-मानव लक्ष्य को विवेचना सहित पहचानना।

– आचरणपूर्णता, सजगता, भ्रम से मुक्त जीवन, विकासपरम सहज प्रकाशन।

जागृतिक्रम – गणितवाद से गुणवाद, गुणवाद से कारणवाद, कारणवाद से जागृतिवाद।

जागृतिपूर्णता – क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता, दृष्टापद जागृति, अखण्ड

समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

जागृति सहज – दृष्टा पद प्रतिष्ठा, जागृति सहज प्रमाण, अनुभव प्रमाण परंपरा, सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज में भागीदारी सहज वैभव।

जागृतिपूर्वक – समझदारी पूर्वक, ईमानदारी पूर्वक, जिम्मेदारी व भागीदारी पूर्वक किया गया कार्य व्यवहार।

जागृति गामी – जागृति के लिए अध्ययन, अध्ययनशील।

जागृतिपूर्ण क्षमता – अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र रूप में जीने का प्रमाण।

जागृतिपूर्ण मानव – देवमानव, दिव्यमानव उपकार विधि से जीना।

जर्जर – अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन में विकृति।

जन चर्चा – मानव परंपरा में वार्तालाप, संवाद परस्पर संबोधन, प्रबोधन।

जटिल – समझने में, करने में, सोचने में, फल परिणाम में पूरा नहीं हो पाना।

जिम्मेदारी – कर्त्तव्य, दायित्वों की स्वीकृति।

जिज्ञासु – अज्ञात को ज्ञात, अप्राप्त को प्राप्त करना, सच्चाई को जानने मानने, पहचानने की कल्पना व इच्छा का प्रकटन।

जिम्मेदार – दायित्व और कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठान्वित रहना और निर्वाह करते रहना।

जीवावस्था – जीव संसार, समृद्ध मेधस संपन्न शरीर रचना और जीवन का संयुक्त रूप में प्रकाशन, मानव के निर्देशों

को अनुकरण करने वाला जीव।

– जीने की आशा सहित, अस्तित्वशील।

जीवन्तता – जीवित शरीर, जीता हुआ शरीर, संवेदनशीलता का प्रकाशन, संवेदनशीलता संज्ञानशीलता की परम्परा, संज्ञानशीलता पूर्वक नियंत्रित संवेदनशीलता इसकी परंपरा।

– ज्ञानेन्द्रियों में जीवन शक्ति का प्रसारण क्रिया।

जीव – जीने की आशावादी, मनुष्येत्तर जीव प्रकृति।

जीवन तृप्ति – जागृति; सुख शांति संतोष आनंद सहज प्रमाण; समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व सहज प्रमाण; अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

जीवन मर्यादा (नियंत्रण) – अभ्युदय अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान का प्रकाशन क्रिया।

जीवन बल – अनुभव-बोध, अनुभव-चिंतन, अनुभव सहज तुलन, अनुभव मूलक आस्वादन क्रिया।

जीवन पद – चैतन्य पद।

जीवनगत – जीवन में समायी हुई अनुभव प्रमाण।

जीवन संतुलन – अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन।

जीव संतुलन – वंशानुषंगीय विधि से उपयोगिता, पूरकता का प्रमाण।

जीव कोटि – जीने की आशा सहित जीवनी क्रम में जीना।

जीवन मूल्य – सुख-शांति, संतोष-आनंद।

जीवन मूल्य की अभिव्यक्ति – प्रमाणिकता, समाधान एवं प्रमाणों की

न्याय सहज संप्रेषणा।

जीवन परमाणु – गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई।

जीवन लक्ष्य– जागृति जिसका साक्ष्य प्रमाणिकता और समाधान है।

जीवन शक्ति – आशा विचार इच्छा ऋतम्भरा प्रमाण।

जीव चक्र – जीव परम्परा, प्रजनन विधि से आहार आदि चार विषयों में प्रवर्तित रहना, वंश ।

जीवाकार – संवेदनाओं को जीवन मानते हुए शरीर को जीवन मानना।

जीवन मुक्ति – भ्रम मुक्ति, जीवन को जीवन–शरीर को शरीर होने के रूप में जानना, मानना।

जीवन चक्र – प्रत्यावर्तन – परावर्तन।

जुझारुता – उन्नति और जागृति की ओर निष्ठा सहित गति।

जैविकता – क्रूर और अक्रूर स्वभाव समेत प्रकाशन, जीवन का आचरण।

जंगल युग – जंगल में रहते हुए जंगल को क्षतिग्रस्त न किया हुआ समय।

जाँचना – परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण।

ज्वलंत – सर्वविदित या सर्वाधिक लोगों को विदित।

जड़ – जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई जितनी हो उतने अवकाश में जो क्रियाशील हो।

जगत – विकासक्रम, विकास।

– जागृतिशील अस्तित्व।

– भौतिक रासायनिक रचना विरचनात्मक क्रियाकलाप।

– पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था की अविभाज्य अभिव्यक्ति क्रिया।

जनाकांक्षा – समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व में सहमत क्रिया।

जनन – अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्‌भिज क्रिया।

जरा – शारीरिक विरचना क्रमानुरूप अंग प्रत्यंगों में कार्य शिथिलता।

जाति – रूप, गुण, स्वभाव व धर्म की भौतिक क्रिया विविधता।

– बीजानुषंगीय क्रिया (पौधों में)।

– परिणामानुषंगीय क्रिया (पदार्थों में)।

– वंशानुषंगीय क्रियाकलापों का प्रकाशन (जीवों में)।

– संस्कारानुषंगीय क्रियाकलापों का प्रकाशन (मनुष्य में)।

जागृत शील– जागृति की ओर विकास क्रम में प्रकाशन शीलता।

– जागृति की ओर गतिशीलता की पहचान।

जानना – निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य, समझ।

– दृष्टा पद प्रकाश में वस्तु व मौलिकता जैसी है, वैसा ही स्वीकारना।

– जो स्थिति, गति व क्रिया जैसी है उसे वैसे ही स्वीकारना।

– रचना और विरचना जैसी है, उसे वैसे ही स्वीकारना।

– अनुभव होना, प्रमाणित होना।

जागृति भाव– जानने मानने में निर्भ्रम, पहचान तथा निर्वाह।

– समाधान और प्रामाणिकता पूर्ण क्रियाकलाप।

जीवन – गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई = मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा रूपी अक्षय बल + आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभव रूपी अक्षय शक्तियों का अविभाज्य वर्तमान क्रिया।

– संचेतना, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करने का क्रियाकलाप।

– जीने की आशा सहित अस्तित्व की निरंतरता, चैतन्यपद।

जीवन का कार्यक्रम – मानवीयता पूर्ण पद्धति से नियम त्रय पूर्वक, वादत्रय सहित, नीति त्रय समेत किए गए कार्यकलाप।

– नियम, न्याय, समाधान और प्रामाणिकता पूर्ण अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन।

– जागृति क्रम जागृति यह मानव संसार में स्पष्ट है।

जीवन जागृति – गति का गंतव्य, श्रम मुक्ति, परम विकास, आचरण पूर्णता, उसकी निरंतरता।

जीवन जागृति क्रम – अमानवीयता से मानवीयता, मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानवीयता की ओर गति।

जीने की कला (मनुष्य में) – अनुभव मूलक संस्कारों के अनुरूप अभिव्यक्ति, संप्रेषणा और आचरण, व्यवहार,

व्यवसाय प्रचार व प्रदर्शन क्रिया।

जीवन्तता भाव – ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों द्वारा जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने का क्रियाकलाप।

जीवन विद्या – मन वृत्ति को; वृत्ति चित्त को; चित्त बुद्धि को; बुद्धि आत्मा को अर्पित होने की क्रिया और अस्तित्व रूपी सत्य में अनुभव होने की क्रिया। साथ ही आत्मा बुद्धि को, बुद्धि चित्त को, चित्त वृत्ति को, वृत्ति मन को मूल्यांकित करने वाली क्रिया।

जीवन महिमा – अक्षय बल, अक्षय शक्ति सम्पन्नता। आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, अनुभवों की विशालता। मानव परंपरा की विचार शैली और जीने की कला पूर्ण, कार्य, व्यवहार, विन्यास का प्रभाव क्षेत्र।

जिज्ञासा – मनुष्य में स्वयं में और अस्तित्व में निर्भ्रम होने की अथवा यथार्थता को जानने मानने की तीव्र इच्छा और उसका प्रकाशन।

– जीवन सुखी होने के लिए शोध प्रवृत्ति।

जीवन ज्ञान – परमाणु में गठनपूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता और उसके क्रिया कलापों को जानना मानना।

जीने दो जियो – सहअस्तित्व पूर्ण कार्यक्रम का अनुसरण अर्थात् मनुष्य स्वयं समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने की कला की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन क्रिया।

– दया पूर्ण कार्य व्यवहार।

जीवनी क्रम– जीवावस्था से भ्रान्त ज्ञानावस्था, भ्रान्त ज्ञानावस्था से

भ्रान्ताभ्रान्त ज्ञानावस्था, भ्रान्ताभ्रान्त ज्ञानावस्था से निर्भ्रान्त ज्ञानावस्था का विकास।

– जागृति क्रम अर्थात् भ्रान्त, भ्रान्ताभ्रान्त, निर्भ्रान्त का वर्तमान।

झ

झूठ – अधिमूल्यन, अवमूल्यन, निर्मूल्यन वक्तव्य।

– अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति दोष, भ्रम।

झेलना – भ्रमित मानव ही न चाहते हुए निर्वाह करना।

झांकी – भ्रमित मानव में दिखावा उपक्रम।

ढ

ढांचा – बनावट।

ढलना – खनिज व प्राणावस्था के वस्तुओं को मानव मनाकार में परिवर्तित कर उपयोगी व कलात्मक रूप में बदलना।

त

तन (शरीर) – सप्त धातु से रचित पूर्ण समृद्ध मेधस तंत्र युक्त शरीर।

तकनीकी – प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य व कला मूल्य को स्थापित करना, कर्माभ्यास पूर्वक किया गया प्रमाण।

– निपुणता, कुशलता, पांडित्य का संयुक्त स्वरूप।

तत्परता – मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने में निरंतरता सहज प्रमाण।

तन्मयता – दृष्टा पद सहज निरंतरता, दया कृपा करुणा संपन्न प्रेम समत्व।

तरंग – स्थिरता में हस्तक्षेप, त्वरित गति प्रसारण।

– इकाई में सर्वाधिक आवेशित गति एवं उसके प्रभाव-क्षेत्र में उत्पन्न अवान्तर अर्थात् उथल-पुथल।

– तरल विरल पदार्थों में बाह्य हस्तक्षेपों के दबाव को प्रकाशन।

– आवेशित गति + उसका प्रभाव क्षेत्र।

तरंगवादी – मानव के अर्थ में प्रेरणावादी दबाव।

तर्क – तात्विकता के लिए गतिक्रम, समाधान के लिए गति क्रम, यथार्थता वास्तविकता सत्यता को प्रमाणित करने में मानसिक वैचारिक गति क्रम।

तर्क सम्मत – विचार क्रम सम्मत समाधान।

तत्संबंधी – यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को प्रमाणित करने के क्रम में।

तदाकार – सह-अस्तित्व में अनुभव और अनुभव सहज प्रमाण।

तद्रूप – अनुभव प्रमाण में ओत-प्रोत जीवन।

तद्रूप विचार – अनुभव मूलक विचार।

तद्रूपता – न्याय, धर्म, सत्य में मनाकार होना, जागृति।

तपस्वी – जागृति के लिए ध्यान देना, जागृति के अनन्तर प्रमाणित करने के लिए ध्यान देना।

तमन्ना – सुदृढ़ अपेक्षा, सुखी होना, भ्रम मुक्ति अपेक्षा।

तथ्यवश – वास्तविकताओं के आधार पर।

तकनीकी आरक्षण– तकनीकी को व्यक्तिवादी या समुदायवादी सीमा में आरक्षित कर लेना, मानव विरोधी घटना।

तरंग बल – तरंग अथवा कंपन से उत्पन्न बल।

तप – प्रमाणित करने में निष्ठा अथवा समझदारी संपन्न होने में निष्ठा।

– कायिक वाचिक मानसिकता की नियंत्रण क्रिया।

तरीका – तकनीकी–निपुणता कुशलता पाण्डित्य संगत विधि।

तमोगुण – विकास और जागृति के विरोधी प्रवृति।

तदनुकूल – आत्मीयता के अनुरूप, अनुभव के अनुरूप।

तत्सान्निध्यता – जागृति परम्परा में परस्परता।

तदावलोकन – दृष्टापद प्रतिष्ठा संपन्न व्यक्ति जीवन सान्निध्य, दर्शन सहित समझदारी के लिए ध्यान।

तत्व अमरवादी – पदार्थावस्था अस्तित्वधर्मी, प्राणावस्था अस्तित्व सहित पुष्टिधर्मी, जीवावस्था अस्तित्व पुष्टि सहित जीने की आशाधर्मी, ज्ञानावस्था अस्तित्व पुष्टि आशा सहित सुखधर्मी।

तत्व – परमाणु की स्थिति + गति।

– अस्तित्व में संपूर्ण भावों के मूल में पाए जाने वाले अनेक प्रजाति के परमाणु।

तत्व ज्ञान – अस्तित्व में परमाणु में विकास, जीवन, जीवन–जागृति, भौतिक रासायनिक रचना, विरचना, क्रियाओं का जानना, मानना।

– परमाणु में अंशों की संख्या भेदों को, जानना मानना।

तादाद – मात्रा।

तात्विक – मूल्यों के धारक–वाहक क्रियाकलाप।

– परमाणु–मूलतः मात्रा और अणु रूप का पहचान; अणुरचित रचनाओं का पहचान; क्रियाओं के मूल में परमाणु मूलक रचना व कार्य; भौतिक–रासायनिक और जीवन रूप में होने का।

तात्विकता – यथार्थता (जैसा जिसका अर्थ प्रकाशित है)।

– परमाणु में निहित अंशों में संख्या भेद।

तात्विक योग – एक प्रजाति के परमाणुओं का सहवास, सान्निध्य जागृत परंपरा में परस्पर मानव का सान्निध्य।

तात्पर्य – शब्दों के अर्थ, वस्तु के रूप में अस्तित्व में होना।

तादात्मयता – भ्रमित अवस्था में भ्रमित आकार ही मन में आता है। फलस्वरूप मनाकार साकार होता है। जागृति मानव के मन में जागृति के लिए आवश्यकीय आकार मन में आता है उसका साकार होता है।

तारतम्यता – परस्परता में तुलनात्मक आँकलन, मूल्यांकन होना, रहना।

ता–त्रय – अमानवीयता, मानवीयता, अतिमानवीयता।

ताप – अग्नि का बहिर्गमन।

– आवेशित गतिवश उत्पन्न ऊष्मा जो वातावरण में समा जाने के लिए बाध्य है।

तापग्रस्त – शरीर में ज्वर, धरती पर सूर्यताप अधिक प्रभावित होना।

तापमान – उष्मा का मापदंड।

तात्विक ज्ञान – अस्तित्व का स्पष्ट ज्ञान।

तिरोहित – रचना का विरचना होना।

तिरस्कार – अवमूल्यन।

तिलांजलि – रचना का विरचनात्मक समय।

तिरोभाव – रचना का विरचना क्रियाकलाप।

तीव्रभक्ति – भय मुक्ति की ओर तीव्रता से गति।

तीव्र इच्छा – जिस उपलब्धि में संभावना, अनुकूलता, संवेदना एवं प्रयत्न की संयुक्त क्रिया हो।

तुलन – तात्विक, भौतिक, रासायनिक, बौद्धिक, व्यावहारिक, व्यावसायिक रूप में द्रष्टा पद में होने वाली प्रक्रिया।

– प्रिया-प्रिय, हिताहित लाभालाभ, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, सत्य द्रष्टा क्रम का प्रकाशन।

तुलन बल – जागृत जीवन में वृत्ति में संपन्न होने वाली क्रिया।

तुष्टि – सफलता वृद्धि कारिता।

तूफान – हवा का अप्रत्याशित वेग, तरल, बहने वाली वस्तु, विचार गति का प्रकटन।

तेजस्वी – अनुभव प्रमाण संपन्नता।

तोष – समाधान सहज प्रवृत्ति संपन्नता और प्रमाण।

तांत्रिक – प्रेरणा स्त्रोत।

तंत्र – प्रेरणादायी प्रदायी क्रिया।

– तात्विकता की संप्रेषणा क्रिया।

तंत्रवादी – जागृति के लिए प्रेरणाकारी-वादी।

तंत्रणा – प्रेरणा विधि।

तंत्रित – प्रेरित नियंत्रित।

तृषा – चोषण क्रिया का उदय।

तृष्णा – तृषा-प्यास, शरीर में पानी का प्यास, जीवन में समझदारी का प्यास।

– विषयों के प्रति तीव्र प्रवृत्ति (भ्रमित अवस्था में)।

तृषान्वित – प्यास पीड़ित।

तृप्ति – आवश्यकता अनुकूल वस्तु प्राप्ति में, ऋतुकाल संतुलन रूप में, आचरण त्व सहित व्यवस्था रूप में।

तृप्तिकारक – सर्वतोमुखी समाधानकारी स्त्रोत।

त्वरण – गति और गति प्रदायी क्रिया।

– चालन संचालन क्रिया से प्राप्त विशेष गति।

त्यागवादी – अनावश्यकता की विसर्जन विधि संपन्न।

त्याग – अनावश्यकता के विसर्जन।

– अग्रिम विकास के लिए अनावश्यक का विसर्जन।

त्व सहित व्यवस्था – मानवीयता पूर्ण आचरण सहित सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

त्व – आचरण-हर वस्तु त्व सहित इकाई होने का प्रमाण होना, व्यवस्था का द्योतक है।

– अस्तित्व सहित मौलिकता (स्वभाव)।

तत्परता – विकास क्रम में सक्रियता।

– उत्पादन क्रियाकलाप में लगन शीलता।

– मानवीय व्यवहार आचरण में निष्ठा।

– उदय की ओर परावर्तन क्रिया।

तरल – ढाल की ओर बहने वाला द्रव।

– रासायनिक संयोगवश पदार्थों का द्रव रूप अथवा रस रूप।

त्र

त्रस्त – क्लेषित, समस्याओं से पीड़ित।

त्राण – समझने, समझाने के लिए स्फूर्ति।

त्रासदी – पीड़ित होना, पीड़ित करना।

त्रिआयामी – तीन निश्चित ध्रुवों से किसी वस्तु को देखने पर उसका संपूर्ण आकार, आयतन देखने को मिलता है।

त्रिकालाबाध – भूत, भविष्य, वर्तमान में एक सा विद्यमान सत्ता, पारदर्शी पारगामी सहज व्यापक सत्ता।

त्रिस्तरीय – बौद्धिक, प्राकृतिक और सामाजिक-आर्थिक, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था।

थ

थकान – मानसिक रूप में कुंठा, शरीर रूप में मनोगति के साथ चलने में असमर्थता।

द

दबाव – स्वभाव गति से आवेशित गति की ओर प्रेरणा।

– इकाईयों की परस्परता में आवेशित गति का प्रभाव क्षेत्र।

– इकाईयों की परस्परता में आवेशित गति का हस्तक्षेप।

– परस्पर इकाईयों में आवेशित गति का प्रभावन।

– आवेश एवं परिणाम प्रदायिता।

दर्शन – समझने के लिए वस्तु, वस्तु सहज क्रियाकलाप फल परिणाम समझा गया वस्तु, समझने की वस्तु।

– दर्शक-दृष्टि के द्वारा दृश्य को समझने की क्रिया।

– दर्शक-दृष्टि के द्वारा दृश्य को यथावत समझना और उसकी अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

दर्शक – अस्तित्व में संपूर्ण वस्तु नित्य वर्तमान समझने वाला।

– दृश्य समाने वाली दृष्टि का धारक-वाहक।

– दृष्टियों द्वारा दृश्य को जानने मानने वाले मनुष्य।

– मनुष्य में पाये जाने वाले चिंतन प्रकाश में न्याय, तुलन प्रकाश में नियम, बोध प्रकाश में धर्म और अनुभव प्रकाश में सत्य स्पष्ट होने की क्रिया।

दम – ह्रास की ओर जो आसक्ति है उसकी समापन क्रिया।

– भ्रम निवारण प्रक्रिया।

– अपव्यवता से मुक्ति।

दक्षता – जागृत क्षमता योग्यता पात्रता।

दर्द – अव्यवस्था की पीड़ा, अव्यवस्था का दर्शक।

दर्शनभेद – रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन दृष्टि, अस्थिरता अनिश्चयता मूलक वस्तु केन्द्रित दृष्टि, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित दृष्टि।

दार्शनिक – सहअस्तित्व में अनुभव संपन्न मानव।

दरिद्र – अत्याशा और अभावजन्य पीड़ा।

दया – जिसमें पात्रता हो और उसके अनुरूप वस्तु न हो, उसे उस वस्तु को उपलब्ध करा देने की क्षमता।

– जो जैसा है, जी रहा है उसमें हस्तक्षेप न करते हुए उसके विकास में सहायक होना ।

– अविकसित के विकास में सहायक होना।

– विपन्नता को सम्पन्नता की ओर गति देने वाली क्रिया।

दयापूर्ण – क्रियापूर्णता में पारंगत, आचरण पूर्णता में अभ्यासरत।

दयापूर्ण व्यवहार – मानवीयता के अर्थ में सम्मान जनक विधि से किया गया कार्य व्यवहार।

दयामय – कृपा और करुणामय पूर्वक सर्वशुभ चाहने वाला, प्रेरणा देने वाला, प्रमाणित करने वाला।

दाह – प्यास – जलन।

दाता – दया कृपा करुणा सहज प्रमाण क्रिया।

दानी – तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग प्रयोजन विधि से प्रयोजन में से के लिए अर्पण–समर्पण।

दाम्पत्य – जागृतिपूर्वक व्यवस्था में प्रतिज्ञाबद्ध पति–पत्नी संबंध।

दायित्व – संबंधों की पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह।

– परस्पर व्यवहार, व्यवसाय एवं व्यवस्थात्मक संबंधों में निहित मूल्यानुभूति सहित शिष्टतापूर्ण निर्वाह।

दिशा – उत्थान–पतन, भ्रम और जागृति ह्रास–विकास।

– परस्पर इकाईयों अथवा ध्रुवों के आधार पर दृष्ट होने वाली कोणों को दिया गया नामकरण, स्थिति, गति।

– विकास की ओर गति।

– गन्तव्य की ओर गति।

दिशावाही – जागृति की दिशा।

दिशाहीनता – लक्ष्य–हीन कार्यक्रम।

दिव्य मानव – आचरण पूर्ण मानव, दृष्टा पद प्रतिष्ठा संपन्न मानव, जागृति पूर्ण मानव अनुभव प्रमाण सहित जीने वाला।

– निभ्रम मनुष्य जो जीवन के लिए आवश्यकीय सभी नियमों का पालन करता है।

दिवा रात्रि – सूर्य सम्मुख व विमुख।

दिव्यात्मा – क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्ण, जागृतिपूर्ण जीवन, मानवीयता देव व दिव्य मानवीयता का प्रमाण।

दिव्यपद – जागृति पूर्ण दृष्टा पद।

दिव्यता – परम सत्य सहज अनुभव संपन्नता और प्रमाण।

दिव्य – जागृति पूर्ण प्रकाशन, अभिव्यक्ति और संप्रेषणा।

– गति का गंतव्य और उसकी निरंतरता।

दिव्यत्व – दया, कृपा, करूणा पूर्वक सहअस्तित्व में

अनुभवमूलक प्रणाली से प्रामाणिकता पूर्वक की गई अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा व प्रकाशन।

– सहअस्तित्व में अनुभूति, उसकी संप्रेषणा।

– जीवन जागृति, भ्रम–मुक्ति की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा।

दीर्घकालीन परिणाम – न्याय प्रक्रिया मानव परंपरा में, पदार्थावस्था में मृदा पाषाण मणि धातु, प्राणावस्था में बीज वृक्ष परंपरा में अनेक प्रजाति परंपरा के रूप में, जीवावस्था में वंश परम्परा के रूप में दीर्घकालीन परिणाम। ज्ञानावस्था भ्रम से जागृति गुणात्मक परिवर्तन, जागृति मानव परंपरा और श्रेष्ठतर श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति संप्रेषणा सहज रूप में परिवर्तन।

दीक्षा – सहअस्तित्व दृष्टि के लिए प्रेरणा, जागृति के लिए प्रेरणा,भ्रम मुक्ति के लिए प्रेरणा वस्तुओं का प्रदान।

– संस्कारों में गुणात्मक परिवर्तन प्रक्रिया।

दीनतावश – भ्रमवश विश्वासघात अमानवीय समस्यायें।

दीनता – अमानवीय स्वभाव।

– अपने दुःख को दूसरों से दूर कराने हेतु आश्रय प्रवृत्ति।

दुःख – समस्याओं के प्रभाव से पायी जाने वाली पीड़ा।

दुःखी – साधनहीन, रोगी, अज्ञानी।

दुःख नाशक – जीवन जागृति सहज कार्य प्रणाली।

दुरुह – समझने में करने में समाधान नहीं आना, भ्रमित रहना।

दुर्बल – मानसिक रूप से भ्रमित, शरीर रूप से वृद्ध या रोगी।

दुर्बली – शरीर बल या मनोबल के प्रयोग में न्यूनता।

दूरसंचार तंत्र – गतिशीलता और अधिक गतिशीलता क्रम में दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन।

देवी – दैवी गुण संपन्न नारी स्वरूप।

देवता – दैवी गुण संपन्न, स्वभाव संपन्न, लक्ष्य संपन्न नर (पुरुष) रूप।

– यश–बल के लिए धन–बल, जन–बल का अर्पण–समर्पण करने वाला।

देवपद – जागृति व जागृतिपूर्ण प्रमाण परम्परा में पूर्णता का प्रमाण।

देव पद चक्र – भ्रान्ताभ्रान्त अवस्था से मनुष्य का निर्भ्रान्त देव मानव पद की ओर विकसित होना और निर्भ्रान्त देव मानव पद से भ्रान्ताभ्रान्त अवस्था की ह्रास होने की आवर्तन क्रिया।

दूरी – दो ध्रुवों के बीच अथवा परस्परता के मध्य पाया जाने वाला सत्ता (व्यापक वस्तु)।

दूर – गति + काल।

देखना – आंखों से रूप की पहचान गुण स्वभाव धर्म को समझना।

देश – निश्चित भूखण्ड, स्थिति + सीमा।

– रचना की अवधि अथवा अवधिगत निश्चित ध्रुवों से सीमित विस्तार।

देहवाद – भोगवाद, संग्रहवाद, सुविधावाद।

देहवादी – पूरकता पूर्वक गुणात्मक विकास क्रम अथवा विकास क्रम के लिए उपयोगी होना।

दंड – जागृति परंपरा में सुधार प्रक्रिया का प्रमाण (भ्रमित परंपरा में यंत्रणा)।

दंडनीति – सुधार प्रक्रिया का स्पष्टीकरण क्रियान्वयन विधि।

दृष्टिकोण – अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित दृष्टि, सह अस्तित्ववादी दृष्टि, सर्व शुभवादी दृष्टि।

दृश्य – अस्तित्व ही सम्पूर्ण दृश्य।

दृष्टव्य – देखा गया, समझाया गया।

दृष्टापद – सहअस्तित्व में अनुभव मूलक प्रमाण संपन्न संकल्प चित्रण विश्लेषण व संबंधों का चयन क्रिया।

दृष्टा – जागृत जीवन जो अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचनाओं को जानने-मानने अभिव्यक्त संप्रेषित प्रकाशित करता है।

दृष्टिगोचर – समझ में आना।

दृढ़ता – परंपरा के रूप में जागृति सहज मानवीयता की धारक-वाहकता।

दृष्टांत – निश्चित घटना के अनुरूप घटना का वर्णन।

दृश्यवाही – दृश्य/वस्तु के रूप में परंपरा।

दृश्यमान – प्रतिबिम्बित रहना।

दृष्टियाँ – ईश्वरवादी, भौतिकवादी, सहअस्तित्ववादी।

द्वन्द्वात्मकता – भ्रमवादी समस्याओं से जूझना।

द्यौ – अनेक ब्रह्माण्ड के अंतर्गत जो असीम अवकाश है।

द्योतक – होने का प्रमाण।

द्रुतगामी परिणाम – शीघ्रता से होने वाले परिणाम, आवेशित गति पूर्वक होने वाले परिणाम।

द्रव्य – विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति प्रकट प्रकटित वस्तुयें।

– परिणामकारी पदार्थ सहज क्रिया, पदार्थ व प्राणावस्था की क्रियाकलाप।

– द्रवणपूर्वक अर्थात् परिणामपूर्वक अव्यय अर्थात् नाश रहित पदार्थ।

द्वितीय सोपान– दश सोपानीय क्रम में ग्राम स्वराज्य व्यवस्था क्रम में परिवार, ग्राम मोहल्ला परिवार समूह सभा।

द्विधा व्यवसाय मूल्य – उपयोगिता एवं कला मूल्य (व्यवसायिक उपलब्धि)।

दमन – कठोरता व क्रूरता पूर्वक संयत करने की प्रक्रिया।

दग्ध विषयी – विषयों में अतिव्याप्ति दोष से हत।

दुर्गति – दुष्ट कर्म (निषिद्ध कर्म) का परिणाम अथवा प्रतिक्रान्ति।

दुष्ट कर्म – राक्षसी कर्म।

द्रोह – न्याय पूर्ण आचरण में व्यतिक्रम उत्पन्न करना।

ध

धर्म – मानव धर्म–सुख, समाधान = सुख, समस्या = दुख, जीवों का धर्म–जीने की आशा, वनस्पतियों/प्राणावस्था का धर्म–पुष्टि, पदार्थावस्था का धर्म–अस्तित्व

– धारणा।

धर्मगद्दी – गद्दी में आसीन होने से धर्माचार्य मानना।

धर्मग्रन्थ – धर्म को रहस्य के रूप में स्वीकारता हुआ वाङ्गमय प्रबंध।

धर्मयुक्त समाज – मानवीयतापूर्ण जीवनरत जन–जाति।

धर्म सजातीयता – मानव में मानवीयता।

धर्मनिरपेक्ष – समुदाय धर्मों से अछूता रहने समान दृष्टि रखने की प्रतिबद्धता, इस विधि से धर्म निरपेक्षता का चरित्र स्पष्ट नहीं हुआ, इसलिए समुदाय चेतना से मुक्त मानव संचेतना से संपन्न मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान–धर्म निरपेक्ष संविधान।

धर्मनीति – तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग विधि प्रक्रिया।

धर्मनैतिक – तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग करने वाला।

धर्म परायण – सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने वाला, क्रिया पूर्णता का प्रमाण प्रस्तुत करने वाला।

धर्मपूर्ण विचार – तर्कसंगत विधि से सर्वतोमुखी समाधान का प्रतिपादन स्पष्टीकरण प्रमाण।

धर्म प्रणाली – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण प्रस्तुत।

धर्म बोध – सर्वतोमुखी समाधान समझ में आना।

धर्मात्मक तुलन – समाधान के अर्थ में परिशीलन, मूल्यांकन व समीक्षा।

धर्माधर्म – समाधान–समस्या का स्पष्टीकरण।

धन – जीव, वस्तु, मणि, धातु, स्थान।

– आहार, आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी वस्तुयें।

धन भय – धन पर आक्रामण, स्तेय (चोरी) एवं शोषण की संभावना = धन भय।

धैर्य – संकल्प के अनुरूप विचार, इच्छा एवं मानसिकता में निरंतरता।

धरातल – स्वभाव गति प्रतिष्ठा का पृष्ठभूमि–सहअस्तित्व।

धरती – इसी धरती पर पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञानावस्था परंपरा के रूप में स्पष्ट है, पदार्थों का संगठित अणु रचित वृहद पिण्ड के रूप में यह धरती ठोस तरल विरल के रूप में होना दृष्टव्य है। धरती के साथ ही चारों अवस्थायें स्पष्ट होती है। धरती स्वयं पदार्थावस्था में है।

धरती संतुलन – धरती अपने तापमान के रूप में और ऋतु संतुलन के रूप में संतुलित है।

धरती में पाचन– धरती में सूर्य उष्मा का पाचन क्रिया धरती में समाई हुई खनिज कोयले के आधार पर है।

धातु – गलनपूर्वक भी अपने अस्तित्व को यथावत बनाये रखने वाले और घनीभूत होने वाले वस्तु।

धारणा – सर्वतोमुखी समाधान का स्वीकृत रूप, बोध रूप, अनुभव रूप, प्रमाण रूप।

– जिससे जिसका वियोग न हो।

धारक – वहन करने वाली क्रिया, समझ के अनन्तर समझदारी का वहन, अनुभवमूलक विधि से समाधान का धारक-वाहक।

धीरता – न्याय पूर्वक जीने में दृढ़ता एवं निष्ठा।

धी – उत्सव शीलता का प्रवर्तन क्रिया (परावर्तन के लिए तत्परता)।

– ज्ञान ग्रहण एवं प्रमाणीकरण क्षमता।

ध्रुव – निश्चित चिन्हित बिन्दु।

ध्रुवीकरण – संतुलन स्वभाव गति।

ध्रुवीकृत – स्वभाव गति प्रतिष्ठा।

ध्यान – समझने के लिए ध्यान और समझ के अनंतर प्रमाणित करने के लिए ध्यान।

ध्वनि – घर्षण से उत्पन्न तरंग जो दूर-दूर गतित होती है।

ध्वनित – इंगित होना, सुनने में आना-अर्थ अस्तित्व में वस्तु के रूप में समझ में आना।

ध्येय – लक्ष्य, मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य, नियति सहज लक्ष्य।

ध्यान विधि – लक्ष्य के प्रति निष्ठान्वित प्रमाणित होना रहना।

धृति – संपूर्ण सह-अस्तित्व सहज सत्य में निष्ठा और

परावर्तित करने के लिए प्रवृत्ति सत्य या सत्यता का बोध सहज परावर्तन में निष्ठा।

– भय का अभाव (अभयता)।

न

नमस्कार – नमन पूर्वक तथ्यों के स्वीकार में सहमति।

नश्वर – परिणाम क्रिया, विरचना क्रिया।

नक्षत्र – दूर दूर में चमकती हुई धरतियाँ।

नष्ट – शरीर रचना का विरचना।

नजरिया – दृष्टि कोण।

नामी – नाम से इंगित वस्तु अस्तित्व में होने रहने के रूप में समझ में आना अथवा समझ में आने योग्य।

नाद – स्वरध्वनि की निरंतरता अथवा स्वर ध्वनियों की दीर्घ मात्रा।

नामकरण उत्सव – मानव संतान का नामकरण एक प्रक्रिया है ऐसी बेला में संतान जागृत होने जागृति सहज प्रमाण होने सार्थक होने की कामना सहित उत्सव मनाया जाना।

नाम – अस्तित्व में संपूर्ण वस्तुओं व अलग-अलग वस्तुओं का पहचान सहित संबोधन।

नित्य – सदा-सदा होना।

– तीनों काल में एक सा विद्यमान।

निरंतरता – सदा-सदा वर्तमान होना।

निष्कर्ष – समाधान सहज गति।

निदान – परीक्षण निरीक्षण पूर्वक किया गया निश्चयन।

निश्चित – परंपरा के रूप में प्रमाणित।

निर्वाह – संबंधों का, संबंधों में निहित मूल्यों का प्रकटन प्रमाण।

नियम – सुखी होने की विधि = समाधान।

– क्रिया का नियंत्रण।

– इकाईयों की नियंत्रण क्रिया।

नियंत्रण – स्वभाव गति प्रतिष्ठा में निरंतरता सहज संभावना त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

– मनुष्य की परस्परता में न्यायपूर्ण व्यवहार।

निष्णात निरूपण – समझदारी सहज पारंगत विधि से सूत्र व्याख्या प्रस्तुत करना।

निरीक्षण – निश्चयपूर्ण, स्पष्ट स्थिति गति दर्शन।

निराकरण – समाधानित होना।

नियंत्रित – स्वभाव गति में वर्तमान।

नियोजन – तन मन धन रूपी अर्थ का अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सुलभता में से के लिए किया गया अर्थ व समर्पण।

– नियमपूर्वक योजना श्रम संधान।

निपुणता – प्राकृतिक ऐश्वर्य पर आवश्यकतानुसार उपयोगिता मूल्य को स्थापित करने योग्य योग्यता।

निर्विशेष – ज्ञान विवेक विज्ञान और तकनीकी का लोक व्यापीकरण।

निर्विषमता – जिस परस्परता में ह्रास के लिए कोई संभावना न हो।

नियंत्रण क्रम – विकास क्रम।

नि:श्वसन – हवा को बाहर करना।

निर्देशन – निश्चित विधि प्रक्रिया को स्पष्ट करना।

निर्भर – सहअस्तित्व में विश्वासपूर्ण कार्यक्रम।

निराकार – व्यापक वस्तु, असीमित अस्तित्व।

निराधार – वास्तविकता एवं यथार्थता से भिन्न।

निर्णय – समाधान सहज सम्प्रेषणा।

– प्रमाणीकरण, परिमाणीकरण। प्रयोग, व्यवहार एवं अनुभव से सिद्ध तथ्य।

नियति – विकास और जागृति के लिए गुणात्मक परिवर्तन क्रम।

– सहअस्तित्व सहज प्रक्रिया प्रणाली और प्रमाण।

नियतिक्रम – सह अस्तित्व में विकासक्रम विकास, जागृतिक्रम जागृति, जागृति सहज निरंतरता।

नियतिक्रम सिद्धियाँ – प्राण पद, भ्रान्ति पद, देव पद एवं मोक्ष।

निक्षेपित – गड़ा गया धन, स्वीकृत किया गया जागृति सूत्र व्याख्या, समाधान सूत्र व्याख्या, समझदारी सहज सूत्र व्याख्या।

निक्षेपण – अध्यापन पूर्वक यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता, सहज सहअस्तित्व सहज अवधारणा रूप में बोध कराना।

निवृत्ति – भ्रम, भय बन्धन से मुक्ति।

निष्पन्न – योग संयोग विधि से जागृति की ओर होने वाली उदयशीलता।

– यौगिक क्रिया सम्पन्न होना, उत्पन्न बीजों का अंकुरित होना, संतानों का होना।

निग्रह – नियंत्रण।

निषेध – सामाजिकता का शोषण एवं विरोध।

नि:श्रेयस – जागृति पूर्णता सहज प्रमाण परम्परा।

नि:श्रेयसवादी – जागृति मूलक विधि से जागृतिगामी प्रणाली सहज प्रबोधन पूर्वक बोध सुलभ होना।

निर्देशित – अभ्युदय के अर्थ में स्पष्ट किया हुआ।

निहित – अविभाज्यता, इकाई में रूप गुण स्वभाव धर्म अविभाज्यता।

निष्णात – निपुणता, कुशलता, पांडित्य में पारंगत समाधान के अर्थ में प्रमाण।

निबंध – समाधान के अर्थ में निश्चित मानसिकता अथवा निश्चित प्रकृति भाषा के रूप में व्यक्त करना।

निरंतरसुखी – पीढ़ी से पीढ़ी समाधानित और समाधान सहज संपन्नता प्रमाण परंपरा।

निरंतरता का अनुभव – यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता एवं सत्य में स्वीकृति की अक्षुण्णता।

निष्ठा – निश्चित विधि के प्रति समर्पित उसकी निरंतरता प्रदान किए रहना।

– लक्ष्य को स्मरणपूर्वक प्राप्त करने का निरंतर प्रयास।

निश्चय – नि:श्रेयस (जागृति पूर्णता) में, से, के लिए स्वीकार किया गया और प्रमाणित किया गया प्रमाण।

– लक्ष्य, दिशा और प्रयोजन की ओर गति।

नित्यवस्तु – सह-अस्तित्व।

नित्य मोक्ष – नाम-रूपातीत, तीनों कालों में एक सा विद्यमान भासमान तथा आनंदप्रिय परम सत्ता में अनुभूति।

निरीक्षण – निश्चित अर्थ में किया गया मूल्यांकन।

नियति सहज – सहअस्तित्व सहज प्रकटन वर्तमान।

निदिध्यासन– अनुभव में होना, केन्द्रीकृत ध्यान, सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण अनुभव सहज प्रमाण।

निर्धन – समृद्धि विहीन, भ्रम से पीड़ित।

निबद्ध – नियम से अनुबंधित, नियमपूर्वक गतित रहने की प्रतिज्ञा।

नित्यकर्म – जागृति सहज प्रमाण क्रिया कलाप, व्यवस्था में भागीदारी, दायित्व कर्त्तव्य का निर्वाह।

निश्चयपूर्वक – समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक भागीदारी।

निष्ठान्वित – सफलता, सार्थकता की ओर क्रियाशीलता।

नियतिशुभ – सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या सम्पन्न मानसिकता और कार्य व्यवहार।

निर्वाह करना – संबंधों मूल्यों व व्यवस्था सहज दायित्व कर्त्तव्यों के पहचान सहित निर्वाह करना, निर्वाह में कार्य व्यवहार

सम्पन्न होना।

निर्देश – विकास और जागृति की ओर दिशा निश्चयन व लोक व्यापीकरण।

निर्दोष विचार – जागृति पूर्ण विचार।

निर्बीजन – जागृति पूर्ण प्रमाण, भ्रम व अपराध प्रवृत्तियों एषणाओं से मुक्ति सत्य सहज उपकार प्रवृत्ति।

– विषय चतुष्टय, एषणा–त्रय के बंधन से मुक्ति।

निर्बीज विचार– दृष्टा पद प्रतिष्ठा जागृति पूर्ण विचार, सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाजवादी विचार, जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य से अविभाज्यतापूर्ण विचार।

निर्भ्रांत – जागृति संपन्न।

निर्भ्रान्त मानव – जागृति पूर्वक दृष्टा पद में स्पष्ट प्रमाणित।

निर्भ्रम विचार– अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था वादी विचार, प्राणावस्था के रचनायें जीवन रहित स्पन्दन युक्त, जीवावस्था में जीवन और शरीर का संयुक्त प्रकाशन, ज्ञानावस्था में शरीर जीवन व जीवन जागृति सहज प्रमाण।

निर्भ्रम ज्ञान – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान।

निर्भ्रम – जीवन जागृति, प्रामाणिकता, समाधान एवं उसकी निरंतर क्रिया।

निर्भ्रमता – न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य, निर्णय निष्णातता, तदनुरूप व्यवहार, भाषा, आचरण में पारंगतता।

निष्कर्षित – समाधानित।

निश्चित चिंतन – स्वीकृति दृष्टिकोण समाधानकारी।

नियति विहित – नियति के अनुसार सहअस्तित्व में विकास क्रम विकास जागृति क्रम जागृति और जागृति सहज निरंतरता के अर्थ में।

नियति शुभ संभावना – निरंतर समाधान, समृद्धि, अभयतापूर्वक सहअस्तित्व में प्रमाणित करने के लिए अवसर सदा–सदा रहना।

नित्य समीचीन – सदा–सदा शुभ सर्वशुभ में, से, के लिए अवसर वर्तमान स्वीकार होना है।

निवेश – उत्पादन कार्य में तन मन धन रूपी अर्थ का समावेश करना।

नित्य ध्रुव – ग्रह गोल, चार अवस्था एवं पद।

नियम आचरण – मानवत्व सहित व्यवस्था में जीना।

निरपेक्षता – समस्याओं से मुक्ति, समाधान सम्पन्नता।

निरपेक्षकारण – जागृति सर्वतोमुखी समाधान सह अस्तित्व में अनुभव।

निरपेक्ष शक्ति – जिसमें गति, तरंग न हो, आकार प्रकार न हो और स्थिति पूर्ण हों।

नित्यकालीन – सर्वदा जागृति सहज परम्परा।

नित्य दृष्टि – सहअस्तित्ववादी दृष्टि परम सत्य दृष्टि।

निर्विरोध – समझदारी सहमति सहित स्वीकृति।

नियम बोध – अध्ययन पूर्वक जागृति सहज आचरण बोध।

निरुपण – प्रयोजन विधि से अथवा सार्थक विधि से किया गया सूत्र व्यवस्था सहित स्पष्टीकरण।

निर्णीत विधि – जागृतिपूर्ण, परंपरागत, प्रचलित, प्रचलित होने योग्य प्रयोजनशील विधि।

निःसृत – योग–संयोग से होने वाले गुणात्मक विकास, बीज विकास अथवा गुणात्मक परिवर्तन।

निर्विषेध – अमानवीय विषयों प्रवृत्तियों से मुक्ति।

निष्ठापूर्वक – प्रतिज्ञा और जागृति पूर्वक जागृति विधि से जीना।

नित्य सिद्ध – निरंतर सर्वसुलभ होने वाले व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक–एक वस्तुयें।

नियमबद्ध – नियम पूर्वक ही विकास, नियम पूर्वक ही ह्रास।

नीति – नियति विधि पूर्वक गतिविधियाँ।

नीति त्रय – धर्मनीति, राज्यनीति, अर्थनीति।

नियम त्रय – बौद्धिक, सामाजिक, प्राकृतिक।

नीतिपूर्वक परिवर्तन – समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व के रूप में गुणात्मक परिवर्तन।

नीतिपूर्ण आचरण – मानवीयतापूर्ण संस्कृति एवं सभ्यता ।

नैसर्गिक – सभी अवस्थाएं एक दूसरे के साथ संयुक्त हुआ प्रभाव, प्रमाण।

– वन, जलवायु, धरती और ऊष्मा का अविभाज्य वर्तमान।

नैसर्गिकता – समस्त मनुष्येतर प्रकृति = पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था।

नैतिकता – स्वभाव गति प्रतिष्ठा की निरंतरता।

नेतृत्व – जागृति सहज परम्परा में से के लिए नैतिकता पूर्ण प्रेरणा स्रोत।

नैमित्यिक कर्म – नियति सहज अभ्युदय निःश्रेयस ज्ञान विज्ञान विवेक को आवश्यकतानुसार प्रबोधित करना आचरित रहना।

नैतिकता प्रधान – तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षात्मक प्रवृत्ति और कार्य व्यवहार। नीति त्रय का अनुसरण।

न्यास – संबंध मूल्य निर्वाह विधि से किया गया नियंत्रण।

न्यायार्जन – न्याय सुलभता।

न्याय सम्मत नीति– संबंधों का निर्वाहपूर्वक तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग पूर्वक सुरक्षा का प्रमाण प्रस्तुत करना।

न्यायवादी विचार – सार्वभौम व्यवस्था भागीदारीवादी विचार।

न्याय – संबंधों की पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन फलन में परस्पर तृप्ति व उभय तृप्ति वर्तमान में विश्वास।

– मानवीयता के पोषण एवं संवर्धन एवं मूल्यांकन के लिए सम्पादन क्रियाकलाप।

– सम्बन्धों व मूल्यों की पहिचान व निर्वाह क्रिया।

न्यायपूर्ण व्यवस्था – मानवीयता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए नैतिकता पूर्वक चारों आयामों एवं पांचो स्थितियों में निर्विषमता तथा सभ्यता, संस्कृति, विधि, व्यवस्था की एकात्मता।

न्याय विधि - मानवीयतापूर्ण आचरण, मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान।

न्याय प्रक्रिया - दस सोपानीय व्यवस्था में न्याय सुरक्षा प्रक्रिया।

न्यायपूर्ण व्यवहार- संबंधों में न्यायपूर्वक जीते हुए लाभ हानि मुक्त लेन देन, समृद्धि का प्रमाण।

- मानवीयतापूर्ण पद्धति से दायित्व एवं कर्तव्यों का निर्वाह।

न्याय प्रदायी क्षमता - संबंधों का पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन पूर्वक परस्पर तृप्त होने का प्रमाण।

न्यायवादी - न्याय बोध कराने वाला।

न्यायविद् - वर्तमान में न्याय को प्रमाणित करने वाला।

न्याय सुरक्षा- न्याय पूर्वक ही व्यक्ति परिवार अखण्ड समाज, न्यायपूर्वक वर्तमान में विश्वास करना विश्वस्त होना।

न्याय सुलभता - जागृत मानव सहज परंपरा, सार्वभौम व्यवस्था, लोकव्यापीकरण होना।

न्यायिक - हर मानव का जागृतिपूर्वक न्याय मानसिकता सम्पन्न होना।

न्यूनफल - कर्म से जिस प्रकार का फल अनिवार्य है उसमें अपूर्णता।

नवधा क्रिया - कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत कारित अनुमोदित।

नवधा स्थापित मूल्य - कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य,

ममता, सम्मान, स्नेह।

नवधा शिष्ट मूल्य- सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौजन्यता, सहजता, आदर, सौहार्द्रता, निष्ठा।

प

पद - अस्तित्व में प्राण पद, भ्रांतिपद, देवपद, दिव्यपद चक्र के रूप में नित्य प्रकाशन।

पदार्थ - पद भेद से अर्थ भेद को प्रकट करने वाली इकाईयाँ (जड़-चैतन्य प्रकृति)।

पदार्थाकार - ठोस, तरल, विरल के रूप में पहचान।

पदार्थ विज्ञान - रासायनिक एवं भौतिक ज्ञान।

पदार्थावस्था - पद भेद से अर्थभेद को अर्थात् पहचान बताने वाले वस्तु, पदार्थावस्था में ही विकास क्रम स्पष्ट है। प्राणावस्था भी इसी क्रम में है। 'विकास' गठन पूर्ण परमाणु के रूप में है यह मानव परम्परा में निरीक्षण परीक्षण पूर्वक स्पष्ट है। मानव ही ज्ञानावस्था में होने के कारण भ्रमित-निभ्रमित विधियों से जीता है। इस प्रकार चारों अवस्थाओं का मूल स्वरूप ''पदार्थावस्था'' भौतिक रासायनिक व जीवन क्रिया सहज विधि से चार अवस्था चार पद अस्तित्व में स्पष्ट।

- क्रियाशील पदार्थ का ठोस, तरल एवं वायु रूप।

परमाणु - व्यवस्था का मूल ध्रुव।

- निश्चित संख्यात्मक अंशों से गठित गठन और व्यवस्था।

- अस्तित्व में निश्चित व्यवस्था का प्रकाशन।
- विकास में निश्चयता का सूत्र।
- एक से अधिक अंशों से गठित गठन सहित निश्चित क्रिया।

पहचानना - हर वस्तु अपने पद यथास्थिति रूप में बिम्बित रहता है, यह पहचान का सूत्र है यह जड़ प्रकृति में भी प्रमाणित है। इसी विधि से परस्पर अंश एक दूसरे को पहचानते हुए व्यवस्था में है। इस तरह प्रत्येक परमाणु अपने-अपने निश्चित आचरण को प्रस्तुत करते हैं। प्रयोजन के अर्थ में पहचान मानव परम्परा में जागृति पूर्वक ही प्रमाणित है। जड़-चैतन्य प्रकृति में भी प्रतिबिम्बन विधि से पहचान।

परिवेश - वातावरण, परिस्थितियाँ।

- किसी ध्रुव बिन्दु से गोलाकार में बनी हुई गतिपथ।

परिवेशीय - परिवेशों में गतित अंश।

परीक्षण - क्यों, कैसे, कितना का आंकलन (ज्ञानार्जन विधि) विधि।

परम्परा - परिणाम परिवर्तन परिमार्जन जागृति सहित यथा स्थिति परम्परा। यथा परिणाम परंपरा भौतिक-रासायनिक संसार में, बीज परम्परा वनस्पति संसार में, वंश परम्परा जीव संसार में, ज्ञान परम्परा मानव संसार में व्यवस्था न्याय, समाधान के अर्थ में स्पष्ट।

- परमता को पाने योग्य संस्कार प्रक्रिया की निरंतरता।

- पदानुसार अथवा विकास क्रम में अवस्थानुसार अपने ''त्व'' सहित व्यवस्था की अभिव्यक्ति और उसकी निरंतरता रूपी विधि प्रक्रिया। जैसे-पदार्थावस्था में परिणामानुषंगीय ''त्व'' सहित व्यवस्था प्रक्रिया। प्राणावस्था में बीजानुषंगीय ''त्व'' सहित व्यवस्था प्रक्रिया। जीवावस्था में वंशानुषंगीय ''त्व'' सहित व्यवस्था प्रक्रिया। ज्ञानावस्था में संस्कारानुषंगीय ''त्व'' सहित व्यवस्था प्रक्रिया।

परिणाम - वस्तु परिणाम-परमाणु में अंशों के घटने-बढ़ने के रूप में प्रस्थापन-विस्थापन।

- ॠतु परिणाम-खनिज और वनस्पतियों का योगफल, जंगल और खनिज पदार्थों के संयुक्त एकरूपता का परिणाम।
- मात्रात्मक प्रस्थापन विस्थापन /मात्रात्मक व गुणात्मक परिवर्तन।
- परमाणुओं में अंशों का प्रस्थापन विस्थापन क्रिया।
- अणुओं में भौतिक रासायनिक रचना व विरचनात्मक क्रिया।

परिवार-लक्ष्य - समाधान और समृद्धि।

परिवार - संबंधों का संबोधन व्यवहार सीमा व मर्यादा समाधान सहित सहज प्रमाण।

- जन्म सम्बन्ध अर्थात् सीमित व्यक्तियों का समुदाय जिसमें प्रत्येक व्यक्ति मानवीयता पूर्ण आचरण करते हुए सम्बन्धों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह पूर्वक

परस्पर भौतिक समृद्धि, बौद्धिक समाधान के लिए पूरक हैं।

परिकल्पना – प्रमाणार्थ की गई संभावनात्मक कल्पनाएं और चित्रण प्रकाशन।

परिज्ञान – परिशिष्ट ज्ञान (पूर्ण ज्ञान)।

परिमित-अपरिमित – सीमित रूप गुण स्वभाव रूप में सहज पहचान प्रमाण, असीमित रूप में प्रमाण वर्तमान।

परस्पर – उभय सान्निध्य-परस्पर-एक दूसरे की समीपता।

परस्परता – एक से अधिक का सान्निध्य।

परावर्तन – अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन।

परावर्तनशीलता –मनुष्य अपने में, से, के लिए ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्नता प्रमाण प्रस्तुत करने की विधि सहित प्रक्रिया।

परिप्रेक्ष्य – परिशीलन करने योग्य विधायें, प्रमाणित होने योग्य विधायें जैसे व्यक्ति, परिवार, देश-अनेक देश, अखण्ड समाज, अन्तर्राष्ट्र-सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित होना।

पद्धति – लक्ष्यपूर्ति के लिए निश्चित गति-प्रणाली-गति सहज तरीका पुष्टि संरक्षण प्रदाय करना-मानव परम्परा मौलिक है।

– पदानुसार दायित्व एवं कर्त्तव्य का निर्वहन।

परम – जागृतिपूर्णता, दिव्यमानव पद प्रतिष्ठा, दृष्टापद प्रतिष्ठा, सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण प्रतिष्ठा।

परिवर्तन – रूप परिवर्तन, बीज परिवर्तन, वंश परिवर्तन, विचार परिवर्तन, विचार परिवर्तन जागृति पूर्ण विचार संपन्-

नता पर्यन्त।

– परिणाम के आधार पर प्रत्येक इकाई की अपनी मौलिकता के रूप में वर्तमान होना।

– पूर्व से भिन्न गुणों का प्रकाशन।

परमानंद – सत्ता में अनुभूति की निरंतरता।

पराक्रम – प्रयोजनार्थ प्रमाणित करने का क्रम, परावर्तन में योजनात्मक क्रम, परावर्तन में प्रयोजनात्मक क्रम।

पराकाष्ठा – समस्याओं के पीड़ा वश गुणात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरणा।

पर्यन्त – लक्ष्य तक।

परिवर्द्धित – उन्नतोन्नत, श्रेष्ठता से श्रेष्ठ, जागृत परंपरा का रूप में प्रमाण।

पक्षधर – यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता के अर्थ में प्रतिबद्धता और सत्यापन।

पर्यावरण – धरती के सतह और वातावरण प्रभाव क्षेत्र।

परिणाति – परमाणुओं में प्रस्थापन विस्थापन क्रिया का परिणाम।

परिष्कृति – सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या संपन्नता।

परिशीलन – अखण्डता, सार्वभौम के अर्थ में प्रयोजनों को पहचानने सहज क्रिया।

परिपाक – योग, वियोग एवं संयोग पूर्वक प्रकाशित, परिणति, परिवर्तन, परिमार्जन।

परायण – निरंतरता को बनाए रखना।

परिपक्व – पारंगत होना प्रमाणित रहना।

परिणामानुषंगी – पदार्थावस्था में परमाणुओं में होने वाली प्रस्थापन विस्थापन के फलस्वरूप स्थापित होने वाली यथा स्थितियाँ।

परिक्रमा – सूर्य के सभी ओर घूमता हुआ ग्रहगोल।

पक्षाभिलाषा – व्यवस्था में भागीदारी करने की अपेक्षा।

परोपकार – समझा हुआ को समझना, किया हुआ का कराना, सीखा हुआ को सीखाना, उपयोगिता से अधिक वस्तुओं को प्रयोजनशीलता में समर्पित करना।

परार्थ – दूसरों की सुख-सुविधा के लिए किये गये प्रयास एवं नियोजन।

परंपरा जागृत – सामाजिक अखण्डता, सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण परंपरा।

पहचान – परस्परता में बिम्ब का प्रतिबिम्ब सहित रूप गुण स्वभाव धर्म को समझना।

परम तृप्ति – जागृति सहज निरंतरता।

परम ऐश्वर्य सिद्धि – परम सत्य रूपी सहअस्तित्व में अनुक्षण, ईक्षण वृत्ति (क्रिया) क्षमता, सहअस्तित्व में द्रष्टा पद प्रतिष्ठा।

पराभाव – जीवन मूल्यों का अनुभव और प्रमाण, सुख शांति संतोष आनन्द सहज अनुभव, प्रमाण अपेक्षा रहते हुए सफल न हो पाना।

– स्व-वैभव का बलपूर्वक परहस्तगत होना।

परिवर्ती – प्रमाणित होने के लिए समझदारी सहित तैयारी।

परावर्तन – आशा, विचार, इच्छा, संकल्प की संप्रेषणा। उसका प्रभाव क्षेत्र और स्वयं प्रभावशीलन क्रिया।

परावर्तन विधि – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण, अनुभव प्रमाण सहज, बोध, संकल्प, चिंतन, चित्रण, तुलन, विश्लेषण, आस्वादन, चयनपूर्वक प्रस्तुत होना।

परावर्तन अनुभव मूलक – प्रमाण।

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था – जागृत मानव परिवार में कम से कम दस व्यक्तियों का होना स्वीकार होता है। ऐसे परिवार में से एक व्यक्ति को व्यवस्था के लोकव्यापीकरण करने के उद्देश्य से दस व्यक्ति निर्वाचित करते हैं स्वयं भी अपने को निर्वाचित कर लेता है इस प्रकार दस व्यक्तियों में से एक व्यक्ति व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए तैयारी करता है। यही प्रथम जन प्रतिनिधि सभा है। इसी प्रकार से पूरे गाँव में, पूरे देश में, पूरे विश्व में मानवीय शिक्षा संस्कारपूर्वक जागृति के लिए वांछित ज्ञान विवेक विज्ञान सहज संस्कार स्थापित किया जाना होता है।

परिवार समूह सभा – दस परिवार में से एक-एक प्रतिनिधियों का सम्मिलित स्वरूप ही परिवार समूह सभा।

परिपूर्णता – जागृत व्यक्ति में समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी व भागीदारी परम्परा में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण।

– मानव परंपरा में जागृति, दृष्टापद, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण।

पदक्रम – प्राण पद, भ्रान्ति पद, देव पद व दिव्यपद।

पदमुक्ति – दिव्य पद, दृष्टापद, जागृति प्रमाण सहज अभिव्यक्ति व संप्रेषणा।

पद भय – पद से अलग होने का भय, अन्यायपूर्वक पद का प्रयोग।

परखना – निरीक्षण, परीक्षण व सर्वेक्षण सहित पहचान प्रस्तुति।

पशु भय – क्रूर जंतुओं जैसे सांप बिच्छू आदि का भय।

परंपरा – पीढ़ी से पीढ़ी जागृति सहज प्रमाणित होना, प्रमाणिकता धारक-वाहक परम्परा, पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में प्रमाण।

परिसीमा – हर वस्तु अपने वातावरण सहित सीमा।

परिचर्चा – जागृत सहज प्रमाण में, से, के लिए परामर्श विधि से किया गया तर्क संगत निष्कर्ष।

पतन – ह्रास की ओर गति।

पापमुक्ति – भ्रम मुक्ति – जागृति।

पाप – अमानवीयता वश आचरण एवं व्यवहार।

परिभाषित – अर्थ निर्देशित होने के लिए किया गया वाक्य रचना नाम से वस्तु का पहचान होने के लिए प्रयुक्त शब्द और वाक्य।

परिपूर्ण-विपुल- सर्वतोमुखी समाधान और समृद्धि।

परिपुष्टता – प्रमाणित होने के लिए सभी सहायक तत्व – सम्बन्ध-आचरण-व्यवस्था प्रधान।

परिश्रमी – उत्पादन कार्य में उत्साहित व्यक्ति समृद्धि के लिए सूत्र व्याख्या संपन्न।

परिष्कृति पूर्ण संचेतना – अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचनाओं को असंदिग्ध रूप में जानने-मानने की क्रिया।

– मानव-संबंधी, नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों को पहचानने और निर्वाह करने में परिपूर्णता।

परिस्थिति – फल परिणाम से बना हुआ वातावरण।

– व्यक्त होने, कार्य व्यवहार में प्रमाणित होने, व्यवस्था में जीने के लिए अनुकूलता।

परमार्थ – समाधान एवं अनुभूति के लिए किया गया नियोजन।

परमार्थी – जागृत सहज प्रमाणों को प्रमाणित करने वाला।

परिश्रम – समृद्धि के अर्थ में प्राकृतिक ऐश्वर्य पर नियोजित किया गया श्रम, तन मन सहित श्रम नियोजन।

परमात्मा – व्यापक वस्तु, पारगामी पारदर्शी सहज रूप में नित्य वर्तमान, व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक वस्तुएं चारों अवस्थायें डूबे भीगे व घिरे हुए के रूप में व्यक्त है, प्रमाणित है।

– तीनों काल में एकसा विद्यमान, बोधगम्य एवं आनंदमय (सत्ता)।

परमात्मा स्मरण – सत्तामयता में स्वीकृति की निरंतरता।

परिणति – कार्य-व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी का फल परिणाम रूप में वर्तमान।

परिपूर्ण – समाधान सहित आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

परिमाण – सीमा का प्रमाणीकरण।

परम ज्ञान – अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान व मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान।

परमदर्शन – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन।

परिमाणित – नाप तौल विधि से पहचाना गया।

परिसीमित – हर इकाई सीमित पदार्थ होना परिसीमित रहने का प्रमाण।

परिवार सभा – हर परिवार अपने में अखण्ड समाज के अंगभूत होने मानव संस्कृति सभ्यता सहज रूप के प्रमाण में परिवार है और सार्वभौम व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के आधार पर सभा है। हर जागृत मानव परिवार सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज सूत्र व्यवस्था के अनुसार जीने की स्थिति में ही संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था का प्रमाण होना पाया जाता है।

परामर्श – प्रमाणित होने के लिए आवश्यकीय सभी विश्लेषण।

परिवर्धन – वन–औषधि और पशुओं का परिवर्धन परिपालन मानव में ज्ञानवर्धन और परंपरा।

परिलक्षित – परीक्षण पूर्वक पहचाना हुआ।

– परीक्षण–निरीक्षण पूर्वक निर्धारित स्वीकृति।

– प्रमाणित करने का दृष्टि विकसित करना।

परिमार्जन – गुणात्मक परिवर्तन, जागृति क्रम में अमानवीयता से मानवीयता, मानवीयता से अतिमानवीयता पूर्ण

संचेतना का प्रकाशन।

परिमार्जित – विश्लेषण व प्रमाण सहज अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त ज्ञान विचार व्यवहार कार्य।

परिमार्जित विचार – अनुभव मूलक क्रिया।

परमोपलब्धि – जागृति सुलभता, जागृति सुलभ परंपरा।

परपीड़ा – अन्य का सुरक्षित जीने के क्रम में हस्तक्षेप, दूसरे को पीड़ित कर सुखी होने का प्रयास, बलपूर्वक जीवों का वध, भक्षण करना।

– अमानवीयतावादी व्यवहार एवं आचरण।

परिपालनात्मक विधि – प्राकृतिक संतुलन के लिए मानव अपने उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित करना।

परानुक्रम – संवेदनाओं के अनुरूप।

परिणामवादी – हर परमाणु परिणामवादी है अथवा परिणाम क्रम में है, परिणाम पूर्वक यथास्थिति में है, ऐसे परिणाम यथास्थिति विधि से वर्तमान इकाईयाँ त्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण। ये सब परिणाम वादी होते हुए यथास्थिति सहज वर्तमान होना त्व सहित व्यवस्था के रूप में प्रमाणित, मानव को मानवत्व सहित प्रमाणित होना इक्कीसवीं सदी तक प्रतीक्षित रहा है।

पराक्रमानुवर्ती – संवेदनशीलता एवं संज्ञानीयता सहित विधि से किया गया आचरण।

पराशक्ति – अनुभव मूलक प्रमाण।

– ज्ञान सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

परिपूर्ण तृप्ति - जागृति पूर्णता सहज प्रमाण, दिव्य मानव पद।

परधर्म - जीव धर्म के अनुरूप जीने वाला मानव, जीवों के सदृश्य जीने के लिए प्रयत्नशील मानव (पशु मानव राक्षस मानव)। पदार्थ, प्राण, जीव अवस्था में जीने वाली इकाईयाँ परधर्मी होते ही है।

परतंत्र - ह्रास के लिए प्राप्त दबाव, गति व आचरण।

पर-धन - वंचना, प्रवंचना, शोषण एवं अपहरण पूर्वक अथवा हीनता, दीनता एवं क्रूरता पूर्वक प्राप्त धन।

पशु मानव - हीनता-दीनता-क्रूरता पूर्ण स्वभाव। प्रिय-हित-लाभ-दृष्टि एवं विषय चतुष्टय में प्रवृत्ति तथा आसक्ति और भय से पीड़ित।

पदातीत - व्यापक वस्तु।

परवैराग्य - ऐषणात्रय से मुक्ति, दिव्य मानव पद।

परमत्रय - अस्तित्व परम, विकास परम, जीवन पद में जागृति परम

परिणाम बीज - पदार्थावस्था के प्रत्येक परमाणु में इसका प्रमाण पदार्थावस्था में ही विकास क्रम अनेक प्रजाति के परमाणु के रूप में प्रमाणित है।

परम्परा में साधना - समाधान सहज निरंतरता का अभिव्यक्ति।

परिहार - रोगों का, अड़चनों का निराकरण।

पाषाण - कठोरता का प्रकाशन, कठोर वस्तु।

पाँच स्थिति - व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्र।

पारदर्शी-पारगामी - व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक डूबे, भीगे, घिरे रहना का प्रमाण, भीगे रहने का प्रमाण ऊर्जा सम्पन्नता, डूबे रहने से परस्परता की पहचान, पारगामियता ऊर्जा सम्पन्नता के रूप में परस्परता में (एक-एक) प्रतिबिम्ब पहचानने के अर्थ में।

पारंगत - जागृत मानव प्रमाण प्रस्तुत करने वाला, परीक्षण निरीक्षण पूर्वक प्रमाण सहित सच्चाईयों को बोध कराने वाला।

पात्रता - ग्रहण क्रिया कलाप, भौतिक रूप में रासायनिक व जीव क्रिया के रूप में स्पष्ट।

पाचन - पाक परिपाक प्रक्रिया।

पारदर्शक - प्रतिबिम्ब, प्रकाश, पारगामी होना।

पारदर्शिता - भ्रममुक्ति, रहस्यमुक्ति, जागृति।

पारितोष - प्रसन्नता पूर्वक प्रदत्त वस्तु।

पावन - पवित्र, परम्परा योग्य पवित्र वस्तु, प्रेरणा ज्ञान विज्ञान विवेक कार्य व्यवहार।

पारलौकिक- अनुभव मूलक प्रमाण सहित जीना।

पारगामी - हर वस्तु में आर-पार रहना।

- हर वस्तु ओत-प्रोत रहना, भीगा रहना।

पाखण्ड - दिखावा पूर्वक विश्वासघात करना।

प्रिय - संवेदनाओं के लिए सुगम स्वीकृति।

पिण्ड - सभी ओर से सीमित ठोस वस्तु।

पिता – संरक्षण पोषण करने वाला, संतानों का संरक्षण पोषण किया जाना।

पिण्डज संसार का प्रकटन – वनस्पति संसार के अवशेषों से कीड़े-मकौड़े के तैयार होने की विधि-पद्धति स्वेदज है। अभी भी प्रयोग करने पर कीड़े-मकोड़े तैयार होते हैं। ऐसे कीड़े-मकौड़े में से अण्डज प्रणाली स्थापित हुई जैसे चींटी-स्वेदज और अण्डज भी है। ऐसे अण्डज प्रवृत्ति विकसित प्रणाली में गण्य हो चुकी है। जो सब भूचर, खेचर, जलचर के रूप में स्पष्ट है। अण्डज संसार के समृद्ध होने के पश्चात पिण्डज संसार की शुरूआत हुई और पिण्डज संसार समृद्ध विकसित होने पर मानव परम्परा हुई है और इसमें संवेदना से संज्ञानीयता तक जागृत होने की आवश्यकता बनी हुई है इसके सार्थक रूप होने के अर्थ में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद प्रस्तुत हुआ है।

पीड़ा – समस्याओं व अव्यवस्था से प्रभावित होना, भ्रमित मानव ही संपूर्ण प्रकार के समस्या का कारण है।

पीढ़ी – आगे की संतान परम्परा।

पुष्टि – यथास्थिति को बनाये रखने के लिए प्राप्त द्रव्य और मूल्यांकन पहचान निर्वाह पूर्ण अधिक और कम से मुक्ति।

पुत्रेषणा – जन बल कामना एवं वंश वृद्धि में विश्वास।

पुरुषार्थ – आवश्यकता से अधिक उत्पादन, समाधान सहित समृद्धि का अनुभव।

पुण्य – समझदारी को प्रमाणित करने की प्रवृत्ति, निष्ठा, प्रमाण।

– गुणात्मक परिवर्तन में प्रवृत्ति।

पुँज – चैतन्य इकाई की कार्य सीमा सहित गति का आकार यही चैतन्य पुँज है, इसी में सम्मिलित मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि एवं आत्मा है।

पुँजाकार – जड़ इकाई का आवेशित गति, जीवन में जीने की आशा सहित स्वयं स्फूर्त विधि से बना लिया गया कार्य गति पथ।

पुरातत्व – स्मरणार्थ बनाया गया स्मारक/रचना।

पूजापाठ – आगे और गुणात्मक विकास और प्रमाण के लिए बना लिया गया मानसिकता और अपेक्षारत रहने का कार्यक्रम।

पूजा – अग्रिम श्रेष्ठता के लिए प्रवर्तन, प्रवर्तित होने के लिए किया गया सभी औपचारिक कार्य।

पुनर्कल्पना – गुणात्मक परिवर्तन मूलक विचार क्रम।

पुण्यात्मा – सार्वभौम साम्य कामना का पोषण करने वाला।

पुण्यशाली – सर्वशुभ के लिए प्रयत्नशील प्रमाण संपन्न मानव।

पुण्यार्जन – जागृति सहज प्रमाण सम्पन्नता।

पुष्टि धर्म – प्रजनन क्रिया सहित परम्परा, वनस्पति संसार में एक बीज से अनेक बीज होना।

पूरक विधि – त्व सहित व्यवस्था क्रम में उपयोगिता व प्रक्रिया।

पूर्णता – गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

– अमरत्व, विश्राम, गंतव्य।

पूज्यता – स्वीकार और अनुकरण करने योग्य ज्ञान विवेक विज्ञान सम्पन्नता सहित आचरणों की स्वीकृति सहित किया गया सम्मान।

पूर्वानुक्रम – अनुभवगामी पद्धति पूर्वक अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित सूत्र व्याख्या।

– अनुभवमूलक परंपरा।

पूर्णतया – स्थिति सत्य, वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज सूत्र व्याख्या।

– संपूर्ण विधि से किया गया।

पूरक – एक दूसरे की परस्परता में उपयोगिता सहज संपन्न हुआ आदान प्रदान।

पूरकता – एक दूसरे के लिए उपयोगी, जागृति के लिए प्रेरक प्रमाण संपन्न होना।

पूंजी निवेश – उत्पादन कार्य में मूल पूंजी रूपी तन मन धन का नियोजन।

पूर्वज – पहले की पीढ़ियाँ।

पूर्वावर्ती प्रमाण – अध्यात्मवाद, अधिदैवीवाद, अधिभौतिकवाद किताब को प्रमाण मानता है क्योंकि यह ऋषि मुनियों को आकाश ईश्वर या देवी देवता से सुना हुआ है। देवदूत अवतारों के वाक्य भी उतना ही पावन माना गया है। ऐसे वचनों को एकत्र किया हुआ किताब को

प्रमाण माना गया है। भौतिकवाद के अनुसार यंत्र प्रमाण है मनुष्य प्रमाण नहीं है।

पूर्ण – जो स्वयं मात्रा न हो, जिसमें समग्र मात्रा समाई हो।

पूर्णविकास – परमाणु में गठन पूर्णता, अणु रचित रचना में धरती, प्राण कोशाओं रचित रचना में मानव शरीर।

पूर्वानुषंगित – पहले से जुड़ा हुआ, अनुभव से जुड़ा हुआ प्रमाण परंपरा।

पूर्णकला – मानवीयता पूर्ण संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था में जीना।

पूर्णफल – नियमपूर्ण व्यवसाय, न्यायपूर्ण व्यवहार।

पूर्व पुरुष – सुदूर विगत में प्राचीन-अर्वाचीन समय से मानव शुभ चाहता रहा किन्तु घटित नहीं हो पाया, इसे घटित करना सर्वशुभ परंपरा में जीना।

पूर्ण विश्राम– सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहज प्रमाण।

पूर्ण चेतना – जागृतिपूर्ण ज्ञान-दिव्य मानव चेतना सहज प्रमाण।

पूर्णता त्रय – गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

पूर्वानुषंगी संकेत – जागृति सहज प्रमाण ग्रहण करने की योग्यता, अधिकार।

पूर्ण बोध – अस्तित्व दर्शन बोध, जीवन ज्ञान बोध, मानवीयता पूर्ण आचरणबोध।

पूर्णभाव – जागृतिपूर्ण जीवन प्रतिष्ठा, परिष्कृतिपूर्ण संचेतना की अभिव्यक्ति।

– दृष्टा–पद–प्रतिष्ठा, दया, कृपा, करुणा के अविभाज्य रूपी प्रेम सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन क्रिया।

पूर्ण–विश्राम – क्रिया पूर्णता, फलतः समाधान = व्यवसाय व समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

पूर्ण विषय – परम सत्य, सहअस्तित्व, नित्य वर्तमान सहज उपकार प्रवृत्ति।

पूर्ण विकसित सृष्टि – जीवन घटना, चैतन्य इकाई, चारों अवस्थाओं व पदों से संपन्न धरती।

पूर्ण निराकर्षण – शून्याकर्षण, पदार्थावस्था में शून्याकर्षण प्राणावस्था व जीवावस्था धरती के साथ है धरती शून्याकर्षण में है। इस विधि से धरती के सारे पदार्थ शून्याकर्षण में है ही मानव परंपरा में जागृति आसक्तियों से निराकर्षण भ्रमवादी प्रवृत्ति से मुक्ति।

पूर्णाधार – सत्तामय।

पोषण – शरीर पोषण वस्तुओं से, समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी भागीदारी का पोषण परंपरा में जागृति सहज प्रमाण।

– इकाई + अनुकूल इकाई।

प्रेषण – प्रयोजनार्थ प्रेरणा सहित स्वीकृति योग्य प्रस्तुति।

प्रेरणा – प्रेरित होने का सूत्र, उत्सवित होने का सूत्र, जागृत होने का सूत्र, प्रमाणित होने का सूत्र व्याख्या।

– मिलन के अनंतर उभय सुकृति (विकास)। दिशा और गति के परिवर्तन के लिए प्राप्त दबाव और

प्रभाव।

प्रेरणावादी – प्रेरणा के लिए योग्य प्रस्ताव।

प्रेषक – प्रमाण सहित प्रेरणा प्रस्तुत करने वाला।

प्रेषित – प्रेरणा के लिए प्रस्तुत।

प्रेरित – प्रमाणित होने के लिए प्राप्त तर्कसंगत अध्यापन और स्वीकृति।

– सत्य सहज प्रेरणा को स्वीकारना व प्रमाण प्रस्तुत करना।

प्रेरित इच्छा – अन्य में उद्‌बोधित इच्छा।

प्रेरक – अध्यापक जागृति संपन्न हर मानव।

– गुणात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरणा स्त्रोत, प्रेरणा प्रदान करने वाला।

प्रेम – दया, कृपा, करूणा की संयुक्त अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रमाण। पूर्णानुभूति।

प्रेममयता – दृष्टापद, जागृति प्रमाण संपन्न, दया कृपा करूणा के संयुक्त अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

प्रेमास्पद – अनन्यता को प्रमाणित करने के लिए प्राप्त वातावरण व सम्बन्ध।

प्रेमानुभूति – सहअस्तित्व में अनन्यता सहज प्रमाण सर्वशुभ प्रवृत्ति प्रमाण।

प्रिय – विषय सापेक्ष स्वीकृति।

प्रीति – प्रेय, तृष्णा।

प्रेय – इन्द्रियों को प्रिय लगने वाली वस्तु।

प्रोत्साहक – लक्ष्य पाने की गति व क्रिया में सहायक।

प्रोत्साहन – निश्चित दिशा में पुनर्प्रयास के लिए प्रेरणा।

– निश्चित दिशा एवं मानवीयता में विश्वास दिलाना।

पंडित – सत्य को समझा हुआ और प्रमाणित करने वाला।

पांडित्य – सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान जीवन ज्ञान एवं आचरण ज्ञान में पारंगत।

– न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य निर्णय करने, तदनुसार आचरण करने तथा अन्य को बोधगम्य कराने योग्य क्षमता।

पंचायत – एक से अधिक लोगों के बीच में न्याय और समाधान के लिए तर्क सुनना, सुनाना, निर्णय लेना।

पंथ – निश्चित प्रकार की आस्था (मान्यता) पर आधारित चिन्ह, प्रतीक, रूढ़ियाँ।

पंचकोटि मानव –पंचकोटि में आज की स्थिति में जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना विधि से। पशुमानव, राक्षस मानव, मानव, देवमानव, दिव्य मानव।

पंचवटी – पाँच प्रकार के बड़े वृक्षों का संयुक्त वन, विगत की मान्यता– वट, पीपल, गूलर, आम और नीम।

प्रकाश – ताप का परावर्तन।

प्रकाशमान – प्रतिबिम्बित रहना, हर इकाई अपने चारों तरफ प्रतिबिंबित है।

प्रभाव – क्रिया की प्रतिक्रिया।

– अपनी मौलिक पहचान (जितना फैला है प्रभाव)

प्रभावशाली– जागृति सहज प्रमाणित व्यक्ति।

प्रभाव क्षेत्र – इकाई एवं उसका वातावरण – इकाई संपूर्ण और उसका प्रभाव क्षेत्र, हवा, पानी का प्रवाह विद्युत प्रभाव, शब्द प्रवाह उसका वातावरण बराबर उसका प्रभाव क्षेत्र विकिरणीय प्रवाह एवं उसका वातावरण अपने में प्रभाव क्षेत्र।

– मौलिकता सहज प्रभाव प्रसारण सीमा।

प्रयत्न – मानव लक्ष्य पूर्ति के लिए गतिशील रहना।

प्रमाण – मानव परंपरा में अर्थात् पीढ़ी से पीढ़ी में जागृति पूर्वक जीता हुआ प्रमाण नित्य प्रभावी है, जागृति सहज प्रमाण ही मानव इतिहास का आधार है, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही मानव परंपरा का नित्य प्रमाण है, मानव में क्यों कैसा कितना का उत्तर पाने का प्रश्न उसके कल्पनाशीलता कर्मस्वतंत्रता वश है।

– अनुभव, व्यवहार एवं प्रयोग सिद्ध होना।

प्रमाणमय – मानवीयतापूर्ण आचरण का लोकव्यापीकरण परंपरा, प्रावधान संबंध सूत्र व्याख्या।

प्रमाणित – प्रयोग व्यवहार व्यवस्थापूर्वक वर्तमानित।

– जागृति सहज रूप में प्राप्त प्रमाण परंपरागत प्रकटन।

– मानवीयतापूर्ण आचरण, समाधान समृद्धि सहज प्रमाण, स्वयं में व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सूत्र।

प्रमाणिकता – प्रमाणों का धारक वाहकता।

प्रतीति – जागृति क्रम में सत्य बोध सत्य प्रतीति होना पाया जाता है, जिसको साक्षात्कार के रूप में पहचाना जाता है, सत्य स्वरूप सह–अस्तित्व ही है।

– परिपुष्ट अनुमान।

प्रवर्तनशील – जागृत परंपरा में प्रमाणित करने की प्रवृत्तियाँ।

प्रतिष्ठा – दृष्टा पद परंपरा के रूप में जागृति सहज प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी यही परम्परा सहज प्रतिष्ठा।

– पद में स्थिति, स्वभाव गति व गुण से विचलित न होना।

प्रयास – विकास और जागृति की ओर निश्चित कार्यक्रम।

– लक्ष्य की उपलब्धि के गुरुतानुरूप वहन पूर्वक किये गये कार्यकलाप।

प्रकृति – जड़ और चैतन्य, चार अवस्था व चार पदों में स्पष्ट।

– क्रियाशीलता।

– जड़–चैतन्यात्मक अनंत इकाईयों का समूह।

– रूपात्मक अस्तित्व अर्थात् पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था की अनंत इकाईयाँ।

– रूप, गुण, स्वभाव धर्म का अविभाज्य वर्तमान।

प्रयोज्य – मानव कुल में जीवन मूल्य मानव लक्ष्य प्रमाण परंपरा।

प्रस्थापन – परमाणु में अंशों का बढ़ना–घटना।

प्रतिभा – समझदारी, ईमानदारी का संयुक्त स्वरूप, ज्ञान–विवेक विज्ञान संपन्नता– यही प्रतिभा

– निपुणता कुशलता पाण्डित्यपूर्ण अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

प्रसवन – बीज से वृक्ष का, परिणामपूर्वक यथास्थितियों का, पशुओं के वंश का– मानव परंपरा में ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्नता का प्रमाण और परंपरा व्यवस्था सहज है।

प्रत्याशित – परस्परता में पूरकता उपयोगिता सहित ज्ञान विवेक विज्ञान अर्जन के लिए समायी हुई अपेक्षायें।

प्रदूषण – भ्रमित मानव द्वारा प्रयत्न पूर्वक किया गया विकृत वातावरण, खनिज तेल, खनिज, कोयला विकिरणीय पदार्थों का ईंधनावशेष इस धरती के वातावरण में प्रभावित रहना।

प्रकाशन – यथार्थता को कलात्मक विधि से प्रस्तुत करना।

प्रणाली – कड़ी से कड़ी लक्ष्य संपन्न होने तक निश्चित प्रक्रिया की सघन अभिव्यक्ति।

प्रतिरूप – बीज और वंश में–बीज विधि से बहुबीज प्रमाण वंश विधि से संतान प्रमाण।

प्रणयन – समान प्रवृत्ति सहज कार्यक्रमों, गतिविधियों को साथ–साथ क्रियान्वयन करने का, जीने का, प्रमाणित करने का संकल्प समारोह।

प्रस्ताव – मानव परंपरा में सघन प्रमाणार्थ प्रस्तुत योजना दर्शन,

विचार, शास्त्र।

प्रवर्तित - प्रवृतियों का वर्तमान।

प्रत्यावर्तन - परावर्तन का मूल्यांकन, व्यवस्था में से प्रयोजन, सत्य, समाधान, न्याय सहज मूल्यांकन स्वीकृति क्रिया।

- प्राण कोशाओं से रचित रचनाओं का विरचना रूप में एवं बीज रूप में प्रत्यावर्तन।

- वनस्पति जगत।

- प्राण कोषाओं से रचित रचनाएँ।

- बीजानुषंगीय परंपरा।

प्रवाह - बहता हुआ पानी नदी का, हवा का, विचार का, परंपरा का।

प्रशिक्षण - प्रयोजनार्थ प्रस्तुत किया गया शिष्टता पूर्ण दृष्टि विकसित होने के लिए प्रस्तुत ज्ञान विवेक विज्ञान का बोध कराना।

प्रबोधित - प्रयोजन के अर्थ में ज्ञान विवेक विज्ञान का बोध कराना।

प्रणयति - प्रयोजनार्थ अनुप्राणित, प्रयोजनार्थ प्रेरणा, प्रयोजनार्थ ज्ञान विवेक विज्ञान बोध संपन्न करना।

प्रश्न - उत्तर पाने की अपेक्षा का सहज प्रस्तुति प्रकाशन।

प्रस्तुत - प्रवर्तन के लिए प्राप्त वस्तु।

- जागृति के लिए प्रस्तावित सूत्र व्याख्या।

प्रजाति - एक जाति के साथ जुड़ी हुई अनेक जातियाँ जिसमें

गुणों की भिन्नता का होना।

प्रज्ञा - सुदूर आगत तक फल परिणामों को स्पष्ट करने वाला ज्ञान।

- परिष्कृति पूर्ण संचेतना।

- वस्तुगत सत्य, वस्तु स्थिति सत्य के प्रति अवधारणा एवं स्थिति सत्य में ज्ञान।

प्रगति - आगे की ओर गति, समाधान समृद्धि संपन्न प्रमाण परंपरा, आगे और श्रेष्ठता के लिए गति।

- विकास की ओर गति।

प्रणाम - अखण्डता सार्वभौमता सहित समाधान समृद्धि के लिए स्वीकृति ज्ञान विवेक विज्ञान प्रक्रिया के प्रति कृतज्ञता का सत्यापन।

प्रयत्नशील - लक्ष्य पूर्ति के लिए प्रवर्तन पूर्वक की गई गतिविधियाँ व्यवहार प्रयोग प्रक्रिया।

प्रतीक - मान्यता के आधार पर स्वीकार सम्मान चिन्ह प्रमाण विहीनता का रिक्तता।

- जो प्राप्ति नहीं है किन्तु प्राप्ति जैसा लगना, प्राप्ति नहीं हो पाना।

प्रशस्त - उपयोगी प्रयोजन कार्य प्रवृत्ति सूत्र व्याख्या व प्रमाण।

प्रधान - वरीयता क्रम में प्राथमिकता।

प्रवर्तन - जागृति और समाधान प्रमाणों को वर्तमान में प्रमाणित करना।

प्रदत्त - प्रमाणित होने के लिए दिया गया ज्ञान विवेक विज्ञान।

प्रभावन – प्रेरणा सहज स्वीकृतियाँ।

प्रबल – प्रयोजनों के अर्थ में प्रस्तुत क्रिया प्रक्रिया और आचरण।

प्रवक्ता – प्रमाण सहज सत्यापन, प्रमाणपूर्वक सत्यापन।

प्रयासोदय – सर्वशुभ कार्य–व्यवहार, मानसिकता सहित प्रयोग प्रकाशन।

– प्रवृत्तियों में गुणात्मक परिवर्तन और प्रमाण।

– जागृति सहित परंपरा में जागृति का लोकव्यापीकरण सहज परंपरा।

प्रदायी – प्रयोजनार्थ देने की क्रिया।

प्रमोद – प्रयोजनार्थ प्रसन्नता सहित प्रस्तुति।

प्रतिपादन – प्रमाणीकरण के लिए प्रस्तुत सूत्र व्याख्या।

– प्रयोजनकारी गतिविधियों का स्पष्टीकरण प्रदर्शन प्रकाशन, संप्रेषणा अभिव्यक्ति में, से, के लिए।

प्रतिपादित – सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज सहज प्रमाण के लिए प्रस्तुत सूत्र व्याख्या रूपी प्रबंध।

प्रतिपालन – जीवन में व्यतिक्रम का निवारण करने वाली क्षमता।

प्रतिज्ञा – प्रमाणित करने के लिए सत्यापन, होने के लिए सत्यापन।

प्रभावी – जागृति के लिए सत्यापन, होने के लिए प्राप्त अवधारणा और बोध।

प्रतीक्षा – फल की अपेक्षा काल गति विधि से।

प्रक्रिया – आचरण सहित उत्पादन प्रक्रिया, पारंगत होने की

प्रक्रिया, प्रमाणित होने के लिए प्रक्रिया।

– प्रबुद्धता पूर्वक की गई क्रिया।

प्रतिबिम्ब – प्रत्येक एक–एक रचना विधि में अस्तित्व विधि में हर उपयोगी व पूरक इकाई के रूप में होना बिम्ब है। इकाई अपने सभी ओर प्रतिबिम्बित रहता ही है, परस्परता में पहचान का आधार प्रतिबिम्ब ही है।

प्रकाश – अधिक तप्त बिंब का प्रतिबिंब, परम तप्त बिंब का प्रतिबिंब।

प्रकाशमयता – प्रतिबिम्ब सहित गुण स्वभाव धर्म सहित व्यवस्था के अर्थ में वर्तमान होना।

प्रकटन – हर इकाई में गुण स्वभाव धर्म आवश्यकतानुसार प्रकट होना।

प्रस्थापन – परमाणुओं में अंशों की वृद्धि/स्वीकार होना, मानव में से के लिए ज्ञान विवेक विज्ञान सम्पन्नता स्थापित परंपरा विधि से प्रमाणित होना।

प्रवृत – समाधान और सहअस्तित्व प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए उन्मुख प्रयत्नशील प्रयासरत।

प्रवृत्ति – जागृत मानव सहज मानवत्व सहित आचरण।

– उपलब्धि एवं प्रयोजन सिद्धि हेतु प्रयुक्त बौद्धिक संवेग।

– परावर्तन होने के पहले जीवन में होने वाली आशा, विचार, इच्छा एवं संकल्पों की स्थिति एवं मानवीयतापूर्ण मानसिकता।

प्रवृत्ति सहज – जागृति सहज स्वीकृति पूर्वक प्रमाणित होने की गतिविधि।

प्रवृत्ति सापेक्ष – आचरण व्यवहार भागीदारी, जिम्मेदारी, ईमानदारी, समझदारी मूलक सोच विचार।

प्रबंध – व्यवस्था सहज परंपरा के लिए प्रतिपादित सूत्र व्याख्या रूपी ग्रंथ, मानवीयता पूर्ण आचरण, मानवीयता पूर्ण आचार संहिता एवं संविधान, मानवीय शिक्षा संस्कार व दस सोपानीय व्यवस्था सूत्र व्याख्या।

प्रखर – जागृत मानव में अभिव्यक्ति संप्रेषणा में तीव्रगति।

प्रकल्प – प्रकल्प अर्थात् प्रारम्भिक क्रियाकलाप प्रमाणित करने के रूप में विकल्प, समाधानित करने के रूप में विकल्प।

प्रकाशपुँज – तीव्र प्रकाश।

प्रतिफल – श्रम नियोजन कार्य और व्यवहार के फलन में प्रयोजनीयता पूरकता उपयोगिता कला मूल्य सम्पन्न वस्तुयें।

प्रभुसत्ता – प्रबुद्धतापूर्ण शिक्षा संस्कार, आचरण, व्यवहार उत्पादन, विनियम व्यवस्था रूपी सत्ता (परंपरा)।

– प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण विचार, समाधान व न्यायपूर्ण व्यवहार, न्याय व नियम पूर्ण आचरण, नियम व नियंत्रण पूर्ण उत्पादन और पूरक सिद्धि रूपी विनिमय क्रियाओं को करने, कराने और करने के लिए सहमति करने की प्रक्रिया।

प्रवीण – अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन कार्य में पारंगत।

– कार्य कुशलता सहित कला निपुण।

प्रकारांतर – क्रियान्वयन कार्यों में आवश्यकीय परिवर्तित क्रियाकलाप।

प्रवाहित – जागृति सहज प्रमाणित विधि से शिक्षा पूर्वक जागृति का लोकव्यापिकरण करना।

प्रयुक्ति – उपयोग सदुपयोग व प्रयोजन के अर्थ में तन मन धन रूपी अर्थ का नियोजन अर्पण समर्पण।

– प्रबुद्धता सहित नियोजन।

प्रभावित – जागृति के लिए अनुप्राणित प्रवर्तित।

प्रबुद्धता – सतर्कता एवं सजगता, निपुणता, कुशलता एवं पाण्डित्यपूर्ण व्यक्तित्व।

– मानव में निपुणता, कुशलता, पाण्डित्यपूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास। नियम पूर्ण व्यवसाय, न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधान पूर्ण विचार, प्रामाणिकता पूर्ण अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

– मानव द्वारा मानवत्वपूर्ण पद्धति, प्रणाली एवं नीतिपूर्ण अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

– जीवन जागृति, सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

प्रभुता – सार्वभौमिकता।

प्रशस्त स्वरूप – स्वभाव गति से प्रमाणित।

प्रभेद – प्रमाणित करने में श्रेष्ठता के अर्थ में विविधता।

– प्रयोजनार्थ सार्थकता।

प्रजातंत्र – जागृत मानव परंपरा में निर्वाचित जनप्रतिनिधियों से व्यवस्था तंत्र में भागीदारी, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सार्थक।

प्रतीक्षित – मानव परम्परा में समझदारी, ईमानदारी, भागीदारी, जिम्मेदारी

प्रस्फुरित – प्रमाणित होने के लिए स्फुरण प्रेरणा उद्देश्य।

प्रच्छन्न – छुपा हुआ, प्रगट होने योग्य। हर बीज में वृक्ष होने का तत्व छिपा रहता है, वृक्ष के रूप में प्रगटन, मानव परंपरा में हर संतान में सच्चाई को प्रगट करने का बीज समाहित रहता है अथवा छुपा रहता है।

प्रस्थापन – परमाणु में अंशों का संख्या बढ़ना, मानव परम्परा में अध्यापन पूर्वक यथार्थता वास्तविकता सत्यता सहज अवधारणाओं को स्थापित करना बोध करना।

प्रशस्ति – योग्य, ग्रहण योग्य, प्रमाणित करने योग्य, व्यवहार योग्य, उत्पादन योग्य, व्यवस्था में जीने योग्य।

प्रचलित – परम्परा में आचरित प्रमाणित।

प्रदायी क्षमता – देने योग्य अथवा देता हुआ अथवा देने वाला– ज्ञान विवेक विज्ञान उपयोगी वस्तु उपचार व्यवहार कार्य में विश्वास प्रदायीता स्पष्ट होना।

प्रवचन – प्रमाणित करने योग्य सार्थक वचन।

प्रतिबद्धता – सच्चाईयों को प्रमाणित करने के लिए निष्ठा और प्रमाण।

प्रजा – प्रज्ञाशाली जनगण।

– प्रगति पथ में सक्रियता अर्थात् मानवीयता पूर्ण आचरण करने वाला।

प्रतीक्षित – मानव परंपरा में सर्वशुभ सहज नित्य वर्तमान और कायिक-वाचिक मानसिक रूप में किया गया कार्य व्यवहार फल परिणाम।

प्रधान राज्य परिवार सभा – यह दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य सभा में नौवीं सोपान वाली परिवार सभा है ऐसी सभा के लिए आठवीं सीढ़ी के मुख्य राज्य सभाओं में से निर्वाचित दस सदस्य प्रधान राज्य परिवार सभा गठन किए रहना होता है, इन सभी दसों सीढ़ियों में कार्यरत परिवार सभाएं जो ग्राम परिवार से विश्व परिवार राज्य सभा तक आठवें सोपानों में कार्यरत रहती है। ये सभी समितियों के साथ कार्य किए रहते हैं जिनसे ही मानव मानवत्व सहज अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को प्रमाणित करना सहज है।

प्रभावी सूत्र – पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था, ज्ञानावस्था में ही जागृति एवं दृष्टापद (जागृति) प्रतिष्ठा लोकव्यापीकरण होना प्रमाणित है वर्तमानित है। हर व्यक्ति निरीक्षण परिक्षण पूर्वक स्वयं समझ सकते हैं। समझदारीपूर्ण मानव परंपरा अखण्डता सार्वभौम परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज रूप में होना आवश्यक है।

प्रबोधन – प्रमाण पूर्वक बोध कराना।

– प्रबुद्धता का पूर्ण बोध कराना।

प्रसिद्ध – सर्वजन विदित रहना।

प्रयोग – लक्ष्य पूर्ति के लिए प्रक्रिया संपन्न करना (अध्ययनार्थ)।

– मनुष्य की आवश्यकता के रूप में प्राकृतिक ऐश्वर्यों को परिवर्तित करने के लिए की गई प्रारंभिक प्रक्रिया।

प्रयोग सूत्र – रासायनिक भौतिक रचना विरचना का अध्ययन और अध्ययन क्रम।

– उत्पादन, विनिमय सुलभताकारी प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धति का अध्ययन व अध्ययन क्रम।

प्रचार – वास्तविकताओं को जनसामान्य की जानकारी में लाना।

– प्रमाणित करने का आचरण सर्वविदित करने हेतु सभी क्रियाकलाप।

– प्रखरता के लिए किया गया कायिक, वाचिक, मानसिक आचरण क्रियाकलाप।

प्रदर्शन – दर्शन सहज समझदारी को प्रमाणित करना।

– जागृति पूर्वक प्रमाण विधि से प्रस्तुत होना।

– प्रमाणिकता सहित प्रस्तुतियाँ।

प्रचारक – नैतिकता एवं वास्तविकता को जीने की कला पूर्ण पद्धति से लोकग्राही बनाने वाला।

– जागृति सहज सर्व शुभ प्रमाणों को लाकव्यापी करने के लिए किया गया उपक्रम।

प्रदत्त अधिकार – किसी का दिया हुआ अधिकार भ्रमात्मक मानव समुदाय में। जागृत परम्परा में केवल स्वयंस्फूर्त अधिकार।

प्रलयवादी – परिणाम और विरचनावादी।

प्रश्वसन – श्वास पूर्वक ली गई हवा में से अनावश्यकीय भाग को बाहर निकालना।

प्रत्याकर्षण – निश्चित अच्छी दूरी में परस्परता का होना।

प्रत्याशा – प्रमाणित होने के रूप में आशा।

प्रक्षेपण – दूर–दूर तक पहुँचाया गया शस्त्र–अस्त्र, यान–वाहन।

प्रयोजित – प्रयोजन–सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में समर्पित और भागीदारी।

प्रयासभेद – आवश्यकतानुसार सफलता के लिए किया गया भिन्न–भिन्न प्रक्रियाएं।

प्रतित्वरण – त्वरण पूर्वक किसी ऊँचाई में पहुँचने के उपरान्त त्वरण शून्य होना एवम् उसी बिन्दु से प्रतित्वरण आरंभ होना, जिस दबाव से चला था उतना और स्वमात्रा से अधिक होना प्रमाणित है।

प्रतिभाव – संबंधों में मूल्यों का निर्वाह करने के फलस्वरूप जिसके साथ निर्वाह हुआ रहता है उनसे प्रतिभाव रूप में मूल्य निर्वाह होता है। अनुभवमूलक उद्घाटन।

प्रकटीकरण – प्रकट होने वाली क्रिया, पेट में संतान के प्रकट होने की क्रिया, पेड़ में फल प्रकट होने वाली क्रिया, पौधे में फूल प्रकट होने वाली क्रिया, मानव में व्यवस्था, समृद्धि, समाधान प्रकट होने वाली क्रिया।

प्रतिक्रान्ति – विकास सहज दिशा से विचलित, विपरीत दिशा ह्रास, जागृति के विपरीत दिशाभ्रम।

– ह्रास की ओर गति।

प्रतिक्रान्तिवादी – जागृति के विपरीत भ्रम का प्रचार।

प्रयुक्ति – प्रमाणित होने के क्रम में अर्पण समर्पण।

प्रलोभन – कल्पित मूल्यों में मान्यता आधारित स्वीकृति (भ्रमित स्वीकृति)।

प्रति संचालन – प्रतिष्ठा सहज संचालन, प्रतिष्ठा सहज व्यवस्था में भागीदारी।

– एक संगठित गति द्वारा, दूसरे संगठित यांत्रिकता का संचालन।

प्रयोजनशील – जागृति सहज प्रयोजन सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण।

प्रयोजन सूत्र – प्रमाणिकता, समाधान, समृद्धि, सहअस्तित्व में निर्भ्रम होने की संपूर्ण प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धति।

प्रमाणपूत – जागृति सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन कार्य में पारंगत।

प्रतिनिधि – जागृति को प्रमाणित करने के लिए निर्वाचित आवश्यकता सहित प्रस्तुत परामर्शपूर्वक स्वीकारने वाले के साथ।

प्रतिदर्शन – व्यक्ति अनुभव सहज दर्शन को, समझे हुए को, समझाते हुए प्रमाणित करना।

प्रतिबद्ध – संकल्पित जागृत सहज संकल्पपूर्ण प्रवृत्ति।

प्रवृत्तियाँ – जागृति सहज प्रमाण, समाधान सहित प्रमाण, व्यवस्था में भागीदारी सहित प्रमाण।

प्रख्यात – प्रमाण कार्य परम्परा में ख्यात।

प्रचारतंत्र – प्रमाणित होने के लिए किया गया उपक्रम, लोकमानस का ध्यानाकर्षण।

प्रसन्न मुद्रा – जागृतिपूर्वक प्रमाणित किए जाने की स्वीकृति सहज अभिभूत, प्रमाणित किए जाने का स्वीकृति सहज स्मरण, प्रयोजन सहज अनुभवों से अभिभूत रहना प्रमाण संपन्न मानसिकता मुद्रा भंगिमा में प्रतिबिम्ब होना।

प्रसन्नता – प्राप्ति, स्थिति और उपलब्धि में विश्वास।

प्रत्यक्षीकरण – समझा देना और जिन्हें समझाया उनका प्रमाणित होना।

प्रणाली – विषय वस्तु सहित पठन-पाठन पद्धति।

प्रावधान – प्रमाणित होने की संभावनाओं का विस्तार।

प्राणावस्था – प्राण कोशाओं से रचित रचना संसार।

प्राण – समझदारी के अर्थ में प्रेरणा पाना, प्रमाणित करना। शरीर व्यवस्था के लिए प्राण वायु का होना, नियति विधि से प्राणावस्था का होना।

प्राणी – प्राणवायु के समृद्धि कार्य में स्पंदनशील अणु समूह।

प्राचीन – बहुत पहले से घटित घटनायें स्वीकृत परंपरा।

प्रावधानित – प्रमाणित होने के लिए संपूर्ण संभावना सहित अवकाश अवसर।

प्रादुर्भाव – मानव परंपरा में जागृति पीढ़ी दर पीढ़ी, बीजों में वृक्ष हर भौगोलिक परिस्थिति में।

प्राकृतिक वैभव –चारों अवस्थाओं में संतुलन।

प्राकृतिक भय – चक्रवात, झंझावत, भूकंप, ज्वालामुखी से पीड़ा।

प्राकृतिक संतुलन – वन खनिज संपदा के आधार पर ॠतु संतुलन धरती का संतुलन–मानव में से के लिए सन्तुलन।

प्राकृतिक ऐश्वर्य – पदार्थावस्था उसकी समृद्धि, प्राणावस्था उसकी समृद्धि, जीवावस्था और उसकी समृद्धि सहित सन्तुलन।

प्राण सूत्र – प्राणावस्था के रचना के मूल में प्राणकोशा, प्राणकोशा में प्राणसूत्र, प्राणसूत्र में रचना विधि, यौगिक विधि से अनेक रस–उपरस तैयार होने के पश्चात पुष्टि तत्व और रचना। रचना तत्व तैयार होने के उपरान्त प्राणसूत्र में रचना विधि स्वर्स्फूत बना इसी क्रम में अनेक रचनायें बने।

प्रादुर्भूत – पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था प्रादुर्भूत होना इसी धरती पर प्रमाणित है। जिसका बोध मानव को होता है।

प्राणभय – शरीर के प्रति असुरक्षा का भय।

– शरीर के अस्तित्व के प्रति संदिग्धता और सशंकता।

प्राण वायु – शारीरिक कार्यकलाप के लिए आवश्यकीय वेग, तरंग सहित विरल पदार्थ।

प्राणवायुतरंग – ध्वनियों के दबाव से तरंगायित रहना।

प्राणपद चक्र – पदार्थावस्था से प्राणावस्था की ओर विकसित होना और प्राणावस्था से पदार्थावस्था की ओर ह्रास होने की आवर्तन क्रिया।

प्राणाकार – जल वनस्पति पेड़ पौधे प्राण कोषा शरीर रचना के रूप में पहचान।

प्राणतत्व – सबको प्रेरणा के रूप में प्राप्त वस्तु, व्यापक वस्तु, साम्य ऊर्जा।

प्राणघात – वध, विध्वंस, हिंसा।

प्राणमयकोष – प्रेरणा पाने वाले, प्रकाशित करने वाले अंग।

प्राण पोषक– श्वास लेने में शुद्ध वायु की उपलब्धि।

प्राण शोषक – श्वास लेने में अशुद्ध वायु की समीचीनता।

प्राप्य–योग – परस्परता में सान्निध्य, एक दूसरे को पहचानने की प्रक्रिया, परस्पर प्रेरणा पाना।

प्राप्य – प्राप्त किये रहने के रूप में, प्रयत्न सहित अथवा घटना के रूप में मिलन सान्निध्य।

प्रारब्ध – पहले से प्राप्त मानवीय संस्कार मानवीयतापूर्ण आचरण में प्रवृत्ति।

– जो जितना जान पाता है उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाह पाता है उतना कर नहीं पाता, जो जितना कर पाता है उतना भोग नहीं पाता, और जो भोगने से शेष रह जाता है वह प्रारब्ध है।

प्राप्त वेग – यंत्रों की गति ईंधन सहायतापूर्वक बाहरी शक्तियों के सहारे गति।

प्रारुप – आरंभिक प्रस्तावित चित्रण, प्रारंभिक स्वरुप सूत्र।

प्रोत्साहित – विकास और जागृति की ओर उम्मीद बाँधना, विकास और जागृति की संभावना पर विश्वास दिलाना।

प्रौढ़ – ज्ञान, विवेक, विज्ञान पारंगत होना, व्यवस्था में जीने में पारंगत होना प्रमाणित होना।

प्रौद्योगिकी – प्रयोजनार्थ प्रयोजित होने योग्य वस्तुओं का निर्माण और कार्यक्रम।

प्रौढ़ता – पारंगत परिपक्व प्रयोजनशीलता सहज वैभव और प्रमाणित होना।

प्रतिकारात्मक कर्म – अपराध का निवारण, सुधार के लिए कर्म।

प्रत्यक्ष – अनुभव। प्रमाण सिद्ध।

प्रदीप्त – उज्जवल

प्रमाद – कार्य, व्यवहार और वस्तु में निहित उपादेयता का ज्ञान न होना।

प्रसक्त – किसी वस्तु, विषय व तत्व में तल्लीनता।

प्रसारण – आशा, विचार, इच्छा एवं संकल्प का अर्थपूर्वक तरंगायित होना।

प्रसिद्ध – जिस सत्यता को मनुष्य जान चुका है, जानने के लिए प्रयत्नशील है या बाध्य है।

प्रखर प्रज्ञा – परिष्कृति पूर्ण संचेतना।

पृथकत्व – विघटन और विविधता।

फ

फल – वृक्षों में फल, मानव में कायिक वाचिक मानसिक व कृत कारित अनुमोदित रूप में कर्मफल, किया गया का फल।

– क्रिया–प्रक्रिया प्रणाली का अंतिम परिणाम।

फलश्रुति – फलित होने का ज्ञान और प्रकाशन।

फलन – फलित होने वाला व फलित हो चुका।

फल परिणामपरिपाक – घटित फल और परिणाम के आधार पर पुनः फल के लिए पृष्ठभूमि।

– फलित होने का पूर्व रूप।

ब

बल – प्रभाव क्षेत्र, प्रभाव, प्रभावीकरण प्रेरणा एवं दबाव रूप में।

बलवती – प्रमाणित करने के लिए परिस्थिति का सुगम होना।

बहुमुखी – अनेक कोण व दिशा की ओर प्रतिबिम्ब और पहचान, हर इकाई अनंत कोण संपन्न।

बन्धु – सत्य बोध संपन्न परस्परता परंपरा मानव का संबंध।

बन्धन – भ्रमवादी प्रवृत्ति, कार्य व्यवहार में संवेदनाओं को जीवन मानना।

बहन – बहुमुखी अभ्युदय सहज अनुबंध व प्रमाण, समाधान पूर्ण प्रमाण।

बली – बलवान दयापूर्वक सुखी होता है। दूसरों को जीने

देकर जीना ही दया है।

बहुमूल्य रचना – श्रेष्ठ कला शिल्प कारिता, शिल्प चित्र, साहित्य-कविता सहज रचनायें।

बचपन – शिशु अवस्था, कौमार्यवस्था, युवावस्था तक न्याय समाधान सत्य सहज बहुमखी प्रतिभा संपन्न होने की अवस्था।

बलपोषक – अनुभव बल सहज निरंतरता के अर्थ में किया गया कार्य व्यवहार विचार।

बहिरंग व्यवहार – सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज व्यवस्था में भागीदारी।

बाध्यता – प्रतिबद्धता, स्वीकार किया हुआ प्रवृत्ति, सत्यापित कार्य के लिए प्रवृत्ति।

– विकल्पहीन स्वीकृति।

बिम्ब – इकाई रचना स्वरूप।

– अनेक स्पंदनशील अणुओं का संगठित रूप-आकृति संरचना की सीमा।

बीजानुषंगीय – प्राणावस्था में बीज-वृक्ष परम्परा।

बीजगुणन – बीजों में गुणात्मक परिवर्तन।

बीज रूप – संयोग-योग पाकर प्रकट होने वाला स्वरूप।

बीज पोषक – बीज कवच।

बीज भेद – अनेक प्रकार के बीज वृक्ष प्रमाण स्वरूप अनेक प्रकार के अन्न वनस्पतियाँ।

बीज संस्कार – बीज परंपरा में गुणात्मक परिवर्तन के लिए उपक्रम।

बुनियादी – मूल रूप में।

बुद्ध – जो तीनों कालों में एक सा बोधगम्य हो।

बुद्धिमान – ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्नता और प्रमाण प्रस्तुत करने वाला।

बुनियादी अभिप्सा– मूल रूप में अभ्युदय के लिए अपेक्षा, सर्वतोमुखी समाधान और और प्रमाणित करने का अपेक्षा।

बुद्धि – बोध।

बुद्धि सत्यग्राही – अनुभव सहज सत्य बोध होना एवं ऐसा ही और में होने की अपेक्षा।

बुद्धि सत्ता – अनुभव बोध और उसकी निरंतरता वर्तमान प्रमाण।

बोध – अस्तित्व बोध, सत्यबोध, जीवन बोध, व्यवस्था बोध, अनुभव मूलक अध्ययन विधि से संपन्न होना।

– स्थिति में निर्भ्रमता।

बोधगम्य – समझ में आना, अनुभव होना, प्रमाणित होना।

बौद्धिक जागरण – अनुभव बोध संपन्नता।

बौद्धिक पक्ष – अनुभव प्रमाणों को प्रमाणित करने की योग्यता।

बौद्धिक समाधान – मानवीयतापूर्ण क्षमता, योग्यता, पात्रता।

– व्यवसाय, व्यवहार और विचार में निर्विषमता (निर्विरोधिता)।

बौद्धिक विकास – अध्ययन पूर्वक सत्य बोध होना, अनुभव बोध पूर्वक प्रमाणित होना।

बौद्धिक – सत्य बोध सहज अभिव्यक्ति।

ब्रह्माण्ड – अनेक ग्रह गोलों का संयुक्त कार्यप्रणाली, व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होना, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के प्रगटन क्रम में अथवा प्रगट किया हुआ वैभव रूप में।

ब्रह्मचर्य – संवेदनाओं का नियंत्रण, संज्ञानीयतापूर्वक संवेदनायें नियंत्रित रहने का प्रमाण।

ब्रह्म ज्ञान – व्यापक में संपूर्ण वस्तु सहज सहअस्तित्व ज्ञान अनुभव प्रमाण ज्ञान वैभव।

बह्माणीय किरण – किरणों का प्रसारण, प्रभावशीलन।

ब्रह्मानुभूति – व्यापक वस्तु में ही संपूर्ण एक-एक वस्तुओं का अनुभव सिंधु बिंदु न्याय से संपन्न होना रहना।

बहिरंग साधन – शरीर व शरीर से उत्पन्न अथवा उसके द्वारा उत्पादित वस्तुएं।

बहिर्विरोध – भ्रमित स्थिति में संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में परस्पर विरोध।

भ

भक्ति – भय मुक्ति सहज भजन व सेवा प्रवृत्ति कार्यक्रम में किया गया सेवा।

भविष्यकाल – आगे का समय, संभावित समय, अनुमान होना।

– आगत में होने वाली क्रियायें।

भाव – मौलिकता, मूल्य।

भजन – भ्रम-भय मुक्ति के लिए किया गया उपक्रम।

भक्त – भय मुक्त, भ्रम मुक्त मानव, जागृत मानव-अखण्डता सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या रूपी मानव।

भव्यता – ध्यानाकर्षण व अनुकरण योग्य प्रस्तुति।

भावभेद – विविध सम्बन्धों के साथ मौलिकता में विविधता संबंधों के साथ भाव पूर्वक जीना।

भाषण – सत्य भास, आभास, प्रतीति सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

भारबंधन – अणु रूप में परमाणुओं से रचित रचना, ॠणात्मक धनात्मक आकर्षण बल का योगफल।

भाई – भाग्योदय, सर्वतोमुखी समाधान, अभ्युदय, जागृति सहज प्रमाण योग्य संबंध।

भावक्रिया – जागृतिपूर्वक मौलिक अभिव्यक्ति, चारों अवस्थाओं का अपना-अपना मौलिकता।

भावना – संबंध व मूल्यों सहित प्रस्तुति।

भ्रान्ताभ्रान्त – जागृति के अनंतर भ्रम का समीक्षा, सही समझ में आने के बाद गलतियों की समीक्षा, मानवीयतापूर्ण वैभव।

भार – ॠणाकर्षण व धनाकर्षण का योगफल।

भाग्य – प्राप्त संपदा समाधान समृद्धि भाग विभाग पूर्वक प्रमाणित करने योग्य।

भाषा – सत्य भास होने के लिए शब्द, शब्द समूह।

– किसी क्रिया के लिए भास, आभास एवं प्रतीति को स्थापित करने हेतु प्रयुक्त सार्थक शब्द।

भावी – फल परिणाम घटनायें होने वाला।

भागीदारी – कर्त्तव्य और दायित्व का वहन-निर्वहन।

भीगा – भीगने वाले और भिगाने वाले का योगफल; व्यापक सत्ता में संपृक्त अस्तित्व में जड़-चैतन्य।

भूकम्प – धरती का करवट लेना, डकार लेना, हिलना।

भूतकाल – बीता हुआ समय में घटित घटना।

भूगोल – सर्वेक्षण, निरीक्षण, परीक्षण पूर्वक मानचित्र सहित रचना ज्ञान।

– धरती की रचना संपूर्ण।

भूमिका – घटना का पृष्ठभूमि, कार्य की पृष्ठ भूमि, सोचने की पृष्ठभूमि, समझने की पृष्ठभूमि अथवा आधार।

भोगोन्माद – भोग प्रसंग में व्यस्त रहना, विवश रहना।

भंगिमा – मूल्यों में अभिभूत मुद्रा, प्रसन्न मुद्रा, भंगिमा अंग प्रत्यंग, उत्साहित मुद्रा।

भंगुरात्मक – परिवर्तनात्मक।

भौगोलिकता – धरती का बनावट जल वायु, वन खनिज संपदा का संयुक्त रूप।

भौतिक क्रिया – आकार आयतन घन प्रकार रचना।

भौतिक समृद्धि – उत्पादन अधिक, उपभोग कम।

भ्रूण – गर्भाशय में बीजारोपण।

भ्रान्तिपद चक्र– जीवावस्था से भ्रान्त मानव की ओर विकसित होना और भ्रान्त मानव से जीवावस्था की ओर ह्रास होने की आवर्तन क्रिया।

भू-स्थानीय – भूमि अथवा भू-मंडल के वातावरण की सीमा में गतित।

भूतकाल – बीता हुआ वर्तमान।

भोग लक्षित कर्म – चार विषयोपलब्धि के लिए की गई प्रक्रिया।

म

मणि – किरण ग्राही एवं किरण स्रावी वस्तुयें।

मन – जीवन में चयन आस्वादन क्रिया। चैतन्य परमाणु में अथवा जीवन परमाणु में निहित चतुर्थ परिवेशीय अंश की क्रियाशीलता।

मनन – पूर्वानुक्रम को स्वीकार करना। मन वृत्ति का, वृत्ति चित्त का, चित्त बुद्धि का, बुद्धि आत्मा का, आत्मा अस्तित्व सहज संकेतों को स्वीकार करना।

मद – असत्यता के प्रति मान्यता की पराकाष्ठा (उन्माद)।

मल – पर-धन, पर-नारी / पर-पुरुष एवं पर-पीड़ात्मक कार्य व्यवहार एवं विचारों का परिणाम (त्याज्य)।

मति – मान्य (विधि विहित) कर्म, विचार, शास्त्र।

महिमा – प्रभाव क्षेत्र।

महत्वाकांक्षा – दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन वस्तुओं को पाने व उपयोग करने की प्रवृत्ति, अपेक्षा, चेष्टा, प्राप्ति।

मरणशील – विरचनाशील।

महंत – महिमा संपन्न व्यक्ति, प्रमाणिकतापूर्ण जागृति सहित

प्रमाण प्रस्तुत करने वाला।

ममता – पोषण प्रधान संरक्षण क्रिया।

– अपनत्व की पराकाष्ठा पूर्वक संरक्षण पोषण कार्य।

– स्वयं की प्रतिरूपता की स्वीकृति, उसकी निरंतरता।

ममत्व – मानवत्व सहज विपुलीकरण मानसिकता, मानवीयता का लोकव्यापीकरण मानसिक।

महत्ता – मौलिकता सहज निरंतरता।

– पूर्णता।

महामांगल्य – अस्तित्व में अनुभूति, भ्रम मुक्ति।

महाभाव – परम सत्य में अनुभव प्रमाण।

महावकाश – व्यापक वस्तु।

महाशक्ति – साम्य अस्तित्व।

महाकरण – व्यापक वस्तु।

– सम्पूर्ण अस्तित्व जिस सत्ता (ऊर्जा) में नित्य वर्तमान और संरक्षित है।

– जिसका अस्तित्व सापेक्ष न हो। यही निरपेक्ष शक्ति है।

मनस्वी – जागृत जीवन सहज मानसिकता सहज प्रमाण।

मनोनीत – स्वविवेक से निर्णय पूर्वक जिम्मेदारियों को सौंपने की क्रिया।

मर्म ज्ञान – पूर्णतया स्पष्ट ज्ञान।

मर्यादा – जागृत मानव परंपरा विधि से प्रमाणित रहना।

– मर्म ज्ञान सहित किया गया क्रिया व्यवहार।

मंतव्य – अपेक्षायें, मानसिकता।

मन्द इच्छा – आवश्यकीय उपलब्धि के प्रति प्रयास शिथिलता।

मधुरिम – बोधगम्य अवगत होने की विधि।

महिमा मण्डित – जागृतिपूर्वक अभिव्यक्ति संप्रेषणा में पारंगत

मण्डल परिवार सभा – दस क्षेत्र परिवार सभा में, से, के लिए मण्डल परिवार के लिए निर्वाचित दस सदस्यों का गठन– पाँच समितियों के साथ कार्यक्रम।

मण्डल समूह परिवार सभा – दस मण्डल सभा में से निर्वाचित दस सदस्यों का गठन पाँच समितियों के साथ कार्यक्रम।

मनः स्वस्थता – जागृति, अनुभव मूलक मानसिकता, सर्वतोमुखी समाधान सहज अभिव्यक्ति।

मनःस्वस्थता के आशावादी – सुख, शाति, संतोष एवं आनंद की अपेक्षा मानव में है, जिसका प्रत्यक्ष रूप बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है।

मनाकृति – प्राकृतिक वस्तुओं में श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य कला मूल्य को प्रदत्त करना।

– योग वियोग संयोग से प्राप्त जानकारी सहित पुनः कल्पना एवं प्रयास।

मनरसग्राही – मन में मूल्यों का रसास्वादन।

महत् तत्व – शाश्वत रूप में अस्तित्व।

मनाश्रित – शरीर क्रियाकलाप।

मध्यांश – परमाणु के मध्य बिंदु में स्थित अंश। जीवन में आत्मा।

मध्यस्थ – सम विषम का नियंत्रण। सम विषम से अप्रभावित।

– अस्तित्व में संपूर्ण आवेशों को सामान्य बनाने और आवेशों से निष्प्रभावित रहने का पूर्ण वैभव।

मध्यस्थ सत्ता – प्रत्येक इकाई के सभी ओर दिखाई पड़ने वाली ऊर्जा।

– जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति में संपूर्ण आवेशों से निष्प्रभावित रहने वाली ऊर्जा।

– एक दूसरे के बीच दिखाई पड़ने वाली ऊर्जा।

– व्यापक वस्तु।

मध्यस्थ जीवन – दृष्टा पद प्रतिष्ठा संपन्न जागृत जीवन।

मध्यस्थ ऊर्जा – व्यापक वस्तु।

मध्यस्थ क्रिया – जीवन में अविभाज्य रूप में कार्यरत आत्मा, मध्यांश।

– स्वभाव गति सम्पन्न में स्थिति एवं गति।

मध्यस्थ बल – प्रत्येक परमाणु में मध्यांश के रूप में कार्यरत गठन सूत्र और परस्पर अंशों की निश्चित दूरी को बनाए रखने में नित्य सहायक क्रिया।

– सम विषम आवेशों को स्वभाव गति में प्रतिष्ठित करने का बल।

मध्यस्थ शक्ति – प्रत्येक इकाई में घटना के रूप में प्राप्त सम-विषम आवेशों को सामान्य बनाने के लिए स्वयं स्फूर्त कार्य गति।

नोट – प्रत्येक इकाई में स्थिति में बल, व गति में शक्ति अविभाज्य है।

मध्यस्थ विचार – अनुभव मूलक विचार।

मध्यस्थ निर्णय – समाधानपूर्ण निर्णय, न्यायपूर्ण निर्णय।

मध्यस्थ व्यवहार – न्याय जागृतिपूर्ण व्यवहार, समाधानपूर्वक व्यवहार।

मध्यस्थ दर्शन – सह अस्तित्व में मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ जीवन का अध्ययन एवं सूत्र व्याख्या।

– (तात्विक रूप में) मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति, मध्यस्थ जीवन का सूत्र व व्याख्या। (अ) मध्यस्थ:-अस्तित्व में संपूर्ण आवेशों को सामान्य बनाने और आवेशों से निष्प्रभावित रहने का पूर्ण वैभव। (ब) दर्शन:-दर्शक दृष्टि के द्वारा स्वीकार व प्रतिबद्धता पूर्वक, दृश्य के साथ किया गया परावर्तन व प्रत्यावर्तन क्रिया।

मनोमय कोष – चयन या आस्वादन करने वाले अंग।

मनोबल – निश्चित मानसिकता समाधान संपन्न मानसिकता।

– केन्द्रीयकृत मन:स्थिति।

मनोवेग – जागृत मानसिकता का गतिविधि।

मनोनुकूल – जागृतिपूर्ण विधि विधान प्रमाण परंपरा।

मनुष्येतर प्रकृति – जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था।

मनुष्य की स्वभाव गति – मानवीयतापूर्ण दृष्टि, स्वभाव एवं विषय में प्रवृत्त तथा निष्ठान्वित होना।

मांगल्य – जीवन मंगल, उदय मंगल, समाधान मंगल, जागृति मंगल, अनुभव मंगल।

मात्सर्य – दूसरे के ह्रास एवं पतन की उत्कट कामना।

मात्रात्मक – नाप तौल से पहचान।

मानवीयतापूर्ण व्यवहार – अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण।

मानव राज्यनीति – तन मन धन की सुरक्षा।

मानव धर्म नीति – तन मन धन का सदुपयोग। अभ्युदयकारी कार्यक्रम।

मानव सम्पर्क – संबंध के रूप में पहचानने की विधि।

मानव में निहित अमानवीयता का भय – द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, भय, छल, कपट, दम्भ, पाखण्ड, समझ भेद, दण्डभय अमानव रूपी पशु मानव राक्षस मानव कृत्यों का परिणाम।

मानवीय दृष्टि – न्याय, धर्म, सत्य।

मानवीय विषय – पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा।

मानवीय स्वभाव – धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा।

मानव कृत वातावरण – मनाकार को साकार करने, मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने मानव सहित मानवेत्तर प्रकृति के साथ किए गये क्रियाकलाप।

मानव भाषा सूत्र – कारण, गुण, गणितात्मक भाषापूर्वक यर्थाथता, वास्तविकता, सत्यता सहज वस्तुओं का बोध होना और अनुभव में होना।

मानव वाद – मानवीयता पूर्ण व्यवहार व व्यवस्था संबंधी चर्चा संवाद।

मानव कर्म दर्शन – मानव में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित, जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति में किया गया कार्य व्यवहार व्यवस्था सहज भागीदारी का अध्ययन।

मानव व्यवहार दर्शन – मानवत्व सहित व्यवहार का अध्ययन, मानवीय व्यवहार सूत्र व्याख्या सहज अध्ययन, अखण्डता सार्वभौमता का अध्ययन।

मानवीय संस्कार – जागृति सहज प्रमाण, दृष्टा पद प्रतिष्ठा।

मानवत्व – परिवार व्यवस्था और सार्वभौम रूपी समग्र व्यवस्था में भागीदारी, मानवीयता पूर्ण आचरण मूल्य चरित्र नैतिकता प्रमाण, अस्तित्व दर्शन ज्ञान जीवन ज्ञान मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान विवेक विज्ञान सम्मत कार्य व्यवहार प्रमाण।

मार्मिक प्रतिबद्धता – मौलिकता सहित निष्ठा प्रमाणित होने के लिए संकल्प पूर्ण प्रवृत्ति प्रमाण।

मानवीय संस्कृति – मानवत्व सहित आचरण व्यवस्था में भागीदारी।

मानव सहज आचार संहिता – सर्वमानव में सुख शांतिपूर्वक जीने की आशा स्पष्ट है जिसके लिए मूल्य चरित्र नैतिकता सहित अखण्डता सहज समाज सार्वभौमता सहज व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में स्पष्ट है। सार्वभौमता सहज प्रमाण परंपरा में हर परिवार समाधान समृद्धिपूर्वक जीना।

मानवीयता पूर्ण परंपरा – समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज जागृतिपूर्ण परंपरा है।

मानव कुल – मानव परम्परा।

मानव लक्ष्य – समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज प्रमाण।

मानव संचेतना – मन: स्वस्थता को प्रमाणित करने का ज्ञान विवेक विज्ञान।

मानवकृत – मनाकार को साकार करने के स्वरुप में।

मनाकार – चयन और आस्वादन के अनुरूप-प्रतिरूप प्रदान करने की क्रिया।

– कल्पनाशीलता को आकार प्रदान करने की क्रिया।

मनाकार को साकार – कुशलता, निपुणता व पांडित्य सहित प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य एवं सुन्दरता मूल्य को स्थापित करने के रूप में, स्थापित संबंधों में निहित स्थापित मूल्यों का अनुभवपूर्वक शिष्टता को प्रकाशित करने में है।

मानवाभिलाषा – अभ्युदय अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान रूप में प्रमाणित होना।

मानवीयता – मूल्य चरित्र नैतिकता का संयुक्त प्रमाण परंपरा।

मानव – मनाकार को साकार करने वाला व मन: स्वस्थता का आशावादी एवं प्रमाणित करने वाला।

– **बौद्धिक परिभाषा** – मनाकार को साकार करने वाला, मन:स्वस्थता का आशावादी एवं प्रमाणित करने वाला।

– **व्यवहारिक परिभाषा** – जड़-चैतन्य का संयुक्त साकार रूप।

– **तात्विक परिभाषा** – अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक और भौतिक रचना, विरचना का दृष्टा।

मानव सहज– जागृति पूर्ण।

मानव अभ्युदय – सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न परम्परा अभ्युदय।

मातृत्व – ममता अनन्यता वात्सल्य पूर्वक पोषण संरक्षण प्रमाण।

मापदण्ड – निश्चित मात्रा को पहचानने का नाप तौल।

मार्ग – निश्चित दिशा जागृति सहज दिशा।

– प्रगति एवं गुणात्मक परिवर्तन क्रम।

मार्गदर्शक – प्रेरणा पूर्वक जागृति सहज दिशा स्पष्ट करने वाला।

मार्गदर्शन – प्रेरणा स्त्रोत स्पष्टीकरण करने वाला।

मारक – प्राण शोषक।

मात्रा – रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का संयुक्त स्वरूप।

– मात्रा = क्रिया = श्रम + गति + परिणाम।

मान घात – मूल्य हनन, मूल्यों की अवहेलना।

मान-भय – अपयश की अस्वीकृति।

माता – ममता प्रेम वात्सल्य पोषण सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

मान्यता – अनन्य और अनन्यतापूर्वक स्वीकृति।

माध्यम – अधिक शक्ति और बल, कम शक्ति और बल के माध्यम से प्रमाणित होना।

मानसिक कर्म – आशा, विचार, इच्छा, संकल्प।

मानना – बिना जाने सुख का स्रोत मानना, मान्यता के आधार

पर वाद विवाद पूर्वक हर वाद को प्रस्तुत करना।

मानसिकता – संस्कारों की (स्वीकृतियों की) प्रकाशन क्रिया।

मिश्र कर्म – मनुष्य के लिए आवश्यकीय एवं अनावश्यकीय का क्रियान्वयन।

मिश्रण – तात्विक वस्तुयें अपने-अपने स्वरूप में आचरण में रहते हुए सहवास विधि से होना।

मिलन – परस्पर गुणात्मक विकास का अथवा प्रखरता का स्वीकृति और संयुक्त प्रमाण।

मित्र – अनन्यतापूर्वक अभ्युदय समाधान समृद्धि में, से, के लिए परस्पर पूरक उपयोगी होना रहना।

मीमांसा – सूत्र व्याख्या पूर्वक किया गया सत्य सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

मीठा – निश्चित रसायन द्रव्य और जिव्हा तंत्र (ज्ञानवाही क्रियावाही) के योग फल में स्वीकृति।

मुग्धता – अज्ञानवश अधिमूल्यन क्रिया।

मुक्ति – भयमुक्ति, बंधन मुक्ति, भ्रम मुक्ति, वासना, विषय एवं ऐषणा से मुक्ति।

मुक्त – भूत और भविष्य की पीड़ा न होने एवं वर्तमान में विरोध न होना।

मुखरण – समझा हुआ को समझा पाना, किया हुआ को करा पाना, सीखे हुए को सीखा पाना जागृति सहज प्रमाण सहित व्यक्त होना संप्रेषित होना।

मूहर्त – घटना समय।

मुख्य राज्य परिवार सभा – दस मण्डल समूह परिवार सभा में से निर्वाचित, दस जन प्रतिनिधि का गठन व्यवस्था सहज कार्यकलाप, पाँच समितियों के साथ व्यवस्था सहज कार्यक्रम।

मूल्य – जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, उपयोगिता मूल्य व कला मूल्य का प्रमाण परंपरा।

– प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है।

मूल्यांकन – विश्वास पूर्वक परस्पर मूल्यों का पहचान प्रयोजनों के अर्थ में आवश्यकता सार्थकता।

– जागृति क्रम में मूल्यों को पहचानने की क्रिया।

मूल्य प्रधान – मानव संबंध सार्वभौम व्यवस्था संबंध परम्परा ही मूल्य प्रधान परम्परा है।

मूल्यांकनशील – हर मानव दूसरे का मूल्यांकन करने का क्रम।

मूलचेष्टा – सत्ता में सम्पृक्तता ऊर्जा संपन्नता ज्ञान संपन्नता।

– वातावरण के दबाव से मुक्त परमाणु की क्रिया।

मूल पूंजी – तन मन का संयुक्त रुप में निपुणता कुशलता, पांडित्य सहित नियोजित होने वाला श्रम।

मुख्य – मूल रूप में होना, स्पष्ट रहना प्रमाणित रहना।

मेरा – मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि।

मैं – चैतन्य इकाई का मध्यांश (आत्मा)।

मोह – मुग्धता, (लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद)।

मेधावी – अनुभव मूलक प्रमाण बोध सम्पन्न जीवन और प्रमाण परंपरा।

मोक्ष – मल, आवरण, विक्षेप से मुक्ति।

मौन – समाधान संपन्नता, समस्याओं से मुक्ति।

मौलिकता – स्थिति में धर्म, गति में स्वभाव संपन्न क्रिया इकाईत्व।

– निश्चित मूल्य संपन्नता।

मौलिक अंतर– चार अवस्था भेद से अथवा चार पदभेद से।

मौलिक अधिकार – मानवीयता पूर्ण आचरण व्यवहार कार्य, व्यवस्था में भागीदारी सहज विधि से, नियति क्रमानुगत प्रमाण परंपरा विधि।

– मानवीयता में स्वत्व, स्वतंत्रता एवं अधिकार।

मौलिक विधान – मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान (पूर्णता के अर्थ में विधान)।

मौलिक स्वरूप – सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी जागृति सहित प्रमाण परंपरा।

मौलिक पद्धति – तीस मूल्यों की प्रकाशनकारी पद्धति जो चार जीवन मूल्य छः मानव मूल्य, नौ स्थापित मूल्य, नौ शिष्ट मूल्य और दो वस्तु मूल्य के रूप में है।

मंत्रणा – एक दूसरे के बीच प्रेरणा पाने, प्रेरणा देने का क्रियाकलाप।

मंगल कामना – धरती स्वर्ग होने, मानव देवता होने, मानव धर्म सफल होने, सदा-सदा सर्वशुभ होने का अपेक्षा सहज अभिव्यक्ति।

मृदु – स्पेशन्द्रिय स्वीकृति अनुकूल।

मृत्यु – चैतन्य क्रिया अर्थात् आशा विचार इच्छा संकल्प के प्रसारण और ग्रहण क्षमता का शरीर में न होना।

मनोविज्ञान – मानव मानसिक प्रक्रिया को सत्य में भास, आभास, प्रतीति और अनुभूति क्रम में पहचानना।

– मानव मानस को मनाकार को साकार करने वाले मनः स्वस्थता के आशावादी रूप में पहचानना।

– मानव मानस को स्वराज्य और स्वतंत्रता के अर्थ में कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता को पहचानना।

– प्रत्येक मानव में (परिष्कृति पूर्ण) संचेतना को जानने मानने पहचानने और निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित करना।

– प्रत्येक मानव में जीवन वैभव को चयन व आस्वादन, तुलन और विश्लेषण, चित्रण व चिंतन, बोध व संकल्प और अनुभव एवं प्रामाणिकता के रूप में पहचानना।

– मानव मानसिकता में मानवत्व को, मानवीय दृष्टि यथा न्याय, धर्म, (समाधान) सत्य, मानवीय विषय यथा पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा एवं मानवीय स्वभाव – यथा धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा को व्यवस्था के रूप में पहिचानना।

– मानव में निषेध को अमानवीय दृष्टि यथा प्रिय, हित, लाभ, अमानवीय विषय-आहार, निद्रा, भय, मैथुन, अमानवीय स्वभाव यथा हीनता, दीनता क्रूरता को

अव्यवस्था के रूप में पहचानना।

– जीवन जागृति संपन्न मानसिकता का अध्ययन।

मंगल कार्यक्रम – सर्वशुभ कार्यक्रम, सार्वभौम व्यवस्था सहज भागीदारी की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा एवं प्रकाशन, अस्तित्व में जागृति सहज व्यवस्था मूलक शिक्षा, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और मानवीयतापूर्ण आचरण तथा जीने की कला।

मानव धर्म – सर्वतोमुखी समाधान की सम्प्रेषणा व प्रकाशन।

– सुख, शांति, संतोष एवं आनंद।

मानव-परंपरा – मानवीय शिक्षा, संस्कार, राज्य व्यवस्था व संविधान का अविभाज्य वर्तमान।

मानव-संस्कार – तात्विक रूप में – जानना, मानना, पहचानना निर्वाह करना।

– व्यवहार रूप में – मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, व्यवसाय, विनिमय का बोध सहित प्रकाशन संप्रेषणा में निष्ठा सम्मत परंपरा।

मानव का सार्वभौम लक्ष्य – प्रामाणिकता, समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व।

मानव की शरण – व्यवस्था = मानवीयता = विश्वसन = आश्वासन होने योग्य पद्धति, प्रणाली, नीति।

मानव का शासन – मानवत्व के प्रति जागृति।

मानव-सहज – मानव के सार्वभौम लक्ष्य रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में प्रामाणिकता के अर्थ में

किया गया सम्पूर्ण क्रिया-प्रक्रिया प्रणाली व पद्धति।

– मानव का लक्ष्य = जीवन जागृति।

– श्रम से मुक्ति।

मानव-पद – ज्ञानावस्था (जानने-मानने, पहचानने, निर्वाह करने का क्रियाकलाप)।

मानवत्व – मानवीय दृष्टि, मानवीय विषय, वृत्ति और निवृत्ति, मानवीय स्वभाव की अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन।

– मनुष्य अस्तित्व में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य तथा वस्तु मूल्य को जानने-मानने, पहचानने-निर्वाह करने और सम्प्रेषित, प्रकाशित, अभिव्यक्त करने की क्रिया।

– अस्तित्व में मानव अनुभव मूलक पद्धति से विचार शैली और जीने की कला।

– मनुष्य व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी, विचार में समाधानित, अनुभव में प्रामाणिकता को अभिव्यक्त, संप्रेषित, प्रकाशित करने की क्रिया।

मानवत्व पूर्ण संस्कृति – स्व-धन, स्व-नारी / स्व-पुरुष व दयापूर्ण कार्य रूपी आचरण, विचार, विन्यास।

मानवत्व पूर्ण सभ्यता – मानव सम्बन्धों व नैसर्गिक संबंधों और उनमें निहित मूल्यों की पहचान के लिए निर्वाह क्रियाकलाप।

मानवत्व पूर्ण मानव परंपरा – मानवीयता पूर्ण शिक्षा संस्कार, राज्य

व्यवस्था, संविधान में सामरस्यता पूर्ण अविभाज्य वर्तमान।

- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान क्रिया।
- दृष्टा (मानव) दृश्य (मानव सहित सम्पूर्ण अस्तित्व) दर्शन (जागृति पूर्ण अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला)।

मानवीयता - मानवीय दृष्टि (न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य) मानवीय स्वभाव (धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा) मानवीय विषय (पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा)।

- स्व-धन, स्व-नारी / स्व-पुरुष और दयापूर्ण कार्यों, मानव संबंधों और नैसर्गिक सम्बन्धों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह रूपी व्यवहार, क्रिया व आचरण।
- आवश्यकता से अधिक उत्पादन और उसका श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय क्रिया।
- स्वराज्य और स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन।

मानवीय प्रवृत्ति - लक्ष्य मूलक, मूल्य मूलक मानसिकता।

मानवीय प्रवर्तन -मूल्य व मूल्यांकन।

मानवीय दृष्टि - न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य की निर्णयात्मक क्षमता।

- न्याय, धर्म, सत्य दृष्टि की क्रियाशीलता।

मानवीय संचेतना- जाने हुए को मानना, माने हुए को जानना।

- पहचाने हुए का निर्वाह करना। निर्वाह किए हुए को पहचानना।

मानवीय शिक्षा - अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति रासायनिक एवं भौतिक रचना, विरचना का अध्ययन।

- अवधारणा सहित बौद्धिक विशिष्टता सहज सहअस्तित्व पूर्ण, विश्व दृष्टिकोण की क्रियाशीलता।
- सर्वतोमुखी समाधान और प्रामाणिकता का वर्तमान और उसकी निरंतरता।

मानवीय आचरण - स्वधन, स्वनारी / स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार विन्यास। सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, तन-मन-धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग।

- मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया सम्पूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास।

मानवीय राष्ट्र - मानवीयता पूर्ण आचार संहिता रूपी संविधान का प्रभाव क्षेत्र और उसकी विशालता।

मानवीयता पूर्ण पद्धति - प्रामाणिकता और समाधान पूर्ण अभिव्यक्ति, समाधान और न्यायपूर्ण सम्प्रेषणा, न्याय और नियम पूर्ण प्रकाशन।

- मानवीय स्वभाव, दृष्टि, विषयों में वृत्ति, नियम-त्रय युक्त संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था की परंपरा।

मानवीयता पूर्ण प्रणाली - मूल्य मूलक, लक्ष्य मूलक क्रियाकलाप।

मानवीयता पूर्ण नीति – तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक क्रियाकलाप।

मानना – अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति रासायनिक-भौतिक रचना व विरचना को जानने के उपरान्त स्वीकार करने वाली जीवन गत क्रिया।

– चरितार्थ करना, आचरण करना।

मूल्य मूलक प्रवर्तन – स्वभाव धर्म मूलक पद्धति, प्रणाली नीति सहज कार्य, व्यवहार, विन्यास।

मेधा – जागृति सहज सत्य वैभव का धारक-वाहक क्रिया।

– सत्य बोध होने की क्रिया।

मेधस – चैतन्य क्रिया की संकेत ग्रहण करने योग्य क्षमता, योग्यता, पात्रता सहित सप्राण अंग।

– शरीर रचना में से वह रचना भाग जिस पर जीवन-शक्तियों का संकेत प्रसारित होता है। फलस्वरूप शरीर में जीवन्तता प्रमाणित होती है।

य

यथाविधि – परंपरागत विधि, परिष्कृत विधि, सार्थक विधि, यथार्थता पूर्ण विधि।

यतीत्व – यत्नपूर्वक अध्ययन करना, भ्रम से मुक्ति पाना, सुखी होना अभ्युदय सहज प्रमाण संपन्न रहना।

– यत्नपूर्वक तरने के लिए निर्भ्रमता सहित की गई प्रक्रिया एवम् प्रयास।

यशस्वी – सफलताओं का लोकव्यापीकरण।

यश – जागृत मानव का दूर-दूर तक पहचान।

यश बल – सार्थकता सहज प्रमाण संपन्न व्यक्ति की पहचान।

यथार्थ – जिसमें जैसा अर्थ है।

यथार्थता – जिसमें जो अर्थ वर्तमान है।

यथार्थ स्त्रोत – अकृत्रिमतापूर्वक आडम्बरहीन, अभिव्यक्ति।

– अस्तित्व में प्रत्येक एक रूप गुण स्वभाव धर्म का स्त्रोत सह अस्तित्व अनुभव में, से, के लिए स्त्रोत।

यात्रा – योजना सहित गति।

युद्ध – समुदाय एवं वर्ग संघर्ष की उत्कट कटुता।

युग – जागृति क्रम में जीव चेतनापूर्वक जंगलयुग से नागरिक तक समुदाय चेतना गतिविधि से मान्यताओं के आधार पर परंपरा के रूप में जिया हुआ समय और जागृतिपूर्वक जीने का समझ।

युवावस्था – समझदार होने का सत्यापन।

योजना – सर्वशुभ फल परिणाम के लिए किए जाने वाले कार्यों का व्यवहार निश्चयन और प्रक्रिया का निश्चयन।

योग्य – अर्हता संपन्न, पात्रता संपन्न प्रमाण।

योग्यता – अभिव्यक्ति संप्रेषणा, प्रकाशन सहज प्रमाण संपन्नता।

योग – मिलन, ऐक्य अनुभव एवं सहवासात्मक मिलन।

योग फल – परस्परता या संयुक्त रूप में पाए जाने वाले गुणात्मक परिवर्तन।

योग लक्षित कर्म – पूर्ण विकास के क्रम में, से, के लिए की गई

प्रक्रिया।

योजित – क्रियान्वयन के पहले निश्चित।

योगी – मिलन के अनन्तर गुणात्मक परिवर्तन का प्रमाण संपन्न व्यक्ति जागृत मानव और प्रमाण सहित होना रहना।

योगदान – जागृति के लिए प्रस्तुत प्रावधानित निश्चित योजना और प्रमाण।

योगफल – योग संयोग कार्य व्यवहार का फल परिणाम।

योगशक्ति – योग संयोग से परिवर्तित बल और कार्यक्रम।

योगानुभूति – प्राप्त योग में अनुभव, सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज सहअस्तित्व में अनुभव, व्यापक वस्तु में अनुभव, प्रत्येक एक-एक व्यापक वस्तु में नित्य वर्तमान होने में से के लिए अनुस्यूत प्रमाण।

योग-संयोग विधि – चाह कर न चाहकर मिलन होते रहना नियति विधि से होने के आधार पर।

यौगिक – भिन्न-भिन्न कम से कम दो प्रजाति की वस्तुऐं मिलकर अपने-अपने आचरणों को त्यागकर दोनों से भिन्न प्रकार के आचरण को प्रमाणित करना।

यंत्र – यत्न पूर्वक मनुष्य द्वारा चलने वाला।

यंत्रणा – समस्या से पीड़ित होना।

यांत्रिक – गठनपूर्वक चलना-चलाना।

यांत्रिकता – संवेदनशीलता में से के लिए जीना (सभी यंत्र है)।

र

राष्ट्र – धरती पर प्रकट चारों अवस्थाएं, वैभव वर्तमान परंपरा व सर्वशुभ जागृत मानव परंपरा "राजयतेति, वर्तयतेति, ईक्ष्यतेति, नित्यतेति सा राष्ट्र"। अखण्ड राष्ट्र के रूप में यह धरती है। वर्तमान में वैभववादी, वैभवकारी दृष्टि।

– मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान का प्रभाव क्षेत्र व सीमा।

– मानव, मानव संस्कृति एवं सभ्यता की निरंतरता सहित, उसके संरक्षण, संवर्धन योग्य विधि व्यवस्था की अक्षुण्णता ही राष्ट्र हैं।

राष्ट्र वैभव – चारों अवस्थाओं का संयुक्त वैभव, अखण्डता सहज धरती, अखण्ड समाज के रूप में जागृत मानव परंपरा।

राष्ट्र वर्तमान – चारों अवस्थाओं का संतुलन वर्तमान, सार्वभौम व्यवस्था शुभ के रूप में वैभव वर्तमान परंपरा है।

राष्ट्र परंपरा – जागृत पूर्ण सर्वशुभकारी मानव परंपरा में अखण्डता सार्वभौमता सहज प्रमाण, दृष्टा पद प्रतिष्ठा संपन्न जागृत मानव परंपरा ही अखण्ड राष्ट्र समाज को समझा रहता है।

राष्ट्रीयता – अखण्ड समाज सहअस्तित्व में जागृति पूर्वक मानव सूत्र व्याख्या।

– मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, विचार का वर्तमान और उसकी परंपरा।

राष्ट्रीय चरित्र - सार्वभौम व्यवस्था सूत्र-व्याख्या, मानवत्व सहित होना ही दृष्टा पद, व्याख्या दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी।

- वर्ग विहीनता निपुणता, कुशलता, पांडित्य पूर्णता।

राष्ट्रीय आचरण - मानवीयता पूर्ण आचरण = संबंधों में मूल्यों का निर्वाह उभय तृप्ति-मूल्य चरित्र नैतिकता।

राष्ट्रीय दर्शन- मध्यस्थ दर्शन।

राष्ट्रीय विचार - सहअस्तित्ववाद।

राष्ट्रीय अखण्डता - वर्ग विहीनता, निपुणता कुशलता पाण्डित्य पूर्णता।

राष्ट्रीय शास्त्र - आवर्तनशील अर्थ शास्त्र, व्यवहारवादी समाज शास्त्र मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान।

राष्ट्रीय वैभव परंपरा - संविधान आचरण व्यवस्था व शिक्षा संस्कार (समझदारी) में पूरकता सामरस्यता सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा।

राष्ट्र कुल - जागृत मानव कुल परंपरा।

राष्ट्र भक्ति - वर्तमान व स्वयं में विश्वास, अभय।

राष्ट्रीय चिंतन - अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन।

राष्ट्र धर्म - सहअस्तित्व वर्तमान में विश्वास, समृद्धि, समाधान सर्वशुभ व्यवस्था सहज सार्वभौमता।

राष्ट्र सेवा - सहअस्तित्व में पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण।

राज्यनीति - तन मन धन की सुरक्षा, सदुपयोग सहज परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज गति।

राष्ट्रीय ज्ञान - सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, अस्तित्व नित्य वर्तमान स्थिति व जागृति सहज निश्चयता सहित ज्ञान।

राष्ट्रीय लक्ष्य- चारों अवस्था व पद सहज उपयोगिता पूरकता विधि से संतुलन प्रमाण परंपरा।

राष्ट्रीय कार्यक्रम - मानवीयतापूर्ण आचरण संविधान शिक्षा संस्कार और व्यवस्था सहज सामरस्यता।

राष्ट्रीय योजना - चारों अवस्था में संतुलनवादी कार्य।

राज्य तंत्र - अभ्युदयकारी व्यवस्था व्यवहार कार्य प्रवृत्ति प्रभाव मानव मूल्य सम्पन्नता प्रोत्साहन।

राज्य सभा - दस सोपानीय सभायें।

राज्य परिवार - दस सोपानीय परिवार।

राज्य मर्यादा- स्वानुशासन+ अनुशासन।

राज्य वैभव - मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता, न्याय सुलभता, उत्पादन कार्य सुलभता, लाभ हानि मुक्त विनिमय सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता। चारो अवस्था सहज संतुलन वैभव।

राज्य कोष - विनिमय कोष।

रंग - विभिन्न प्रकार के रसायन द्रव्य अथवा भौतिक दृष्टियों का संयुक्त प्रकाशन।

रचना - अणुओं से भौतिक रचना, रासायनिक रचना, प्राणकोषाओं से रचना, भौतिक-रासायनिक विधि से, शिल्पकारिता से।

- पदार्थ की अवधि।

रस – रासायनिक द्रव्यों का तरल स्वरूप, चारों अवस्थाओं का सहज वैभव वर्तमान परम्परा, अस्तित्व में अनुभूति।

– दया, कृपा, करूणा की अविभाज्य अभिव्यक्ति।

रक्षा – परंपरा, मानवीयतापूर्ण परंपरा, तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा, गुणात्मक परिवर्तन प्रमाण परम्परा।

रसायन – यौगिक द्रव्यों का उत्सव-उर्मि के रूप में वैभव।

रसग्राही – शरीर तंत्र। (पौधों में भी यह तंत्र होता है)।

रस-रसायन कार्य – प्राणावस्था का वैभव, जीवावस्था का शरीर रचना, ज्ञानावस्था के मानव शरीर की रचना।

रसानुभूति – भ्रमवश संवेदनशीलता पूर्वक शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों से रस ग्रहण, पीड़ा संवेदनात्मक विधि।

– जागृतिपूर्वक समाधान समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव, संबंधों में मूल्य मूल्यांकन उभयतृप्ति संज्ञानात्मक विधि-सुख। सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी की ओर प्रवर्तन।

रचनाविधि – प्राण सूत्रों में निहित रचना विधि, शिल्पकारिता मानव मानसिकता में निहित।

रसायन द्रव्य – प्राणकोशाओं का विपुल होने के लिए आवश्यकीय वस्तु।

रति – अनुभव सहज प्रमाण निरंतरता के रूप में।

– सामरस्यतापूर्ण मिलन की निरंतरता।

रत्यात्मक रति – अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सहज निरंतरता अनुभव, सहअस्तित्व में अनुभव उसकी निरंतरता।

– वियोग विहीन रति, प्रेमानुभूति, स्थापित मूल्यानुभूति योग्य क्षमता।

रहस्य – समझ में नहीं आना, स्पष्ट नहीं होना, प्रमाणित नहीं होना।

– जो जैसा है अथवा जिस स्थिति में हैं, उसको उससे विकास या लक्ष्य की ओर दिशा, गति एवं प्रक्रिया का स्पष्ट न होना।

रहस्यमुक्ति – सहअस्तित्व समझ में आना, स्पष्ट होना, समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज प्रमाण प्रमाणित होना।

रचित – मानवीयता पूर्ण विधि से किया गया रचना सहज वर्तमान।

रासायनिक – यौगिक क्रिया व वस्तु।

रासायनिक क्रिया – यौगिक विधि से गठित वैभव।

– परमाणु में होने वाले प्रस्थापन विस्थापन।

रासायनिक उर्मि –रासायनिक द्रव्यों उत्सव रूप में आगे-आगे रचना और यथास्थिति वैभव व प्रकृति।

रासायनिक प्रवृत्ति – प्राणकोशा और प्राणकोशा से रचित रचनायें प्रकट होने की प्रवृत्ति परंपरा।

राज्य – अस्तित्व सहज 'त्व' सहित व्यवस्था का वैभव।

– मानव परंपरा में परिवार केंद्रित स्वराज्य, स्वानुशासन

रूपी स्वतंत्रता की वैभव परंपरा।

राज्य व्यवस्था - परिवार मूलक स्वराज्य विधि सहित सार्वभौम व्यवस्था सहज वैभव।

राक्षस मानव - क्रूरता हीनता दीनतात्मक स्वभाव, आहार आदि चार विषय, सीमान्तवर्ती प्रवृत्ति एवं हित प्रिय लाभ दृष्टि सहित मनुष्य।

राष्ट्रीय - चारों अवस्थाओं में पूरकता उपयोगिता प्रमाण परंपरा।

राष्ट्रीय आकांक्षा - प्रमाणिकता, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व की अक्षुण्णता।

राष्ट्रीय सुरक्षा - अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज परंपरा।

रीति-नीति - सदुपयोग सुरक्षा नीति पूर्वक क्रियान्वयन किए गए तरीके, तकनीक।

रेखाकरण - निश्चित योजनाओं का आकार-प्रकार का स्पष्ट होना।

रूप - आकार, आयतन, घन।

रूपवान - शरीर रचना स्वरूप, जीवंत शरीर, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप।

रूप सजातीयता - पदार्थावस्था में।

रूपात्मक अस्तित्व - सत्ता में संपूर्ण एक-एक के रूप में नित्य वर्तमान।

रुचिमूलक - संवेदनशीलता के आधार पर सोच-विचार कार्य प्रणाली।

रूचि - रचनात्मक व्यवस्था के अनुकूल तत्व।

रोमांचक - स्वीकार सहित सच्चाई सहज उत्सव रूप में प्रकाशन।

ल

लंबाई - गुरुत्वाकर्षण के समानान्तर रचना।

लघुत्वाकर्षण - गुरुत्व की ओर आकर्षित होने वाली क्षमता, धनाकर्षण।

लक्ष्योन्मुखी - जागृति की ओर गति जागृति सहज गति।

लवण - क्षारीय रस और ठोस विरल तरल रूप में।

लय - बोलने में समय बद्धता, स्वर में समयबद्धता, नियति लक्ष्य के अर्थ में भाषा लय सहित।

लक्ष्य - मानव लक्ष्य-समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व, नियति लक्ष्य चारों अवस्थाओं में प्रकट रहना।

- श्रेय और प्रेय।

लक्षण - प्रभाव प्रकाशन।

- रूप, गुण, स्वभाव और धर्म।

लाभ - कम देकर ज्यादा लेना।

लाभोन्माद - लाभ के प्रति विवशता, शोषण कार्य को सफल होने की मान्यता।

लाघव - सुविधाजनक विधि से हस्त लाघव-ग्राम शिल्प के रूप में हाथों से किए जाने वाले उत्पादन कार्य में प्रमाण।

लिप्सा - भ्रमवश गलती और अपराध से सुखी होने की अपेक्षा प्रयास।

लोभ - पात्रता से अधिक प्राप्ति की आशा।

लोकव्यापीकरण – सर्वशुभ के अर्थ में ज्ञान विवेक विज्ञान सर्वमानव में विदित होना, ज्ञान होना, प्रमाण परंपरा होना।

लोकेषणा – यश बल कामना।

लोकगम्य – सर्वमानव में पहुँचा हुआ, लोक मानस के समझ में आया हुआ, लोकमानस में स्वीकार किया गया प्रमाण परंपरा।

लोकार्पण – लोकव्यापीकरण होना, सर्वविदित होना।

लोकोव्यूह – अनेक ग्रह–गोलों का समूह।

लोक – चारों अवस्थायें अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था समेत तालमेल सहित वर्तमान।

– इच्छा की पूर्ति के लिए क्रिया, क्रिया की पूर्ति के लिए इच्छा।

लोकदर्पण – किसी भी धरती पर चारों अवस्थाओं में पाये जाने वाले मानव सहित समझदारी ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी।

लोक आसक्त – भ्रमित व्यवहार कार्य प्रवृत्ति।

लौकिक – धरती पर व्यवस्था में भागीदारी, अनुभव मूलक विधि से जीना, आलोकित रहना, प्रकाशित रहना।

व

वर्षाकालीन– वर्षा ॠतु का क्रियाकलाप और समय, वन खनिज संतुलन में।

वर्तमान – सहअस्तित्व सहज वैभव में विश्वास सहज प्रमाण, आचरण सहित विधि से होना, जीना।

– क्रिया, अभिव्यक्ति, भूत और भविष्य की मध्यस्थिति।

वस्तुस्थिति सत्य – दिशा, काल, देश का प्रकाशन सहज ज्ञान सम्पन्नता।

वस्तुगत सत्य – प्रत्येक एक में पाये जाने वाले रूप गुण स्वभाव धर्म।

वरण – अपना लेना, स्वीकारना, समझना, प्रमाण प्रस्तुत करना।

वस्तु – वास्तविकता को व्यक्त किए रहना।

– त्व सहित व्यवस्था के रुप में वास्तविकता को व्यक्त करने वाली इकाई ।

– आकार, आयतन, घन सहित स्थानान्तरण।

– परिणाम एवं परिवर्तन बाध्यता।

वनस्पति – वन में उत्पन्न पेड़–पौधे लता फूल फल गुल्म।

– उद्‌भित रचनायें। वायु का पाचनपूर्वक प्राण वायु में परिवर्तित करने वाला क्रिया समूह।

वहन – निर्वाह क्षमता वहन क्रिया।

– वाँछापूर्वक उन्नयन।

वर्चस्व – जागृति दृष्टा पद सहज प्रमाण।

वरीय – प्राथमिकता श्रेष्ठता क्रम।

वसुधा – वास करने योग्य स्थली, धाम, धरती।

वर्तुलाकार – गोल–गोल घूमता हुआ।

वरेण्य – सर्वोपरि जागृति का प्रमाण, दिव्यमानव पद सहज कार्य व्यवहार।

वर्धन – बढ़ना, शरीर वर्धन, वृक्ष वर्धन, ज्ञान वर्धन सहज प्रमाण।

वस्तुवादी – वस्तुओं में सुखी होने का प्रयास – भौतिकवादी, शरीर को जीवन मानते हुए किया गया कार्य व्यवहार।

वक्तव्य – मानसिकता का सत्यापन।

वरदान – जागृति।

वन्दना – गौरवता को व्यक्त करने हेतु प्रयुक्त चेष्टा।

वर्णित – यथार्थता का व्याख्या सहज प्रस्तुति।

वस्तुस्थिति – दिशा, काल, देश का निश्चयन।

वातावरण का सूत्र– प्रभाव क्षेत्र।

वाद – नियति क्रम में निश्चित सिद्धांत सूत्रों की व्याख्या शिक्षा संस्कार व्यवस्था संविधान आचरण में एक सूत्रता सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

– स्पष्ट रूप में यथार्थता सत्यता वास्तविकता का प्रतिपादन।

वाद त्रय – समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद।

वादग्रस्त – प्रतिपादन के विपरीत, शंका, विरोध प्रमाणित नहीं हो पाना।

वाङ्गमय सार्थकता – अर्थ संगत प्रमाण संगत समाधान संगत विधि से प्रमाणित होना।

वाङ्गमय – उद्देश्य पूर्ति के लिए लिखा गया प्रबंध निबंध।

वायु – वेग सहित विरल पदार्थ समूह।

वायु तरंग – विरल पदार्थ का तरंग सहज गति।

वाचन – पढ़ के सुनाना, बोलना।

वाचिक – बोलना, उच्चारण करना, सत्यापित करना, बोला गया, सत्यापित किया गया, बोलकर सत्यापित करना।

– वाणी द्वारा किये गये कार्य।

वाचिक प्रमाण – प्रयोग पूर्वक सिद्ध होने वाले सत्यापन।

वानप्रस्थ – वन में निवास करने वाला, यथार्थ को व्यवहार में क्रियान्वित रहने वाला।

वासनाजित – चार विषयों में नियंत्रण अप्रवृत्त।

वात्सल्य – वास्तविकता व सत्यता सहज स्वीकृति सहित संबंध निर्वाह और निरंतरता।

वार्तालाप – परस्परता में मानव समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी व विचारों प्रमाणों कल्पनाओं सहित किया गया वार्तालाप करना।

वाक्य – कई शब्दों का संयुक्त उच्चारण निश्चित अर्थ को इंगित करता है, बोध कराता है।

वास्तविकता – वस्तु अपने स्वरूप में वर्तमान।

– रूप गुण सामरस्यता प्रकाशन और रूप गुण स्वभाव धर्म का अविभाज्य वर्तमान क्रिया।

वाहक – समझा हुआ को समझाने के कार्यक्रम में प्रमाणित रहना, पाया हुआ जाने हुआ का सदुपयोग सुरक्षा करना।

वातावरण – इकाई से सभी ओर स्थापित प्रभाव क्षेत्र, इकाई के सभी ओर वर्तमान गतिविधियाँ।

– वास्तविकताओं का आवारण।

विघटन – संगठन के विपरीत अलग होना।

विकर्षण – आकर्षण का विरोध।

विधि – व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज आचरण कार्य व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी।

विश्वास – व्यवस्था में समझ, समाधान की अभिव्यक्ति और सम्प्रेषणा।

– संबंधों का निर्वाह निरंतरता।

– परस्परता में निहित मूल्य निर्वाह।

विश्वस्त – वर्तमान में विश्वास तन मन धन रूपी अर्थ की सुरक्षा।

विचार – विधिवत् प्रस्तुत होने में प्रवृत्ति।

– विश्लेषण सहित तुलन क्रिया, विवेचना सहित प्रयोजनों का निश्चयन क्रिया।

– वृत्ति की क्रिया जो प्रियाप्रिय, हिताहित लाभालाभ, न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य की तुलना में हैं।

विश्लेषण – अनेक प्रकार अनेक कोणों से परीक्षण किया गया का सत्यापन।

विश्लेषित – स्पष्ट किया गया।

विरक्त – जागृतिपूर्ण विचार पूर्वक प्रवृत्ति व गति।

विरक्तवादी – रहस्यमय ईश्वरवाद के अनुसार ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या उपदेश, जगत से विमुख होना जगत के प्रति विरक्ति, जगत विरोधी मान्यता।

विद्रोह – द्रोह का विरोध, द्रोह का दमन।

विकास – जीवन पद में संक्रमित होना।

– परमाणु में गठन पूर्णता गठन पूर्णता और क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता।

– गुणात्मक परिवर्तन अर्थात् पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था जीवावस्था से ज्ञानावस्था । ज्ञानावस्था में पाए जाने वाले पशु मनुष्य से राक्षस मनुष्य, राक्षस मनुष्य से मानव ,मानव से देवमानव – देवमानव से दिव्य– मानव के रूप में।

विश्राम – सर्वतोमुखी समाधान संपन्न होना, प्रमाणित होना।

विस्थापन – किसी एक परमाणु में कुछ अंश का बर्हिगमित होना।

विनिमय – लाभ हानि मुक्त विधि से उपयोगिता मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का आदान–प्रदान।

विनिमय विधि – श्रम नियोजन श्रम मूल्यों को उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकित वस्तु का हस्तांतरण वस्तु विनिमय।

विनिमय कोष – परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के अंगभूत कार्यरत विनिमय कोष जिसमें लाभ हानिमुक्त श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय करने की व्यवस्था।

विवेचनापूर्वक – लक्ष्य को पहचानना, विश्लेषण सहित स्पष्ट करना।

विवेचना – अनेक दिशा कोण से परीक्षण पूर्वक समाधानकारी

सूत्र सहित लक्ष्य को पहचानना।

विज्ञान – लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारित करना, कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी सूत्रों से दिशा निर्धारित करना, जागृति सहज प्रमाण परंपरा सर्वतोमुखी समाधान संपन्नता।

विज्ञानमय कोष – विशेष ज्ञान को प्रकट करने वाले अंग।

विकसित रचना – मानव शरीर रचना, रचनाओं में विकास का ज्ञान वनस्पति रचना से जीव शरीर रचना विकसित, जीव शरीर रचना से मनुष्य शरीर रचना विकसित।

विकसित देश – समाधान सहित सामान्यकांक्षा महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं से भरपूर, होना, रहना।

विभक्ति – विभाजित होना, विभाजन कल्पना होना।

विकल्प – हर समस्या का विकल्प समाधान समस्या के स्थान पर समाधान।

– अपरिपूर्ण अवधारणा को पूर्णता की ओर गति प्रदायी तथ्य।

विकल्पात्मक प्रावधान – समस्या के स्थान पर समाधान, अभाव के स्थान पर भाव, अज्ञान के स्थान पर ज्ञान, अविवेक के स्थान पर विवेक, दुष्टता के स्थान पर शिष्टता, अव्यवस्था के स्थान पर व्यवस्था।

विद्या – ज्ञान–जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण ही जीवन विद्या है।

– जीवन विद्या, जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण, समझदारी सहज सूत्र व्याख्या।

– जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना। जीवन विद्या और वस्तु विद्या।

विद्यार्थी – विद्या सम्पन्न होने के लिए इच्छुक।

विद्वान – ज्ञान सम्पन्न, विवेक सम्पन्न, विज्ञान सम्पन्न मानव जिसका प्रमाण होना आवश्यक है।

– मानवीयता पूर्ण आचरण सहित मनुष्य की परस्परता में पायी जानी वाली विषमता का समापहरण करने योग्य क्षमता योग्यता पात्रता से सम्पन्न व्यक्ति (पांडित्य से परिपूर्ण।)

विद्वता – जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान, ज्ञान विवेक विज्ञान सूत्रों व्याख्या सहित जीना।

विपुलीकरण – एक से अनेक होना, एक बीज से अनेक बीज होना, एक संतान से अधिक होना।

विदित – समझ में आया हुआ।

विनय – नम्रता, सरलता परस्परता सुगमता।

विगत – बीता हुआ घटनाओं का स्मरण, वर्तमान में अनुपयोगिता की समीक्षा।

विरचना – प्राण कोशाओं से रचित रचनाओं का, भौतिक पदार्थ से रचित रचनाओं का विघटन।

विकासक्रम – भौतिक रासायनिक क्रियाकलाप।

विन्यास – तरीका, मुद्रा, भंगिमा, बोलचाल, व्यवहार करने की निश्चित पहचान।

विरल – धरती के वातावरण में तैरता हुआ अणु समूह।

विग्रह – परस्परता में विद्रोह का निर्माण पूर्वक स्वलाभ का प्रयास। द्रोह का विद्रोह विरोध, न्याय प्रदायी क्षमता में अपूर्णता।

विजातीय – एक जाति के साथ दूसरी जाति का होना रहना।

विलगीकरण – सहवास से अलग होना, संगठन से अलग होना।

विभक्त – अलग होना।

विडम्बना – दम्भ, पाखण्ड, अप्रत्याशित।

विस्मृत – अनावश्यकता का अस्वीकार होना, भूलना याद न होना।

विशाल – फैल जाना, सभी ओर पहचान होना।

विषाद – संकट, व्यवस्था सहज गति विरोध, अपेक्षा से विपरीत, अप्रत्याशित घटना दुर्घटना एवं अवस्था का अस्वीकृति।

विकृत – जागृति के विपरीत, भ्रमित, व्यवस्था विरोधी, लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद में रोग ग्रस्त विवश।

विरोधाभास – सत्य के विरोध में सुख भासना, भ्रम, संवेदनाओं में सुखी होने का प्रयास।

विमूढ़ता – शुभ चाहते हुए मूढ़ता पूर्वक, भ्रम पूर्वक सुखी होने का प्रयास।

वितृष्णा – नियति सहज विधि विरोधी, परिकल्पनापूर्वक सुखी होने की इच्छायें, विचार, आशायें।

वितरण – विवेकपूर्वक किया गया वितरण।

वित्तेषणा – धन बल कामना-धन-आहार आवास अलंकार दूरश्रवण दूरगमन, दूरदर्शन वस्तुऐं।

विखण्डन – भाग विभाग करना।

विचार बंधन – भ्रमित विचारों से समस्याग्रस्त होना, दूसरों को समस्याओं से पीड़ित करना।

विकास एवं जागृति पूर्णता – जीवन पद, गठनपूर्णता, चैतन्य इकाई में क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता।

विकिरण – अजीर्ण परमाणुओं का मध्यांश से प्रसारित वातावरण।
– इकाई में अंतर्निहित अग्नि का प्रभाव प्रसारण।

विषमता – विकासक्रम विरोधी, रचना विरोधी, विकास विरोधी फल परिणाम

विद्युत युग – विद्युत साधनों का उपयोग करने की शुरूआत एवं परंपरा।

विचारणा – पाए गए घटित घटना सूचना को न्याय, धर्म, सत्य, प्रिय, हित, लाभ के आधार पर विश्लेषित करना।

विवाहोत्सव – दो मानव समझदारी, ईमानदारी, भागीदारी में एकरूपतापूर्वक जिम्मेदारी से जीने का प्रतिज्ञा समारोह

विपुलीकृत – एक से अनेक होना, एक बीज से अनेक बीज होना, संतान होना।

विसंगतियाँ – विकास और व्यवस्था ऋतुकाल के विपरीत परिस्थितियाँ।

विकृत संस्कार – अमानवीयता से ग्रसित।

विद्युत ऊर्जा – चुम्बकीय धारा विखण्डित होना आवेश पूर्वक विद्युत धारा रूप में प्रवाहित होना।

विकिरणीय ऊर्जा – अजीर्ण परमाणुओं के मध्यांश से प्रसारित तरंग और उसकी गति।

विचारशील – न्याय धर्म सत्य सूत्रों के आधार पर व्यवहार प्रमाण में व्याख्यायित होने के लिए तैयार किया गया सूझ-बूझ तक।

विद्यमान – होने का प्रमाण, होने की पहचान सहित प्रस्तुति।

विवश – मान्यताओं के साथ, भ्रमित होने के कारण।

विचार विधि – ज्ञान विवेक सम्मत विज्ञान न्याय धर्म सत्य को प्रमाणित करना।

विज्ञान युग – अस्थिरता व अनिश्चित वस्तु केन्द्रित चिंतन ज्ञान का आरंभ और परम्परा।

विश्व राज्य परिवार सभा – दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था क्रम में दसवें सोपान में विश्व राज्यसभा है। यह दस अथवा वर्तमान में प्रमाणित प्रधान राज्य सभाओं के सदस्यों में से एक-एक सदस्य का निर्वाचन और ऐसे सभी दस सदस्यों का गठन विश्व राज्य परिवार सभा है। पाँच समिति कार्य आचरण से वैभवित होना सार्वभौम व्यवस्था को अखण्ड समाज वैभव को प्रमाणित करना।

विधान – नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज सूत्र व्याख्या।

– विधि की धारणा पूर्वक व्यवहार, व्यवसाय सुगम बनाने की प्रक्रिया ।

विविधता – प्रमाणित करने में, जीने में, जागृत मानव में श्रेष्ठता और श्रेष्ठता की बात रहती ही है श्रेष्ठता सहज विविधता।

विषय – ना समझ में आना, न प्रमाणित होना, न वस्तु।

विचार में प्रभेद – विचारपूर्वक ही हर व्यक्ति कार्य करता है इस क्रम में श्रेष्ठता के अर्थ में प्रक्रिया विधि में प्रभेद।

विभववादी – यथास्थिति एवं उसकी निरंतरता बनाए रखने का विचार व्यवहार।

विभव – अस्तित्व का प्रकाशन।

वियोग – सान्निध्य से दूर-दूर होना, पुनश्च योग की संभावना बना रहना, विच्छेद।

विमुख – भ्रम से विमुख, जागृति की ओर गति।

विधायक – विधि को निरुपित करने वाला, विधिवत् जीने वाला।

– मानवीय संस्कृति व सभ्यता का संरक्षणात्मक विधि व नीति का पक्षधर।

विचारक – शोध करने वाला और समाधान को प्रमाणित करने वाला।

विचाराश्रित – संपूर्ण कार्य व्यवहार समाधानपूर्ण विचाराश्रित।

विनिमय सुरक्षा – आवश्यकता से अधिक उत्पादन व भंडारण।

विकसित इकाई –समाधान एवं समृद्धि सम्पन्न इकाई।

विषद्–विश्लेषण – अध्ययन पूर्वक बोध होने योग्य विश्लेषण।

विचार परिष्कृति – समाधान पूर्ण विचार।

विधिवत आचरण – मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्य चरित्र नैतिकता सहज आचरण।

– विधि सम्मत आचरण।

विधिवत निर्वाह – मानवीयता पूर्ण पद्धति से व्यवहार, उत्पादन, उपयोग, वितरण आदि की व्यवस्था।

विभूतियाँ – दिव्य पद सहज वैभव परंपरा।

विभव क्रिया – वर्तमान में त्व सहित व्यवस्था का प्रसारण परंपरा।

वितरण – लाभ–हानि मुक्त लेन–देन।

विधि पक्ष – आचार संहिता–मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान।

विविध स्तर – दस सोपानीय व्यवस्था, व्यवस्था क्रम में दस सोपान।

विकल्पात्मक दर्शन – मध्यस्थ दर्शन, सह अस्तित्ववाद।

विचार परंपरा – मानवीयता पूर्ण विचार परंपरा।

विकेन्द्रीकरण – परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था।

विनियोजन – सार्थकता के लिए नियोजन।

वीर – वीरतापूर्वक प्रमाण प्रस्तुत करने वाला, स्वयं न्यायपूर्वक जीना एवं न्यायपूर्वक जीने देने के लिए तन मन धन

का समर्पण करने वाला।

वीरता – अन्य को न्याय दिलाने को क्रिया में स्व शक्तियों का नियोजन।

– दूसरों को न्याय उपलब्ध कराने में अपनी भौतिक एवं बौद्धिक शक्तियों का नियोजन करना।

वेश – जो जैसा है उससे कल्पित रूप में प्रस्तुत करने के लिए सभी उपक्रम (शरीर रक्षार्थ कपड़े आदि)।

वेग – गति, अपेक्षित गति, स्वभाव गति।

– अपेक्षाकृत अधिक गति।

वेदना – अव्यवस्था को व्यवस्था में परिवर्तित करने की आवश्यकता।

वेगित – अधिक गति प्रदान करना।

वेदना मुक्त – व्यवस्था सहज निरंतरता में भागीदारी।

वेगमय – अधिक गतिमान यान वाहन।

वैभवित – वर्तमानित, सार्थक, व्यवस्था सहज परम्परा।

वैराग्य – असंग्रह प्रवृत्ति से समृद्धि पूर्वक सदुपयोग प्रवृत्ति संपन्नता।

वैद्य – विधिवत स्वास्थ संरक्षण कार्यक्रम नियमपूर्वक, नियंत्रणपूर्वक, संतुलन पूर्वक, न्यायपूर्वक किया गया सोचा गया और बोला गया, कराया गया, सोचवाया गया, बोलवाया गया।

वैभवशाली – त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी

समाधान समृद्धि संपन्न परिवार।

वैयक्तिक प्रतिभा – जागृत मानव, ज्ञान, विज्ञान, विवेक संपन्न मानव।

वैचारिक रति – समाधान सहज विश्राम सहज प्रमाण परंपरा।

वैचारिक मतभेद – दोनों में या किसी एक में गलती या अपूर्णता का होना।

वैयक्तिक ऐश्वर्य – सर्वतोमुखी समाधान सामान्य कांक्षा, महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुऐं, उपयोगिता के लिए सुलभ रहना।

वैकृतिक – मानवकृत कृतियाँ, सामान्य व महत्वाकांक्षाओं के रूप में प्रकट।

वैभव – जागृति पूर्ण यथास्थिति में वर्तमान रहना।

– धर्म स्वभाव गुण एवं रूप का प्रकाशन।

वंशानुषंगीय– जीव परम्परा।

वंश – पीढ़ी से पीढ़ी।

वंचना – भ्रमवश विश्वासघात पूर्वक शोषण का रूप।

वांछा – विधि विहित आवश्यकता।

वांछित लक्ष्य – जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य संपन्न परंपरा।

वांछनीय – लक्ष्य पूर्ति के लिए आवश्यकीय सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण ही सहायता।

वांछित – आवश्यकीय।

वृत्ति – चैतन्य इकाई में मध्यांश के आश्रित तृतीय परिवेशीय अंश का प्रकटन जो विचार हैं।

– जीवन में होने वाली तुलन एवं विश्लेषणात्मक क्रिया।

वृत्ति सहज न्याय – जागृति विचारों के आधार पर न्याय करना संबंधों में, मानव परम्परा में नैसर्गिक में, मनुष्येतर प्रकृति में सन्तुलन।

वृत्ति तत्वग्राही – तात्विकता का आंकलन विचारों में होना, स्वाभाविक फलन में कार्य व्यवहार चार अवस्था व पदों का तात्विक उपयोगिता व पूरकता के आधार पर अध्ययन होना।

वृत्ति क्षोभ – अनियमितता के आंकलन वश प्रिय हित लाभ को तत्कालिक राहत मान लेता है जब तक जीवन ज्ञान सहअस्तित्व में ना हो।

वृहदत्व – धरती जैसी रचना (अति विशाल)

वृत्तिकृत – विश्लेषण पूर्ण अभिव्यक्ति।

वृत्ति सत्ता – न्याय धर्म सत्य मूलक समाधान संपन्नता।

व्यवहारगम्य – व्यवहार में प्रमाणित होने वाले सूत्र व्याख्या व्यवहारिक सुगमता, अखण्ड समाज सर्वाभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज परंपरा।

व्यवहारवादी समाजशास्त्र – समाधान सत्य न्याय संगत व्यवहार सूत्र व्याख्या।

व्यवस्थागत – व्यवस्था व्यवहार सुलभ होने के रूप में व्यवस्था मर्यादा में, व्यवस्थापूर्वक नियम नियंत्रण संतुलन रूप में।

व्यवहार व्यवस्था – सार्वभौम व्यवस्था।

व्यापक वस्तु – सर्वत्र एक सा विद्यमान, वर्तमान, पारगामी पारदर्शी

मध्यस्थ सत्ता सहज वैभव।

व्यवहाराभ्यास – संबंधों में मानवीयतापूर्ण आचरण उपयोगिता पूरकता के अर्थ में मूल्यांकन निर्वाह।

व्यवसाय – उत्पादन कार्य व्यवहारिक उपयोगिता सदुपयोगिता प्रयोजनीयता के अर्थ में।

– निपुणता, कुशलता पूर्वक प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता एवं कला मूल्य की स्थापना।

– प्रयोग सिद्ध प्रक्रिया का व्यवहारीकरण जिसमें सामान्य आकांक्षा एवं महत्वकांक्षा संबंधी वस्तुओं का निर्माण।

व्यवसाय मूल्य – उपयोगिता एवं कला ।

व्याख्यायित – व्यवहार के अर्थ में बोधगम्य होने के लिए स्पष्ट किया गया।

व्यवहार समुदायगत होना – समस्या ग्रस्त होना।

व्यापकत्व – साम्य ऊर्जा सहज सत्ता सहअस्तित्व में।

व्यवस्था भेद – दस सोपानीय विधि सहज।

व्यवहृत – व्यवहार में प्रमाणित।

व्यष्टि – इकाई एवं जागृत इकाई व्यक्ति के रूप में भी संपूर्णता, त्व सहित व्यवस्था का प्रमाण।

व्यवहारिक सुगमता – न्यायपूर्ण जीवन का संरक्षण।

व्यवहारान्वयन (गम्य)– व्यवहार में समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी भागीदारी प्रमाणित होना।

व्यवहार विधि – संबंधों के आधार पर मूल्यों का निर्वाह।

व्यवहारिकता – अर्थ का सदुपयोग।

व्यापक – सर्वत्र विद्यमान सत्ता, ऊर्जा, शून्य, व्यापक, ईश्वर, ब्रह्म।

व्यक्तित्व – मानवीयता पूर्ण आहार विहार व्यवहार सहित व्यवस्था में भागीदारी।

व्यक्त – प्रकटन एवं वर्तमान मानव समझने योग्य, समझ में आने वाला समझा हुआ।

व्यवहार – ज्ञान विवेक विज्ञान रुपी समझदारी सहज प्रमाण।

– मनुष्य की परस्परता में निहित मूल्यों का निर्वाह।

– एक से अधिक एकत्रित होने पर या होने के लिए किया गया आदान–प्रदान । स्थापित सम्बन्धों में निहित स्थापित मूल्यों के अनुभव सहित शिष्टतापूर्ण पद्धति से व्यवसाय मूल्य का उत्पादन, उपयोग, उपभोग एवं वितरण।

व्यवस्था – मानवत्व सहित वर्तमान परंपरा, वर्तमान में स्थिरता निश्चयता निरंतरता, सार्वभौम व्यवस्था परिवार मूलक दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी, वर्तमान में विश्वास।

– वर्तमान में मानवत्त अर्थात मानवीय आचरण संस्कृति + सभ्यता पूर्ण व्यवहार परंपरा।

– विधि के अर्थ में नीति का निर्वाह।

– व्यवहार गति में स्थायित्व, निरंतरता और वर्तमान में विश्वास।

व्यवहारवादी जन चेतना – मूल्य मूलक, लक्ष्य मूलक, जीने का महत्व, मूल्यों का मूल्यांकन करने सम्बन्धों को पहचानने और निर्वाह करने, मानवीय संस्कार, मानवीय व्यवहार पूर्वक जीने, मानवीय आचरण में जीने, परिवार मूलक राज्य व्यवस्था में जीने, आवश्यकता से अधिक उत्पादन संयमपूर्वक स्वास्थ्य को बनाए रखने, श्रम नियोजन श्रम विमिनय के आधार पर विनिमय कोष व्यवस्था पूर्वक जीने । न्याय-प्रदायी क्षमता सम्पन्नता पूर्वक जीने, सही रूप में उत्पादन कार्य करते हुए जीने, नियम न्याय समाधान समृद्धि प्रामाणिकता पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति पूर्वक जीने की कला का वर्तमान और उसकी निरतंरता।

व्यवहारात्मक जनवाद – मानव अपने परस्परता में व्यवहार न्याय प्रमाणित करने के लिए चर्चा, परिचर्चा प्रमाणात्मक प्रस्तावात्मक वार्तालाप।

– अस्तित्व में प्रत्येक व्यक्ति को दृष्टापद में पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति में समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व की अपरिहार्यता को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को स्वराज्य और स्वतंत्रता की परमावस्था को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता की अनिवार्यता को पहचानने प्रत्येक व्यक्ति को सम्बम्धों मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने की संभावना को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को कर्म स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता को पहचानने। एक व्यक्ति जो कुछ जानता है, करता है, पाता है उसे प्रत्येक व्यक्ति को जानने, करने ,पाने

को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की क्षमता में समानता को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति अपने त्व सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदार होने के रूप में समानता को पहचानने का सूत्र और व्याख्या।

व्यंजनीयता – वास्तविकताओं को व्यंजित कराने योग्य प्रस्तुति ।

व्यंजनात्मक– प्रेरणा रूप में समझने योग्य समझदारी प्रमाणित करने योग्य।

व्यंजना – मूल्य एवं क्रिया संकेत ग्रहण क्षमता।

– वास्तविकताओं का संकेत ग्रहण करने योग्य प्रस्तुति।

व्रत – निष्ठापूर्वक लक्ष्य पूर्ति व उद्देश्य पूर्ति के लिए किया क्रियाकलाप व आचरण।

विद्या – जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना।

– जीवन –विद्या और वस्तु विद्या।

विधि – मानवीय संस्कृति की नियम पूर्ण आचरण संहिता।

– मानवीयतापूर्ण व्यवहार, आचरण, उत्पादन, विनिमय, मानवीय शिक्षा-संस्कार, तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक सूत्र और व्याख्या।

– विकास और जागृतिक्रम, सतर्कता, सजगता, गुणात्मक विकास क्रम में जीवन जागृति का सूत्र और व्याख्या।

– पूर्णता और उसकी निरंतरता के अर्थ में नियम, न्याय, धर्म और सम्पूर्ण मानव परंपरा के सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रमाणिकता पूर्ण प्रक्रिया का प्रावधान।

विधिवत निर्वाह – मानवीयता पूर्ण पद्धति से व्यवहार, उत्पादन उपयोग, वितरण आदि की व्यवस्था।

विनिमय – श्रम मूल्य के आधार पर वस्तुओं का आदान प्रदान।

विहित – विधि सम्मत पद्धति से समृद्धि व समाधान के लिए सहायक ।

विभाग – पूर्ण विश्लेषण पूर्वक किया गया भाग।

विवशता – इच्छा न रहते हुए भी परिस्थितियों के दबाव वश किए जाने वाले कार्य ।

विवेक – बौद्धिक अध्ययन जिसमें आत्मा का अमरत्व शरीर का नश्वरत्व एवं व्यवहार का नियम समाया रहता है।

– चित्त में होने वाली विवेचनात्मक प्रक्रिया जो प्रयोजनीयता के अर्थ में, उपयोगिता, सदुपयोगिता को और जीवन का अमरत्व शरीर का नश्वरत्व व व्यवहार के नियम को विवेचना पूर्वक प्रकाशन क्रिया।

विरत्यात्मक रति – रूप सान्निध्य एवं आस्वादन ।

– जिस रति के अनंतर निरंतरता न हो।

विराग – समृद्धि सहज प्रमाण, असंग्रह।

विरोध – वैचारिक मतभेद।

विसर्जन – अनुपयोगिता का आंकलन अथवा अक्षमता का कारण।

विस्तार – रचना की अवधि।

विश्लेषण – वस्तुस्थिति एवं वस्तुगत सत्यता का उद्घाटन।

विश्वास-घात – अप्रत्याशित एवं अनावश्यक प्रस्तुति, छल, कपट, दंभ, पाखंड।

विशिष्ट ज्ञान – दिव्य मानवीयतावूर्ण ज्ञान।

विशिष्टता – प्रतिभा और व्यक्तित्व पर पूर्ण अधिकार।

विशेष ज्ञान – विज्ञान और विवेक।

विषम – विसर्जन क्रिया में सहायक गुण।

विषम-आवेश – बाह्य हस्तलेप से प्रभावित गति जो अस्वीकृत होने की क्रिया है।

विषय चतुष्टय – आहार, निद्रा, भय, मैथुन।

विषयान्वेषण – चार विषयों में प्रसक्त होने के लिए जानकारी हेतु प्रयास।

विक्षेप – एषणा-त्रय में आसक्ति।

विज्ञान – कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी क्रिया समुच्चय, विश्लेषण क्रिया।

– कालवादी ज्ञान, क्रियावादी ज्ञान एवं निर्णयवादी ज्ञान।

व्यवधान – व्यक्तित्व विकास में बाधा।

व्यक्ति – व्यक्तित्व समेत मनुष्य ।

व्यक्तित्व – मानवीयतापूर्ण आचरण पोषण में सहायक आहार विहार एवं व्यवहार।

व्याकुल – वांछित के प्रति उत्कट पीड़ा ।

व्यापक – सर्वत्र, सर्वकाल में साम्य रूप में वर्तमान।

व्याधि – शरीर और मन की परस्परता में विसंगति।

स

समुच्चय – व्यापक सत्ता में संपृक्त संपूर्ण जड़-चैतन्य प्रकृति सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति, चार अवस्था व पदों के रूप में।

समझ – ज्ञान विवेक विज्ञान।

सफलता – मानव लक्ष्य और जीवन मूल्यों का प्रमाण समझदारी जिम्मेदारी ईमानदारी भागीदारी।

सत्ता – व्यापक वस्तु नित्य वर्तमान।

– स्थिति पूर्ण ऊर्जा, मध्यस्थ ऊर्जा।

– अस्तित्व पूर्ण व्यापक ऊर्जा, निरपेक्ष ऊर्जा, गति-दबाव-विहीन परम प्रभावी ऊर्जा। जिसका नामकरण सत्य, ज्ञान, ईश्वर, परमात्मा, शून्य आदि है।

– तीनों काल में एक सा विद्यमान, भासमान, बोधगम्य, आनंदरूपी ऊर्जा।

– अस्तित्व में सम्पूर्ण तत्वों में, से, के लिए प्राप्त ऊर्जा। प्रत्येक भाव में, से, के लिए नियंत्रण रूपी संरक्षण ऊर्जा।

सत्तामयता – व्यापक वस्तु सर्वत्र, वर्तमान, पारगामी, पारदर्शी सहज।

सहज – चारों अवस्थायें स्वभाविक गति रूप में।

समझदार – ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्न मानव।

समग्र – चारों अवस्था, चारों पद, सहअस्तित्व।

– सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति चार अवस्था चार पदों में।

समझना – ज्ञान संपन्न होने का अवसर।

सत्यता – वस्तु स्थिति एवं वस्तुगत सत्य।

– अस्तित्व सहित पदों के अनुरूप मौलिकता की अभिव्यक्ति।

सत्यान्वेषण – समस्त कारणों का महाकारण, समस्त शक्तियों की महाशक्ति, समस्त पदार्थों का पूर्णाधार में जानकारी योग्य क्षमता का उपार्जन।

सत्योन्मुखी – अनुभवगामी दिशा में अध्ययन गति।

सत्यानुभूत – सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण होना।

सत्य ज्ञान – जो जैसा है उसे वैसा ही समझना।

सत्य – सह-अस्तित्व।

– जो तीनों काल में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है।

– मानव परंपरा में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य नित्य वर्तमान।

– अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति प्रामाणिकता का नित्य वर्तमान।

– तीनों कालों में एक सा विद्यमान, भासमान और सुखप्रद स्थिति में क्रिया और श्रम, गति, परिणाम परंपरा में निर्भ्रमता अथवा जागृति पूर्ण परंपरा का

वर्तमान।

सभ्यता – व्यवस्था में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में जीना, स्वयम् में व्यवस्था प्रमाण सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना अथवा अनुबंधित रहना जुड़े रहना।

– सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना।

– सह-अस्तित्व जो सामाजिकता (समाधान) एवं समृद्धि का योग फल है।

– मानवीयता पूर्ण व्यवहार।

– अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

समझदारी – जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान संपन्नता सहित विवेक विज्ञान सहज समाधान प्रमाण-सर्वतोमुखी समाधान।

समुदाय – एक से अधिक मानव परिवार नस्ल रंग जाति मत सम्प्रदाय पंथ के रूप में मान्यता सहित स्वीकृत समुदाय।

समीक्षा – पूर्णता के प्रति दृष्टिपात।

समीचीन – समीप में होना (समकालीन होना)।

सम्मत – प्रमाणित होने के लिए सहमति सम्मति।

सम्यक – पूर्णतया, संपूर्ण रूप से।

सदुपयोग – तन मन धन रूपी अर्थ का उपयोग समाज गति में।

सम्मुख – आमने-सामने, परस्पर सामने।

सर्वतोमुखी – सभी आयाम कोण दिशा परिप्रेक्ष्य में।

सम – सृजन क्रिया में सहायक गुण।

सम्मान – व्यक्तिगत प्रतिभा की, श्रेष्ठता की स्वीकृति-निरंतरता।

– व्यक्तित्व व प्रतिभा की स्वीकृति और उसका प्रकाशन।

समान – हर नर-नारी ज्ञान विवेक विज्ञान रूप में, न्याय समाधान रूप में, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में सहज प्रमाण।

सरलता – सत्य सहज प्रस्तुतिकरण।

– ग्रंथि एवं तनाव रहित अंगहार।

सहधर्मीयता – सुख धर्मीयता मानव परंपरा में।

सकारात्मक – जागृति बोध व प्रमाणित होने योग्य।

समर्पण – सेवा उपकार।

– पूर्णता के अर्थ में अर्पण-समर्पण सेवा।

– पूर्णता को पाने के लिए प्रस्तुति व सेवा।

– स्व संतुष्टि में, से, के लिए तन-मन-धन रूपी अर्थ नियोजन क्रिया।

– संतृप्ति में, से, के लिए नियोजन क्रिया।

समारोह – पूर्णता के अर्थ में, व्यवस्था के अर्थ में, जागृति के अर्थ में सम्मिलित प्रकाशन।

सक्षम – क्षमता को व्यक्त करने योग्य।

समस्या – व्यवस्था में अवरोध रूकावट।

– वास्तविकता घटना क्रम ज्ञान क्षमता में अपूर्णता। कैसे और क्यों का अनुत्तरित रहना।

सद्‌गति – जागृति सहित मानवीय लक्ष्य संपन्न की ओर स्थिति गति।

सद्‌विचार – समाधानपूर्ण विचार।

सद्‌व्यय – मानवीयतापूर्ण पद्धति से किया गया उपभोग, उपयोग और वितरण।

सत्कर्म – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए किया गया सभी कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाकलाप।

सद्‌मार्ग – जागृति सहज मानव लक्ष्य प्रमाणित करने में परंपरा।

समूह – बहुत सारी एक ही जाति की इकाईयों का एकत्रीकरण।

सर्वथा – पूर्णतया।

सहायक – जीने की गति में, एक दूसरे के लिए पूरक और उपयोगी होना।

सहकारिता – एक से अधिक मानव सम्मिलित रूप में किया गया अभिव्यक्ति संप्रेषणा कार्य व्यवहार।

सहभागिता – कार्य और कार्यक्रम में, उत्पादित वस्तुओं में सहभागिता।
– किए गए उत्पादन के फलन में सम्मिलित उपयोग कर प्रसन्नता का अनुभव करना।

समय – क्रिया की अवधि।
– घटना प्रक्रिया सहित काल।

सहोदर – एक ही उदर से प्रकट एक से अधिक संतान।

सच्चरित्रता – स्वधन-स्वनारी/स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार।

सहिष्णु – मानवीयतापूर्ण मर्यादाओं को परंपरा के रूप में बनाए रखना।

समीकरण – एक दूसरे के साथ संयोजित करना।

सर्वेक्षित – नाप तौल पूर्वक निर्धारित करना।

सर्वसाधारण – सर्वमानव को सुलभ स्वरूप, व्यक्तित्व संपन्न रूप।

सर्वत्र – सभी स्थानों में।

समापन – उद्धेश्यित कार्य सार्थकता के अर्थ में फलित होने के लिए योग्य स्थिति (अंतिम स्थिति)।

सत्कार – पहचान सहित प्रस्तुत किया सम्मान।

समीक्षा – व्यर्थता का आंकलन।

सहवास – साथ में होना, वर्तमान रहना।
– जिस योग के अनंतर विलगीकरण संभव हो।

सज्जन – सत्य को प्रमाणित करने वाले मानव।

सतर्कता – तर्क संगत विधि से समाधान प्रमाण होना।
– समाधानवादी विचार शैली पूर्ण जीने की कला उसकी परंपरा। स्वतंत्रता स्वराज्य परंपरा।
– मानवीयता पूर्ण संस्कृति-सभ्यता का आचरण, वहन, संरक्षण, संर्वधन क्षमता।

सजगता – प्रामाणिकता पूर्ण पद्धति से शिक्षा, संस्कार राज्य व्यवस्था, संविधान व आचरण परंपरा।
– आचरण पूर्णता (जीवन-जागृति)।

– जागृति सहज प्रमाण वर्तमान परंपरा।

समाधि – सर्वतोमुखी समाधान संपन्नता अनुभव सहित समत्व सर्वशुभ प्रमाण।

सद्‌बुद्धि – सत्य बोध संपन्न बुद्धि।

सद्‌प्रवृत्ति – सत्य में अनुभव मूलक प्रवृत्ति प्रमाण

समानता – मानव में सुख धर्म सहज समानता, मन:स्वस्थता सहज समानता, कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता सह समानता।

सर्वमंगल – मनुष्य के चारों आयाम तथा पाँचों स्थितियों में एक सूत्रता तथा निर्विषमता।

– सर्वतोमुखी समाधान संपन्नता, व्यवस्था में भागीदारी।

समिति – सहमति पूर्वक लक्ष्यपूर्ति के लिए कार्यक्रम को सम्मिलित रूप में संपन्न करने की प्रतिज्ञा संकल्प।

सर्वशुभ – मानवत्व सहित व्यवस्था–समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

– समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा।

सर्ववांछा – सुख।

सर्वांग – सभी विद्या स्वयं में समायी हुई, अंग–प्रत्यंग।

सभा – संभ्रमता पूर्वक निश्चित उद्देश्य के लिए प्रस्तुत एकत्र मानव।

सहयोग – भौतिक समृद्धि और बौद्धिक समाधान सुलभता के लिए अर्पित की गई तन मन धन रूपी अर्थ।

सहयोगी – गति में पूरक और उपयोगी।

समृद्धि – आवश्यकता से अधिक उत्पादन, उपभोग कम, अभाव का अभाव।

सत्व – धैर्य, सहअस्तित्व पूर्वक अस्तित्व को सिद्ध करना।

सतीत्व – सत्व पूर्वक करने की प्रक्रिया, भ्रम मुक्ति।

समर्थ – योग्य, करने योग्य।

सदुपयोग – समाज गति में नियोजन।

– तन मन धन रूपी अर्थ का मानवीय संबंधों एवं मूल्यों में, से, के लिए अर्पण समर्पण क्रिया।

सदुपयोग विधि – अखण्ड समाज गति में प्रयुक्ति नियोजन।

सहअस्तित्व – चारों अवस्था, चारों पद, सत्ता में नित्य वैभव।

– परस्परता में निर्विरोध सामरस्यता।

– सत्ता में संपृक्त जड़–चैतन्यात्मक–प्रकृति।

– अनंत इकाई रूपी प्रकृति में परस्परता और विकास तथा विकास क्रम।

– अस्तित्व में परस्पर इकाईयों में अथवा इकाईयों की परस्परता में पूरक व उदात्तीकरण क्रिया और उसकी परंपरा।

– अस्तित्व में अनंत इकाईयों की परस्परता में विकास, पूरकता, उदात्तीकरण सूत्र और व्याख्या।

सह–अस्तित्ववाद – (1) अस्तित्व में विकास, पूरकता व उदात्तीकरण सूत्र व व्याख्या ।

- विकसित इकाई, अविकसित के विकास में सहायक होना - पूरकता।
- विकास क्रम में अग्रिम पद में (जैसे पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवास्था की रचनाएँ) होने वाली प्रकाशन क्रिया का सूत्र और व्याख्या।
- परमाणु में गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता में संक्रमित होना स्वयं विकास और जागृति है की सूत्र व व्याख्या।

समयबद्ध नियोजन - समय और आवश्यकता के साथ तन मन धन रूपी अर्थ का नियोजन।

सत्यबोध - सहअस्तित्व में अनुभव बोध।

समग्र व्यवस्था - जड़-चैतन्य प्रकृति में से के लिए समग्र व्यवस्था।

सर्वेक्षित - सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष।

सत्यापन - अनुभव सहज निष्कर्षों को सूत्र व्याख्या रूप में प्रस्तुत करना।

सहकारी - संयुक्त रूप में किया गया कारितायें कार्यक्रम।

सहगामी - साथ-साथ चलने वाले।

सत्ता पारगामी - प्रत्येक एक-एक ऊर्जा संपन्न कार्यरत नियंत्रित।

सत्तामयता - सर्वदा सर्वत्र विद्यमान वर्तमान साम्य ऊर्जा।

सम्भाषण - पूर्णता के अर्थ में परस्पर सुनना सुनाना

सम्पादित - पूर्णता के अर्थ में पाया गया प्रतिपादन प्राप्तियाँ

सम्मति - स्वीकृति।

समावेश - मिल जाना, सजातीय वस्तु का मिलाना।

समावेशित - समाया हुआ।

साहित्यकला - यथार्थता वास्तविकता को व्यक्त करने के लिए संपूर्ण प्रकार की क्रियाकलाप।

सकारात्मक- विधि सम्मत।

समुन्नत - पूर्णतया स्पष्ट।

सजातीय - समान आचरण वाले।

सजातीयता - रूप गुण स्वभाव एवं धर्म सहज एकता।

समीप - गति-काल

सटीक - विधिवत्।

सर्वजन - धरतीवासी।

सर्वकालीन - सदा-सदा प्रमाण।

सर्वसम्मतियाँ - सर्वमानव स्वीकृति।

सर्वोत्कृष्ट - संपूर्ण गुणवत्ता।

सफल - प्रमाणित।

सप्त धातु - रस, मांस, मज्जा, अस्थि, स्नायु, रक्त, वसा - मानव शरीर रचना में सात प्रकार के धातुयें होना पाया जाता है।

समग्रता - सत्ता में संपृक्त चारों पद और चार अवस्था।

सद्ग्रंथ - अनुगामी स्वीकारने सार्थकता स्पष्ट होने में अध्ययन के लिए प्रस्तुत ग्रंथ।

सत्यापित – अनुभवमूलक विधि अभिव्यक्त होना, प्रमाणित अथवा प्रमाण स्पष्ट होना।

सम्मेलन – पूर्णता के अर्थ में मिलन।

सभ्यता विधि – व्यवस्था में भागीदारी क्रम।

सफलीभूत – दृष्टा पद जागृति प्रमाण।

समानाधिकार – हर नर-नारियों में, से, के लिये समानाधिकार, त्व सहित व्यवस्था में जीने का समानाधिकार।

सर्वसमृद्धिकरण – एक दूसरे के पूरकता उपयोगिता विधि से सभी परिवार में समाधान समृद्धि।

ससीम – सभी ओर से सीमित इकाई त्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण।

सहजीवन – हर मानव त्व सहित व्यवस्था के रुप में साथ-साथ जीना।

सर्वसंरक्षण – चारों अवस्था, चारों पदों में सन्तुलन सहज निरंतरता के अर्थ में।

समायोजित अधिकार – समाधान, समृद्धिपूर्वक जीने में साथ-साथ जीने देने की भागीदारी।

समाजदत्त अधिकार – समाज की सहमति से प्राप्त अधिकार, परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी।

समान – जीने के अधिकार में समान, समझदारी संपन्न होने में समान, व्यवस्था में जीने में समान नर-नारी में।

सत्यनिरूपण कला – अनुभव मूलक अभिव्यक्ति संप्रेषणा।

समष्ठित्व – सार्वभौम सहज सूत्र-व्याख्या रूप में जीना।

सभ्य प्रजाति – समाधान समृद्धिपूर्वक व्यवस्था में जीने वाला जागृत मानव।

समुच्चयात्मक – समग्रता के अर्थ में।

सविपरीत – समाधान का विपरीत, समस्यायें।

सत्यसंकल्प – सह अस्तित्व सहज परम सत्य को प्रमाणित करने का संकल्प।

सत्यपूर्ण – सहअस्तित्व में अनुभव पूर्ण।

सहजता – स्पष्टता एवं प्रमाणिकता।

– आडम्बर तथा रहस्यता से मुक्त व्यवहार, रीति, विचार एवं अनुभव की एकसूत्रता।

– स्वभाव गति, जागृति व समाधान संपन्न स्वभाव गति।

सहजावृत्ति – सत्ता में अनुभव निरंतरता।

– जागृति सहज प्रवृत्ति प्रमाण।

सत्य साक्षी – अनुभव मूलक विधि से जीना।

समाहित – समाया हुआ।

सचेष्ट – स्वयं स्फूर्त विधि से क्रियाशील।

सजातीय – एक जाति सहज समग्र

संभ्रासित – उत्सवित।

समाधान – सहअस्तित्व सहज व्यवस्था गति में निरंतरता, त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, ज्ञान

विवेक विज्ञान सहज प्रमाण।

सहायक गुण – पूरकता, उपयोगिता।

सप्राण – श्वास लेना–छोड़ना, स्पंदनशील रहना।

समुचित – पूर्णता के अर्थ में उपयोगी।

समुचित साधन – सदुपयोग और प्रयोजनशीलता में अर्पण योग्य।

– मानवीयता पूर्ण व्यवहार को संतुलित समृद्ध एवं विकास पूर्ण बनाने के लिए प्रयुक्ति।

समाज चेतना – जागृति पद मानव चेतना।

सम्यक – पूर्णता।

समाधानकारक – जागृत मानव परंपरा।

समत्व – सर्वशुभ के अर्थ में किया गया कायिक वाचिक मानसिक क्रियाकलाप।

सम्यकता – पूर्णता।

सजीव विचार– वर्तमान में परंपरा के रूप में प्रमाणित करने योग्य विचार अनुकरणीय। अनुभव प्रमाण परम्परा।

सप्राण कोशिका – प्राण कोशिकाओं से रचित रचनायें।

सम्यक व्यवस्था – पूर्णता के अर्थ में की गई व्यवस्था क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता।

समीचीन उपक्रम – पास में पाये जाने वाले उपक्रम।

समुचित उपक्रम –सदुपयोगिता प्रयोजनशीलता रुप में नियोजित होने वाले उपक्रम।

सारक – जंगल समूह होने एवं जीव शरीर, मनुष्य शरीर पोषक।

– प्राण पोषक वनस्पति एवं तत्व।

सार्वभौमता – संपूर्ण धरती पर मानव परम्परा में स्वीकृत सार्थक संतुलित न्यायपूर्ण व्यवस्था। परस्पर न्याय समाधानपूर्ण विधि सहज स्वीकृत और प्रमाण मानव परम्परा में अखण्ड समाज स्वीकृत सहित सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण, समाज न्याय सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था दस सोपानीय। धरती में सभी स्वीकारने योग्य आवश्यक सन्तुलन के अर्थ में।

सार्वभौमिकता – अस्तित्व सहज, विकास, जीवन सहज, जीवन–जागृति सहज, रासायनिक और भौतिक रचना सहज प्रक्रिया और उसका सूत्र व्याख्या और उसका प्रकाशन।

सार – ज्ञान रूप में सहअस्तित्व ज्ञान, व्यक्ति के रूप में समझदारी, परिवार के रूप में समाधान समृद्धि अखण्ड समाज के रूप समाधान, समृद्धि, अभय, सार्वभौम व्यवस्था अथवा परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था के रूप में वैभव समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व प्रमाण।

साधना – समझने के लिए साधना, अनुभवपूर्वक समझने के अनन्तर प्रमाणित करने के लिए साधना, समझदारीपूर्वक प्रमाणित करना।

– मन वृत्ति चित्त बुद्धि को आत्मानुगामी बनाने योग्य क्षमता की प्रस्थापना।

साहस – सत्य सहज प्रमाणों के प्रमाणित करने की परम्परा।

साक्ष्य – प्रमाण सहित स्वीकृत प्रस्तुति।

साक्षात्कार - अस्तित्व में वस्तु सहज रूप में, अस्तित्व में नाम से इंगित वस्तु स्पष्ट होना।

साधार ज्ञान - नियम और प्रक्रिया से।

सामान्य आकांक्षा - आहार, आवास एवं अलंकार की आवश्यकता।

सार्थक - जीवन मूल्य मानव लक्ष्य सम्पन्नता सहज परंपरा।

साम्य - सर्वमानव के साथ समान रूप में प्रमाणित।

साम्यता - मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था की एकात्मता, एकरुपता।

- न्याय नियम व प्रामाणिकता में एकरुपता।
- मानवीय आचरण, व्यवहार, विचार में एकरुपता।
- स्वराज्य और स्वतंत्रता में एकरुपता।
- निपुणता, कुशलता और पांडित्य में एकरुपता।
- सतर्कता, सजगता में एकरूपता।
- मानवीयता पूर्ण संस्कारानुषंगीयता में एकरूपता।
- मनुष्येतर जीव प्रकृति में वंशानुषंगीय एकरूपता।
- प्राणावस्था में बीजानुषंगीय एकरूपता।
- पदार्थावस्था में परिणामानुषंगीय एकरूपता (परिणत प्रत्येक पद स्थिति, गति में एकरूपता)।

साधक - साधन सहित साध्य को पाने का अधिकार सम्पन्न व्यक्ति।

साधन - उत्पादित वस्तु प्राकृतिक ऐश्वर्य।

- साध्य को पाने हेतु = समुचित प्रयुक्ति।

साध्य - मानव लक्ष्य जीवन मूल्य सहअस्तित्व में अनुभव, समाधान।

सामरस्यता - एक-दूसरे के साथ अर्थ संगत, व्यवहार व्यवस्था संगत।

- परस्परता में विकास, पूरकता, उदात्तीकरण संक्रमण क्रिया का वर्तमान।
- परस्पर विकास और रचना क्रम में निरंतर गति।
- व्यवहार, विचार और अनुभव में निर्विरोध गति और उसकी निरंतरता।
- संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में पूरक गति।

सामन्जस्य - व्यवस्था से सूत्रित।

सार्थकता सहज सम्पन्नता - पूरकता व उपयोगिता सहज प्रमाण।

साथी - जिम्मेदार दायित्व वहन करने वाला।

साकार - वर्तमान रूप में प्रमाण।

सामयिक - निश्चित क्रिया का वर्तमान।

सामयिक तथ्य - परिणामता।

सान्निध्य - समीप में होना, निकटतम परस्पर अस्तित्व।

सापेक्षवाद - संपूर्णता सहज अपेक्षा परस्परता में परीक्षण पूर्वक सत्यता में पहचानने के लिए तर्कसंगत संवाद, निष्कर्षों को प्रयोग पूर्वक प्रमाणित करना। प्राकृतिक घटनाओं को यांत्रिक प्रयोगों के साथ सन्तुलित बनाये रखने

हेतु निष्कर्ष आंकलन प्रस्तुत करना।

साभिमुख विधि – स्वयंस्फूर्त विधि से सम्मुख होना समाधानित प्रयोजित होना।

साम्य ऊर्जा – व्यापक वस्तु।

सापेक्ष शक्ति – दूसरे की सहायता या अस्तित्व के बिना जिस शक्ति की उत्पत्ति अथवा प्रकटन न हो।

सारभूत – व्यवहार में प्रमाणित होने का सूत्र व्याख्या।

साक्षात्कार – अस्तित्व में वस्तु के रूप में समझा हुआ निश्चयन सहित प्रमाण।

सामाजिकता – मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या के अनुसार जीना।

– सहअस्तित्व जिसके लिए संपर्क एवं संबंधों में निहित मूल्यों का निर्वाह।

सामाजिक अखण्डता – मानवीय संस्कृति सभ्यता। सह अस्तित्व समाधान, समृद्धि एवं अभयता का प्रकाशन।

सामग्री – अनुभव संपन्न होने के लिए समुचित साधन, अनुभव के अनंतर प्रमाणित होने के लिए समुचित साधन।

– जीने का साधन।

सायुज्य – जागृति सहज इष्ट पूर्वक धरती में होना।

सानुकूलता – जागृति के लिए सहयोगी विधिपूर्वक गतिशीलता।

सारूप्यता – जागृति दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज परंपरा।

सालोक्यता – धरती पर सर्वमानव देवचेतना सम्पन्न होना।

सामान्यीकरण – विशेष, आरक्षण व्यक्ति एवं समुदाय चेतना से मानव चेतना सहज सामान्यीकरण।

साम्यसत्ता – व्यापक वस्तु में जड़-चैतन्य सहज वैभव परंपरा।

साम्यस्थिति – सहअस्तित्व स्थिति में, से, के लिए सन्तुलन सहज वर्तमान।

सान्निध्यानुभूति – जागृत मानव सान्निध्य, समीप में ज्ञानार्जन।

साक्षी – पूर्णता सहज दृष्टि, घटनाओं का सत्यापन, व्यवस्था में जीने का प्रमाण।

सामर्थ्य – निपुणता, कुशलता, पांडित्यपूर्वक जीना।

सानुकूलता – परम्परा सहज प्रमाण, जागृत परम्परा सहज प्रमाण, जागृतिपूर्ण परम्परा सहज प्रमाण, निपुणता कुशलता पांडित्यपूर्ण परंपरा।

स्थिति – सहअस्तित्व सहज नित्य स्थिति।

सिद्ध – प्रमाण, प्रमाण सिद्ध, अस्तित्व सिद्ध, विकाससिद्ध, जागृति सिद्ध।

स्थितिपूर्ण – व्यापक वस्तु।

स्थिति सत्य – सत्ता में संपृक्त प्रकृति।

स्थितिशील (ता) – व्यापक वस्तु में जड़-चैतन्य प्रकृति होना, वर्तमान होना।

सीमा – सत्ता में संपूर्ण वस्तु सभी ओर से सीमित रहना।

– इकाई धर्मीयता (रूप गुण स्वभाव धर्म)।

सिद्धांत – प्रयोग में, व्यवहार कार्य में प्रमाणित होने योग्य सूत्र

व्याख्या।

– नियति–क्रम–सिद्ध।

– प्रमाणों की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

– प्रामाणिकता पूर्ण सूत्र।

स्थिति परख – स्थिति सत्य के आधार पर स्वीकार किया गया निर्णय, निश्चय।

सिद्ध होना – दृष्टा पद प्रतिष्ठा, प्रमाणित होना।

सीमान्त – सीमा के अन्तर्गत।

सीमानुर्वती – मानवीयतापूर्ण मर्यादा में जीना।

सुगंध – गंधग्राही क्रिया में स्वीकृति।

सुन्दर – प्रयोजन सहज आवश्यकता पूरकता और उपयोगिता।

सुन्दरता मूल्य – संस्कृति सभ्यता का उत्प्रेरकता तथा उपयोगिता की सहयोगिता।

सुरक्षा – अखण्ड समाज गति में सभी अवस्थाएं परम्परा के रूप में सन्तुलित होना, रहना।

– मानवीय स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार की अक्षुण्णता।

– तन–मन–धन रूपी अर्थ से अन्य का विकास, पोषण, संरक्षण होना तथा विपन्नता, कष्ट, दुख, दरिद्रता को दूर करने के लिए सहायता करना।

सुयोग्य – अभिव्यक्ति, संप्रेषणा में पारंगत।

सुदूर – परम्परा सहज विधि से वर्तमान में समाधान।

सुखद – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रभाव

क्षेत्र प्रमाण परंपरा।

सुदृढ़ – सह–अस्तित्व में जागृति सहज परंपरा।

सुनिश्चित – सार्थकता फलित होने के लिए किया गया निश्चयन।

सुख शांति – समाधान समृद्धि संपन्नता।

सुख – समस्या से मुक्ति समाधानयुक्त वर्तमान।

– न्याय के प्रति निष्ठा और निर्विरोधिता।

– समाधान। (उत्पादन + विनिमय सुलभता रुपी समाधान)

– विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक रुपी पूर्ण विचार शैली–समाधान।

सुखी – न्यायपूर्ण व्यवहार में रत।

सुरक्षा विधि– व्यवस्था में संतुलन।

सुदूर विगत – बहुत पहले बीता हुआ।

सुविधा – जागृति सहज प्रमाण गति में सुलभता।

सुलझन – समाधान के रूप में परिणत।

सुलभ – शिक्षापूर्वक सर्वसुलभ होना।

सुखधर्मी – मानव में समाधान = सुख।

सुषुप्ति – गहरी निद्रा।

सुलभता – सभी को उपलब्ध होना।

सुकृति – विकास और दृष्टा पद, जागृति संपन्न परंपरा सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन।

– न्यायपूर्वक किये गये आचरण एवं व्यवहार।

सुकर्म – मानवीयता पूर्ण कर्म।

सुकाम – मानवीयता से अतिमानवीयता के लिये उत्कट इच्छा।

सुमति – सुकर्म, सुशास्त्र एवं सुविचार से सम्पन्नता।

सुविचार – विधि विहीत विचार अर्थात् मानवीयतापूर्ण विचार।

सुसंस्कृति – मानव संस्कृति, जागृत संस्कृति, अनुभव मूलक संस्कृति, अखण्डता सहज संस्कृति।

सुबोध – सत्य बोध।

सुखप्रद – त्व सहित व्यवस्था के रूप में होना।

सुखकारक – समाधान गति सहज।

सुखोदय – भ्रम से जागृति में संक्रमण, प्रणाली समस्या से समाधान में परिवर्तीकरण।

सुचक्र – ज्ञान विवेक विज्ञान सम्मत समाधानपूर्ण योजना कार्य योजना कार्यक्रम फल परिणाम ज्ञानानुकूल होना।

सुपथ – सर्वशुभ मार्ग अखण्ड राष्ट्र समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था सहज वर्तमान।

– समाधान की ओर निश्चित दिशा।

सुयोग – परस्परता में जागृत मानव का मिलन, श्रेष्ठता के रूप में संवर्धन।

सुशास्त्र – विधि नीति तथा आचार संहिता का संयुक्त प्रकटन।

सुशील – मानवीयतापूर्ण आचरण सहज प्रमाण।

सुयोजना – सार्थक योजना।

सूत्र – सत्य सहज रूप में प्रमाणित करने की प्रेरणा, कम शब्दों से अर्थ बोध कराने योग्य वाक्य।

– नियम और प्रक्रिया का संक्षिप्त भाषाकरण, यर्थाथता का स्त्रोत।

सूर्य ऊर्जा – सूर्योदय के अनन्तर परावर्तित उष्मा स्रोत।

सूक्ष्म – अणु, परमाणु एवं परमाणु अंश।

सूक्ष्मता – बारीक, छोटा से छोटा स्वरूप।

सूक्ष्मतम – परमाणु एवं परमाणु अंश।

सूक्ष्म पिण्ड – (जीवन में) अनुभव, बल, चिंतन सम्पन्न चित्त, वृत्ति एवं मन का संयुक्त रूप।

सेवा – परस्परता में परस्पर आवश्यकीय सहायता, तन मन धन से किया गया पूरकता।

– निश्चित सहयोगी प्रक्रिया में, से, के लिए प्रतिबद्धता पूर्वक किया गया, पूरक क्रियाकलाप।

सेतु – नदी नाले को पार करने का सुगम मार्ग।

सेवक – कर्त्तव्य परायण।

सेवाकारी – सेवा करने वाला, कर्त्तव्य निर्वाह करने वाला।

सोपान – सीढ़ियाँ।

सौजन्यता – मानव सहज समानता का स्वीकृतिपूर्वक किए गए संप्रेषणा।

– सहकारिता।

सौहार्द्र – सह अस्तित्व सहज मर्यादा।

सौन्दर्य – व्यक्तित्व, मानवीय आहार, विहार, व्यवहार, विचार सम्पन्नता सहित प्रमाण।

– मानवीयता पूर्ण आहार, विहार, व्यवहार।

– मानवीयता पूर्ण आचरण।

– प्रामाणिकता पूर्ण व समाधान पूर्ण अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन।

सौम्यता – स्वस्थ मानसिकता के साथ प्रस्तुति सर्वतोमुखी समाधान, हर समस्या का समाधान।

– स्वेच्छा से स्वयं का नियंत्रण।

सौभाग्यमय – सर्वशुभ कार्य व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी।

सौभाग्यदायी – सर्वशुभकारी।

सौहार्द्रता – परस्पर पूरकता।

सौहार्द्रभाव – सरलतापूर्वक सर्वशुभ मार्गदर्शन।

संचार – भूचर, खेचर, जलचर, भूमि पर, जल पर, आकाश में संचार।

संक्रमण बिंदु – गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

संगतिबद्ध – पूर्णता के अर्थ में जुड़ी हुई कड़ियाँ।

संकोचन – पूर्णता के अर्थ में कांक्षित रहना। भ्रम की पीड़ा से मुक्ति की स्वीकृति।

संख्या – संपूर्णता को पाने की ख्याति।

संख्याभेद – वस्तु संख्या भिन्न-भिन्न राशि के रूप में।

संवर्तन – पूर्णता के अर्थ में वर्तमान।

संक्रमण – स्वभाव, गुण में गुणात्मक परिवर्तन।

– गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता।

संक्रामकता – मानव में विश्वासघातवादी क्रियाकलाप।

संवेदित – ज्ञानेन्द्रियों में पाये जाने वाले सूचना।

संकल्प – अनुभव सहज प्रमाण को प्रमाणित करने का निष्ठा दृढ़ता उद्देश्य।

– सम्यक प्रकार से की गई स्वीकृति, सत्य या सत्यता का बोध और स्वीकृति।

संपर्कात्मक – मानव परंपरा मानवत्व के रूप में संबंधों के साथ वैभव।

संकीर्णत्व – व्यक्तिवादी विचार, संवेदनशीलता पूर्वक जीना।

संरक्षणात्मक – सर्व संरक्षण के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था।

संबंधों की पहचान – परस्परता में प्रयोजन सहज पहचान सहित संबंधों की पहचान निर्वाह।

संहिता – अनुभव गामी सूत्र व्याख्या।

संहिता के अनुसार – व्यवस्था में से सहमत प्रस्तुति।

संप्रेषणशील – परम्परा में बोध कराने योग्य प्रस्तुति।

संधान – जोड़ना, जुड़ना।

– साधन सहित प्रक्रिया जिससे उपयोगिता एवं सुन्दरता मूल्य का उपार्जन हो।

संपूर्ण मानव – धरती में निवास करने वाले सभी नर-नारी।

संस्कार – जीवन में पूर्णता की अपेक्षा में कारित एवं स्वीकृत

गुणात्मक प्रस्थापनाऐं।

सुसंस्कार – विकास योग्य मूल प्रवृत्तियाँ।

संस्कृति (स्वरूप) – पूर्णता के अर्थ में की गई कृतियाँ, दर्शन वाद, शास्त्र, मानवीयतापूर्ण व्यवस्था में भागीदारी।

– पूर्णता की परंपरा, मानवीयता पूर्ण आचरण।

संरक्षक – हर संतान के लिए माता-पिता संरक्षक पोषक।

स्पंदनशील – सांस लेने की क्रिया संपन्न होना।

संपादन – प्राकृतिक वस्तुओं को उपयोगिता योग्य बनाना।

संपादित – प्रतिफल में प्राप्त ।

संकेत – निर्देश, पूर्णता के अर्थ में ऊंगली न्यास।

संघर्ष – संदिग्धता एवं उद्विग्नता की पराकाष्ठा। इसके मूल में वर्ग चेतना का रहना अनिवार्य हैं। परस्पर सविरोधी प्रक्रिया।

सन्निहित – पूर्णता के अर्थ में समाविष्ट।

संपन्नता – समाधानपूर्वक समृद्ध रहना।

संक्रमित – जीवन पद में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

– पीछे की स्थिति में जाने से मुक्ति चैतन्य इकाई।

संपदा – समाधान समृद्धि।

– पूर्णता के अर्थ में प्राप्त प्राप्तियाँ।

संरक्षित – पूर्णता के अर्थ में परम्परा के रूप में गतिशील।

संरक्षण – विकास के क्रम में निर्बाधता।

संस्था – पूर्णता के अर्थ में सूत्र व्याख्या सहित कार्यक्रमों को सम्मिलित रूप में स्वीकारना।

संश्लेषण – प्रवेशपूर्वक, भीगा हुआ।

संवेदना – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों का प्रभाव।

– जाना हुआ को मानने के लिए, पहचाना हुआ का निर्वाह करने के लिए स्वयं स्फूर्त, जीवन सहज प्रक्रिया।

– सभी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बाह्य संकेतो को ग्रहण करने की क्रिया।

– अव्यवस्था की समस्या को दूर करने के लिए तत्काल तैयार होना।

– विकास व जागृति के प्रति तत्परता।

संवेदनशीलता – ज्ञानेन्द्रियों का कार्य व्यवहार में प्रयोग।

संदेश – पूर्णता के अर्थ में आदेश।

सन्यास – स्वअस्तित्व अभिमान से मुक्ति सहज प्रमाण।

संप्राप्त – पूर्णता के अर्थ में संपन्न और प्रमाणित।

संज्ञानशीलता – समझदारी, ईमानदारी, ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्नता का प्रमाण।

संतुलन – पूर्णता के अर्थ में प्रवृत्ति निष्ठा और प्रमाण।

– त्व सहित व्यवस्था सहज निरन्तरता व परंपरा।

– स्वतृप्ति क्रम में, स्वभाव गति का प्रकाशन। स्वत्व का सदुपयोग, सुरक्षात्मक क्रिया।

संपूर्ण – सहअस्तित्व सहज अस्तित्व।

संचेतना – पूर्णता के अर्थ में ज्ञान विवेक विज्ञान सहज प्रमाण, ज्ञान संपन्न, जागृत चेतना, मानवीय चेतना।

– मनुष्य में जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने की क्षमता , योग्यता, पात्रता सहित क्रिया कलाप।

संशय – सत्य और सत्यता का बोध होने में असमर्थता।

संगठन – पूर्णता के अर्थ में गठित होना।

– संपूर्णता के अर्थ में रासायनिक-भौतिक रचना, मानवीयता सहज आचरण, व्यवहार, उत्पादन एवं विनिमय पूर्वक व्यवस्था (वर्तमान में विश्वास) का प्रकाशन।

– जड़ चैतन्य का संयुक्त साकार रूप में मनुष्य अपनी शुभाकांक्षा -जैसे- समाधान, समृद्धि। अभय, सह-अस्तित्व सहित स्वराज्य और स्वतंत्रता में, से के लिए की गई संपूर्ण अवधारणा सहित, प्रतिज्ञा व निष्ठा सहित अनुबंध।

संबोधन – पूर्णता के अर्थ में सत्य बोध कराना, यर्थाथता का स्पष्टीकरण या पूर्ण विश्लेषण।

संप्रेषणा – पूर्णता के अर्थ में प्रस्तुत होना।

– पूर्णता को इंगित कराने वाली क्रिया अर्थात् गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता को इंगित कराने वाली क्रिया।

संप्रभुता – क्रियापूर्णता आचरणपूर्णता सहज वैभव (समाधान

समृद्धि अभय सहअस्तित्व प्रमाण परंपरा)।

– पूर्णता के अर्थ में पारंगत प्रभुता अधिकार संपन्नता प्रमाण संपन्न।

– प्रबुद्धता सहित स्वयं व्यवस्था के रुप में अभिव्यक्ति, समग्र व्यवस्था में भागीदार होने की सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

संपृक्त – घिरा हुआ, डूबा हुआ, भीगा हुआ क्रिया।

– निमग्न, मग्न, भीगा हुआ, आश्लिष्ट, संश्लिष्ट।

संतुष्टि – संतोष और समाधान।

संतान – पूर्णता के अर्थ में अग्रिम पीढ़ी।

संभव – पूर्णता के अर्थ में अनुकूल परिस्थिति।

संयोजन – पूर्णता के अर्थ में योजना।

संज्ञा – नाम।

संचालन – पूर्णता के अर्थ में गति प्रदान करना।

– गम्यस्थली प्रयोजन समाधान के लिए गतिशीलता।

– संगठित रूप में नियंत्रित गति।

संरक्षण – परम्परा के रूप में बनाये रखना

संपन्नता – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण संपन्नता, समृद्ध रहना।

संतोष – समाधान, समृद्धि, अभय, सहज अनुभव, अभाव का अभाव।

– आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहित विवेक सम्मत

विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक रूपी पूर्ण विचार शैली।

संविधान – पूर्णता सहज प्रमाण परम्परा के अर्थ में प्रस्तुत विधान सूत्र व्याख्या।

संग्रहरत – आय को व्यय से मुक्ति दिलाते हुए सुखी होने का विचार और प्रक्रिया।

संपर्क – आगन्तुक मिलन।

– जिस परस्परता का निर्वाह ऐच्छिक है।

संगीत – पूर्णता के अर्थ में स्वर ताल लय पूर्वक किया गया अभिव्यक्ति।

संभावना – पूर्णता के अर्थ में सफल होने का अवसर।

संयोग – पूर्णता के अर्थ में मिलन।

संबंध – जिस परस्परता में, पूर्णता की अपेक्षा में प्रत्याशाएँ दायित्व एवं कर्त्तव्य पूर्व निर्धारित हों।

– पूर्णता के अर्थ में सहअस्तित्व सहज अनुबंध।

संयोजना – पूर्णता के लिए योजना।

संयोजित – पूर्णता के अर्थ में योजना प्रस्ताव।

संवेग – एषणाओं के प्रति उत्कंठा और संयोग से प्राप्त वेग, सरलता एवं अभिमान से रहित विचार व्यवहार पद्धति।

– संयोग से प्राप्त गति जैसे पदार्थावस्था से प्राणावस्था की गति-एक रासायनिक कोष, रासायनिक रस निश्चित उष्मा का दबाव संयोगिक परिवर्तन।

जीवनावस्था के जीव और ज्ञानावस्था के मनुष्य जो

जड़-चैतन्य के संयुक्त साकार रुप में है, जो रासायनिक रचना व परमाणु में विकास का संयोग है।

– रासायनिकता स्वयं एक संयोग है।

संवेगी – पूर्णता की ओर गतिशील।

संवहन – पूर्णता के अर्थ में विचार संपदा का वहन।

संबद्ध – जुड़ा हुआ।

संगत – संयोग से मिलन, उद्देश्य पूर्ति के लिए तत्परता, मानवीय लक्ष्य प्रमाणित होने के लिए विचार गोष्ठी स्वीकृत प्रमाण।

संगीतीकरण – एक दूसरे के साथ तालमेल, व्यवस्था में विश्वास, सार्वभौमता में विश्वास, विधिवत् जीवन, मानवीयतापूर्ण आचरण संपन्न जीवन, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

संप्रदाय – पूर्णता के अर्थ में प्रदान, जागृति के लिए मार्गदर्शन, जागृति सहित मानव परम्परा।

संगोष्ठी – पूर्णता के अर्थ में समाधान सहज सुलभता के लिए किया गया परामर्श सहित निर्णय।

– सामूहिक चर्चा।

संत – संतोष समाया हुआ मानव।

संवाद – पूर्णता के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

संसार – संपूर्णता व पूर्णता की ओर गतिशील प्रकृति।

संपूर्णता – सहअस्तित्व, इकाई वातावरण सहित संपूर्ण।

संपूर्ण भाव - अस्तित्व।

संयम - नियंत्रित कार्यक्रम।

संयमता - मानवीयतापूर्ण विचार व्यवहार एवं व्यवसाय।

संस्थान - पूर्णता के अर्थ में चिन्हित स्थान में नियंत्रित रहना।

संयम साधन - नियंत्रित अभ्यास।

संप्राप्ति - पूर्णता के अर्थ में प्राप्ति।

संक्रमणगामी - विकासक्रम।

सांस्कृतिक मर्यादा - दिखावा से दूर, यथार्थता, वास्तविकता सहज, प्रकाशन, यथार्थता, वास्तविकता को लोकगम्य कराने का तरीका।

संतृप्ति - अस्तित्व में जागृति जो जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने में निरंतरता हैं।

स्थान - रचना का विस्तार।

स्थापना - अप्रकाशित मूल्य को प्रकाशित करा देना।

स्थूल - अनेक अणु का संगठित पिण्ड।

स्थूल पिंड - पँचेन्द्रियों सहित शरीर।

स्थिति - अविनाशीयता, वर्तमान।

स्थिति सत्य - त्रिकालाबाध अस्तित्व।

- सत्ता में संपृक्त प्रकृत्ति।

स्थिति पूर्ण - सत्ता।

स्थिति शील- प्रकृत्ति।

स्पष्ट ज्ञान - वस्तुस्थिति सत्य एवं वस्तुगत सत्य का ज्ञान।

सांद्रता - सघनता, सघन।

सांगोपांग - स्पष्टता प्रयोजनीयता के साथ प्रस्तुति।

स्वराज्य - परिवार मूलक स्वराज्य।

स्वरूप - रचना सहज रूप और जीवन सहज रूप संयुक्त रूप में मानव स्वरूप।

- स्वयं का रूप।

स्वानुशासन- स्वस्फूर्त व्यवस्था गति।

- प्रामाणिकता, समाधान, न्याय, नियम पूर्वक संपूर्ण आयाम, दिशा कोण, परिप्रेक्ष्यों में स्वयं स्फूर्त अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन किया।

स्वर्ग - सार्वभौम संबंध निर्वाह सहज व्यवस्था सहज परंपरा क्रम में धरती ही स्वर्ग, जागृत मानव ही देव चेतना सहित वर्तमान में विश्वास के अर्थ में धर्म सफल, सर्वमानव सुखी होने रहने।

- विश्वास सुख, शांति संतोष की निरंतरता, मनुष्य की परस्परता में स्नेह, निर्विषमता, समाधान एवं समृद्धि।

स्वावलम्बी - स्वयं स्फूर्त विधि से उत्पादन करने वाला परंपरा।

- उत्पादन कार्य में कुशलता, निपुणता, पाण्डित्य सहित परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

स्वास्थ्य - शरीर के लिए आवश्यकीय तत्वों की पाचन पूर्वक उपलब्धि का प्रकटन ।

स्वास्थ्य संयम- जीवन जागृति सहित प्रमाणों को मानव परम्परा में प्रमाणित करने योग्य शरीर सहित प्रमाणित होना, शरीर का दृष्टा जीवन।

स्पर्श - परस्पर छूने का स्वीकृति संवेदना।

स्वभाव - मानवीयतापूर्ण स्वभाव धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा।

- स्वयं की मौलिकता, नियतिक्रम प्रतिष्ठानुरूप मौलिकता।

स्वभाव गति - स्वमौलिकता की निरंतरता जिसमें विकास की संभावना सन्निहित हो।

स्वभावात्मक सजातीयता - जीवावस्था में।

स्वतंत्रता - मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी, स्वयं में से के लिए ज्ञान विवेक विज्ञान सम्मत समाधान सहजता को स्वयंस्फूर्त विधि से प्रमाणित करना, कराना।

- पूर्णता की निरंतरता, मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था की अक्षुण्णता।
- प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा व प्रकाशन किया।
- स्वानुशासन पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति पूर्वक किया गया कार्य- व्यवहार - विचार विन्यास।

स्व (बोध) - होना, त्व सहित आचरण रूप में होना, स्वयं का बोध, जीवन एवं शरीर का बोध पूर्वक प्रमाण।

स्वेदज - पसीने से अवतरित कीड़े-मकोड़े, कीट-पतंग।

स्थापित मूल्य- संबंधों में स्थापित मूल्य नौ है- कृतज्ञता , गौरव, श्रद्धा , प्रेम, विश्वास वात्सल्य, ममता, सम्मान और स्नेह।

स्वयं - जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव जिसका स्पष्ट बोध प्रमाण होना।

- मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा का संयुक्त रूप।

स्वयं स्फूर्त - समझदारीपूर्वक, ईमानदारी सहित सर्वतोमुखी समाधान सहित किए गये जिम्मेदारी, भागीदारी।

स्वधन - प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार रूप में प्राप्त धन।

स्वनारी/पुरुष - परिवार और संबंधित बन्धु जनों के सहमति से व्यवस्था में जीने के लिए प्रतिज्ञा सहित दाम्पत्य रूप में जीने की प्रतिज्ञा, स्वीकृति समारोह पूर्वक अंगीकार।

स्नेह - परस्पर समान अभ्युदय, नि:श्रेयस अर्थात् जागृति का प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए सहज स्वीकृति और प्रतिज्ञा।

- परस्परता में एक सा जागृति और समाधान सहज अपेक्षा प्रमाण।
- न्यायपूर्ण व्यवहार में निर्विरोधिता।
- संतुष्टि में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त मिलन, निरंतरता।

स्मारक - स्मरणार्थ रचित रचना।

स्वामी - साथी दायित्व सहित स्वायत्त, स्वयं में से के लिए प्रमाणित।

स्वकीयत्व – अनन्यता पूर्वक प्रेम, स्नेह वात्सल्य अभिव्यक्ति।

स्वागत – श्रेष्ठता सहज स्वीकृति।

स्व स्वरूप – स्वयं का रूप, जीवन रूप जीवन वैभव–जीवन महिमा–जीवन प्रयोजन सहज स्पष्टता प्रमाण।

स्वराज्य – न्याय सुलभता, विनिमय सुलभता, उत्पादन सुलभता का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा।

– मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा संस्कार, स्वास्थ्य संयम, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन में दिशा और निपुणता, कुशलता व साधन, विनिमय कोष, व्यवस्थाओं का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा।

स्मरण – पूर्णता के अर्थ में शब्दों की स्वीकृति आवश्यकतानुसार प्रयोग करने की क्रिया।

स्पंदन – श्वसन क्रिया, मधुरिम, सार्थक, सउद्देश्य गति प्राण कोषाओं सहज कार्यगति विधि।

– संकोचन प्रसारण क्रिया।

स्फुरण – ज्ञान विज्ञान विवेक पूर्वक निश्चियन सहित समाधान सहित किया गया कार्य व्यवहार परंपरा।

– विकास के लिए प्राप्त प्रेरणा।

– अनुभव, प्रमाण, बोध, संकल्प, चिंतनपूर्वक प्रमाणित करने के अर्थ में किया गया सम्पूर्ण प्रयास, प्रवृत्तियाँ समाधान है (के अर्थ में)।

स्वत्व – होना, चेतना सहज आचरण करना।

– स्वाधीनता सहित प्रयोजित होना।

– मानव में मानवत्व, जीवों में जीवत्व, वनस्पतियों में वनस्पतित्व, पदार्थों में पदार्थत्व।

– अस्तित्व सह–अस्तित्व सहज प्रकाशन।

– स्वत्व स्वतंत्रता, अधिकार में अविभाज्य वर्तमान।

स्पर्शेन्द्रिय – छूने से स्वीकृति अस्वीकृति क्रिया संपन्न बोध होना।

स्वादन – रूचि पूर्वक अनुकूल तत्व का ग्रहण।

स्वाध्याय – स्वयं को पहचानने, समझने के लिए किया गया अध्ययन सहज स्वीकृति शब्द वाक्य।

स्वाधीन – स्वयं के अधीन।

स्वर – निश्चित ध्वनि प्रसारण, निश्चित तर्ज पर ध्वनि प्रसारण, निश्चित दबावपूर्वक लयपूर्वक ध्वनि प्रसारण।

स्तुषी – बीज से वृक्ष बनने के लिए एकत्र रचनाविधि संपन्न प्राणकोषाएं अंकुरण के पूर्व स्थिति।

स्वप्न – प्रमाणित न होने वाले परिकल्पनाएं।

– आधारहीन कल्पना।

स्वायत्त – स्वयं के आधार पर।

स्वीकृति – अपनाया गया।

स्फूर्ति – गति के साथ।

– शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इंद्रियों के तृप्ति के लिए प्रयत्न, कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में।

स्वास्थ्य संरक्षण –जागृति सहज अभिव्यक्ति योग्य शरीर।

स्वधन – प्रतिफल, परितोष, पुरस्कार से प्राप्त धन।

स्वराज्य – मानव का वैभव परम्परा अखण्ड राष्ट्र समाज व सार्वभौम व्यवस्था सहज।

स्वरूप विधि – गठन एवं रचना, जागृति सहज प्रमाण।

स्वभावगति – त्व सहित व्यवस्था सहज भागीदारी।

स्वान्तः सुख – सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण (स्वयं में सुखी होना)।

स्वयं स्फूर्त विधि – स्वानुशासन पूर्वक जागृति सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन।

स्वार्थ – मानवीय चेतना विधि से स्वयं का अर्थ (जागृति)।

– अर्थ की विशालता को संकीर्णता में सीमित करना।

स्वाध्याय – स्वयं सहित अस्तित्व का अध्ययन व प्रमाण।

स्वचालित – जीव संसार, मानव संसार, भूचर, जलचर, खेचर।

स्नायु – नस जाल सहज क्रियाकलाप।

स्थलगत – भूभाग में समाया हुआ।

स्मारणार्थ – बीती हुई घटनाएं बारंबार मन में आना।

स्वस्थ मानस – अनुभूवपूत मानस, अनुभव से अनुप्राणित मानव, अनुभव को प्रमाणित करने का मानस।

स्वर्णिम – सफलता शीघ्र अप्रत्याशित सफलता सहज स्वीकृति उत्सव।

स्वर्मिण अध्याय –सफलता सहज परम्परा।

स्वरित – सार्थकता के अर्थ में स्पष्ट करना, निश्चित तर्ज पर ध्वनित करना, निश्चित आवश्यकता के अर्थ में ध्वनि स्पष्ट करना।

स्वीकार – अस्तित्व में वस्तु रूप में होने का प्रमाण प्रस्तुत करना।

– पूर्णता, आवश्यकता, अनिवार्यता की अपेक्षा में किया गया ग्रहण।

स्वावलंबी – आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने वाला।

स्वीकृत – स्वीकार किया गया।

स्वयं में विश्वास – दृष्टा पद जागृति पूर्वक अनुभव प्रमाण।

स्वाभाविक – स्वभाव गति संपन्न।

स्वराज्य नीति – अर्थ का सुरक्षात्मक नीति, कार्य विधि।

स्वजातीय – मानव जाति एक, गाय-जाति एक, भेड़-बकरी जाति एक आदि।

स्थापन – वस्तु स्थापन, गृह स्थापन, मार्ग स्थापन, जलाशय स्थापन, यंत्र स्थापन आवश्यकता के अनुसार।

स्वर्गताम् – स्वर्ग के रूप में।

स्वयं सिद्ध – नियति विधि से प्रकट चार अवस्थायें।

स्मृति – भूतकाल की घटनाओं का विधिवत् सुनने,बारंबार दुहराने की क्रिया।

– जाने हुए की आवश्यकतानुसार अभिव्यक्ति।

स्थूल – परमाणु, अणु रचना प्रमाण कोशाओं से रचित रचना।

स्वास्थ्य संयम – जागृति सहज प्रमाण प्रस्तुतिकरण।

सृजन क्रिया- उत्पादन क्रिया।

सृजन - इकाई + इकाई।

- संतान के रूप में, उत्पादन के रूप में।

सृजेता - उत्पादन कार्यकर्त्ता।

सृष्टि - पदार्थ के संगठन-विघटन, शोषण पोषण एवं गुणात्मक परिवर्तन समुच्चय।

स्त्रावी - किरणों को प्रसारित करने वाला।

स्त्रोत - निरंतर उपलब्धता।

समाज - ऐसी मानव परंपरा जो पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता और उसकी निरन्तरता को जानना मानना, पहचानना और निर्वाह करने की क्रिया को प्रमाणित करती है।

- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था शिक्षा-संस्कार सहित समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में अभिव्यक्ति , सम्प्रेषणा , प्रकाशन परंपरा।

- पूर्णता को पाने के लक्ष्य में निश्चित कार्यक्रम नीति-प्रक्रिया का अनुसरण करने वाली मानव जाति।

समाज-मूल्य - स्थापित मूल्य और शिष्ट मूल्य।

- स्थापित मूल्य- कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य, ममता, सम्मान, स्नेह।

- शिष्ट मूल्य-सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता सौजन्यता, सहजता, उदारता, अरहस्यता, निष्ठा।

समाज लक्ष्य - समाधान, समृद्धि, अभयता और सह-अस्तित्व सहज वर्तमान।

- मावन संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था में सामरस्यता का वर्तमान।

- मानवीय शिक्षा-संस्कार परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और संविधान में सामरस्यता का वर्तमान ।

- स्वराज्य और स्वतंत्रता का वर्तमान।

समाधान - जानना मानना पहचानना व निर्वाह करने की क्रिया।

- क्यों और कैसा का उत्तर पाना।

- समस्याओं का निराकरण,विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक पूर्ण प्रणाली से सम्पन्न करने की क्रिया = मानव धर्म = सुख, शांति, संतोष आनंद।

समाधानात्मक भौतिकवाद - अस्तित्व में सम, विषम, मध्यस्थ क्रिया, बल, शक्ति, रचना व विरचना का विकास क्रम में पूरकता, उदात्तीकरण के रुप में समाधान सूत्र और व्याख्या।

- श्रम नियोजन, श्रम-विनिमय प्रणाली रूपी उत्पादन-विनिमय संबंधी समाधान सूत्र व व्याख्या।

- मानवीयता पूर्ण आचरण व्यवहार सीमा में (प्रत्येक वस्तु) आवश्यकताएँ संयत होने के आधार पर अथवा सत्य होने के आधार पर उपलब्धियों की संभावना, विपुल होने के रुप में आवश्यकता का समाधान प्रत्येक मनुष्य में अक्षय शक्ति, अक्षय बल जीवन

सहज अभिव्यक्ति होने के आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन, कम उपभोग के रुप में भौतिक समृद्धि का समाधान सूत्र और व्याख्या।

- प्राकृतिक ऐश्वर्य का मूल्य, अमूल्य होने के आधार पर वनस्पति, वन-खनिज (धरती) हवा, पानी पर एकाधिकार के भ्रम को दूर करने के रुप में, सह-अस्तित्व में समाधान सूत्र और व्याख्या।
- मानव में श्रम मूल्य की मूल पूंजी के आधार पर, श्रम मूल्य का मूल्यांकन सहित, वस्तु-मूल्य का निर्धारण समेत, लाभ-हानि युक्त विनिमय प्रणाली, पद्धति, नीति में समाधान सूत्र और व्याख्या।
- सम्पूर्ण रचना, विरचनाओं में पूरकता-उदात्तीकरण के आधार पर आवर्तनशीलता का समाधान सूत्र और व्याख्या।
- वस्तु की 'संयत आवश्यकता नियम' के आधार पर वस्तु के विपुल होने में समाधान।
- तन, मन रुपी धन का सदुपयोगिता के आधार पर ही सुरक्षा होने की यर्थाथता पर अभय रूपी समाधान सूत्र और व्याख्या।
- अस्तित्व ही सह-अस्तित्व के रुप में समाधान। विकास क्रम में प्रत्येक इकाई अपने त्व सहित व्यवस्था के रुप में समाधान। विकास, जीवन के रुप में समाधान। विकास, जीवन के रुप में संक्रमण पूर्वक समाधान। जीवन में गुणात्मक विकास-सतर्कता, सजगता के रुप में समाधान। रासायनिक-भौतिक

रचना व विरचनाएँ पूरकता, उदात्तीकरण के रुप में समाधान सूत्र और व्याख्या।

समाधान पूर्वक विचार - व्यापकता में अनुभव मूलक विचार आभास।

साम्राज्य - पूर्णता सहज वैभव।

साम्राज्य सिद्धि - सार्वभौमिकता में विचार व अनुभव अनुक्षण वीक्षण एवं उसका प्रमाण का प्रकाशन।

संरचना - संवेदनशील रचना अर्थात् आशा, विचार, इच्छा पूर्वक की गई रचना।

- संवेदनशीलता पूर्वक व्यवस्था के अर्थ में की गई रचनाएं।

संवर्तन - सम्यकता की ओर गतिशीलता और परिमार्जन एवं परिपूर्णता के लिए प्राप्त संकेतों का अनुसरण।

संवहन - पूर्णता के प्रति वेदना सहित गति वहन करना।

संविधान - मानव के लिए : प्रामाणिकता पूर्ण अनुभव बल विवेक और विज्ञान सम्मत विचार शैली। मानवीयता पूर्ण आचरण पद्धति सहित मूल्य मूलक और लक्ष्य मूलक प्रणाली समेत, तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक नीति सम्पन्न जीने की कला के सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रक्रिया का प्रावधान।

- निपुणता, कुशलता, पांडित्यपूर्ण कार्य करने, न्यायपूर्ण व्यवहार करने, प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण वाङ्मय प्रणाली के रुप में प्रबुद्धता और संप्रभुता को नियंत्रित, संयत, समृद्ध करने कराने के रूप में प्रभुसत्ता सूत्र

और व्याख्या सम्मत प्रक्रिया का प्रावधान।

– मानवीय आचरण, व्यवहार, विधि, विनिमय – प्रक्रिया, उत्पादन बाध्यता की सूत्र और व्याख्या रूपी संहिता।

संवेग – संयोग से प्राप्त से गति जैसे– पदार्थावस्था से प्राणावस्था की गति एक रासायनिक कोष रस निश्चित ऊष्मा का दबाव संयोगिक परिवर्तन है।

– जीवावस्था के जीव और ज्ञानावस्था के मनुष्य की गति जो – जड़ चैतन्य के संयुक्त साकार रूप में हो जो रासायनिक रचना व परमाणु में विकास का संयोग है।

– रासायनिक गठन स्वयं एक स्वयम् स्फूर्त संयोग है।

संवेदना – विकास व जागृति के प्रति वेदना (जिज्ञासा)।

– जाना हुआ को मानने के लिए, पहचाना हुआ का निर्वाह करने के लिए स्वयं स्फूर्त जीवन–सहज प्रक्रिया।

– सभी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बाह्य संकेतों को ग्रहण करने की क्रिया।

– अव्यवस्था के प्रति दुखित होना और उस समस्या को दूर करने के लिए तत्काल तैयार होना।

संस्कार – पूर्णता की अपेक्षा मानव के द्वारा की गई कृति जिसकी परंपरा नाम संस्कार, जाति संस्कार (मनुष्य जाति) कर्म एवं धर्म संस्कार के रूप में हो।

श

शरीर स्वस्थता – जीवन जागृति सहज प्रमाण, दृष्टापद, सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाणों को मानव परंपरा में प्रमाणित करने योग्य शरीर।

शरीर में जीवन्तता – जीवन शरीर को संचालित करने के लिए जीवंत बनाए रखना।

शब्द व्यूह – अनेक शब्दों का तरंग।

शरीर – सप्त धातुओं से रचित समृद्ध मेधस संपन्न शरीर मानव शरीर, जीव शरीर सप्त धातुओं से रचित मेधस संपन्न, इसको जीवन संचालित करता है, जीवंत बना कर रखना है, प्राणावस्था की रचनाएं प्राण कोशाओं से रचित बीजानुषंगी क्रम में स्पष्ट, स्वेदज संसार का शरीर रस से बनी है, रस मांस से बनी हुई है, रस, मांस, मज्जा से बनी हुई है, रस, मांस मज्जा, हड्डी से युक्त बनी हुई है, रस मांस मज्जा हड्डी स्नायु के साथ बनी हुई है, समृद्ध मेधस न होने के आधार पर ये स्वेदज कहलाते हैं ये सभी अवस्था के शरीर जलचर भूचर नभचर होते हैं समृद्ध मेधस सम्पन्न शरीर को जीवन संचालित करता है, तभी मानव के संकेतों को ग्रहण करता है ।

शब्द – नाम के रूप में शब्द, नाम किसी वस्तु क्रिया फल, परिणाम, स्थिति, गति के अर्थ में होता है, शब्द अक्षरों के योगफल में बनते हैं।

– एक से अधिक का संयुक्त घर्षण से उत्पन्न ध्वनि।

शरण – सदा के लिए स्वीकृति, मानवीयतापूर्ण आचरण स्वीकृति, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने की स्वीकृति।

– शांति की अपेक्षा में अनन्यता की स्वीकृति।

शरीर संतुलन – जागृति पूर्वक व्यवस्था सहज सार्वभौमता में भागीदारी।

शमन – क्लेश, दुख, समस्या का समाप्त होना, खत्म होना।

शक्ति – स्वभाव गति सहज रूप में प्रमाण।

शरीरगत – शरीर व्यवस्था क्रियावाही तंत्र–सांस लेना, हृदय धड़कना।

शरीर आयु मर्यादा – आयु के अनुसार ज्ञानार्जन शिक्षा संस्कार प्रमाणीकरण श्रमशीलता सर्वाधिक न्यूनतम।

सतयुग – जागृत मानव परंपरा काल।

शताब्दी – सौ वर्ष की अवधि।

शाकाहार – प्राणावस्था की वस्तुओं से आहार।

शास्त्र – स्वानुशासन के लिए प्रेरणा।

साश्वत सत्य – सह–अस्तित्व।

शाश्वत – सदा–सदा।

शिक्षण – शिक्षापूर्ण दृष्टि सहज विकास, जागृति की ओर दिशा, अध्ययनपूर्वक यथार्थ बोध निपुणता कुशलता का शिक्षण।

शिलापात – किसी धरती के वातावरण में विरल रूप में, भौतिक रासायनिक वस्तु अणु के रूप में होते हैं, उन पर ब्रह्माण्डीय किरणों का योग होने से अति उष्मा संपन्न

होना चुम्बकीय बलधारा के रूप में वृद्धि होना फलस्वरूप आसपास के अणुओं को एक करना, घनीभूत होकर धरती पर गिरना।

शिक्षा नीति – सहअस्तित्व बोध, जीवन बोध, मानवीयतापूर्ण आचरण बोध सहित मानव लक्ष्य बोध, जीवन मूल्य बोध, लक्ष्य सफलता के लिए निश्चित दिशा बोध कराने के साथ–साथ स्वयं में विश्वास श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन में स्वावलंबन का बोध सर्व सुलभ होना।

शिरो भाग – गले से ऊपर का हिस्सा।

शिक्षा – शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय का प्रक्रिया।

शिष्ट मूल्य – सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौजन्यता, सहजता, उदारता, अरहस्यता, निष्ठा।

शिष्टाचार – स्थापित मूल्यों सहित शिष्ट मूल्यों को प्रमाणित करना।

शिष्य – जिज्ञासु, मानवीय शिक्षा संस्कार को ग्रहण करने के लिए तत्पर।

शिष्टता – शिष्ट मूल्यों का निर्वाह।

शिक्षित – शिक्षा संस्कार संपन्न मानव।

शिष्टतानुमोदन – दृष्टा पद प्रतिष्ठा संपन्न जागृत मानव का अनुमोदन।

शिल्प – वस्तु रचना कारीगरी, निपुणता, कुशलता पूर्वक प्रमाण।

शिलान्यास – वास्तु रचना की आरंभ क्रिया।

शिक्षा संस्कार – ज्ञान विवेक विज्ञान सहज बोध होना।

शीतमान – शीत का मापदंड।

शील – मानवीयतापूर्ण आचरण की स्वीकृति।

शीत – शरीर सहज उष्मा का मापदंड से कम होना इस प्रकार उष्ण भी शरीर सहज उष्मा से अधिक।

शुभबेला – जागृति सहज प्रमाण प्रस्तुत करने की बेला।

शुद्ध – तीनों कालों में एक सा सुखप्रद।

शुभ – अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा।

शुभकामना – मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य चरितार्थ होने की कामना।

शुभवचन – मानव लक्ष्य, जीवन मूल्यों को बोध कराना, सार्वभौम व्यवस्था को बोध कराना।

शुभारंभ – मानवीय शिक्षा संस्कार की शुरुआत।

शुचिता – स्वच्छता, स्वस्थता।

शुभेच्छा – सर्वशुभ होने के लिए कामना प्रयास।

शुभाकांक्षा – सर्वशुभ ज्ञान विचार योजना और कार्यक्रम।

शून्य स्थली – परस्परता के मध्य में नित्य वर्तमान।

शून्यावकाश – वस्तु विहीन स्थली में भी व्यापक वस्तु।

शून्याकर्षण – भारमुक्त स्थिति, परस्परता में भारमुक्ति, ग्रहव्यूह सौर व्यूह में भागीदारी करते हुए शून्याकर्षण में है, यह धरती शून्याकर्षण में है।

शून्य – व्यापक वस्तु सहज अस्तित्व।

शेषकालीन – किसी क्रिया के अनन्तर बचा हुआ समय।

शेष – सह अस्तित्व।

शैशवकालीन मानसिकता – अनुकरण करने की मानसिकता।

शैली – अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन कार्य में सफलता का तरीका, कार्यवाही, कार्यशैली।

शोध – अध्ययन, निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण पूर्वक स्वीकृति।

शांति – समाधान समृद्धि सहज अनुभव, इच्छा एवं विचार की निर्विरोधिता।

श्वसन – सांस लेना।

शासक – नैतिकता का पालन करते हुए दूसरों को नैतिकता का व्यवहार, व्यवस्था पूर्वक अथवा सुधार व्यवस्था पूर्वक पालन कराने वाला व्यक्ति या व्यक्ति समूह।

शासन (मानव में) – मानवीयता।

शासन के लक्षण – नियंत्रण, नियति क्रमानुसरण निर्विरोध व अवरोध उत्सारण (उन्मूलन)।

शिक्षा – अस्तित्व में जीवन सहज मूल्य, मानव मूल्य, व्यवसाय मूल्य, स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्य के प्रति निर्भ्रम जानकारी सहित व्यवसाय, व्यवहार चेतना की परिष्कृति।

शुभ – अभय, सहअस्तित्व पूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार-विन्यास, समृद्धि , समाधान, विकास की ओर गति।

शुभ कामना – जागृति एवं विकास के प्रति तीव्र इच्छा ।

शुचिता – स्थान एवं शारीरिक स्वच्छता एवं वैचारिक संयमता का योग फल।

शून्य – जो स्वयं में क्रिया न हो, सभी क्रियाएं उसी में समाई हो।

ह

हस्त – शरीर का अंगभूत अविभाज्य रूप में कार्यरत हाथ।

हस्तलाघव – शिल्पकारिता, निपुणता, कुशलता।

हस्तशिल्प – बिना किसी औजार के केवल हाथों से ही संपन्न करने वाली कला।

हानि – अधिक वस्तु व सेवा के बदले में, कम वस्तु व सेवा को पाना।

हासोल्लास – प्रसन्नता पूर्वक व्यवस्था में जीना, व्यवस्था में भागीदारी करना।

हित – स्वास्थकारी स्रोत।

– शरीर सीमानुवर्तीय उपयोगिता।

हृदय – शरीर में खून को वितरित करने वाली क्रिया तंत्र।

हृदयंगम – कार्य योजना प्रवृत्ति।

हीनता – विश्वासघात।

हीनफल – हीनता का परिणाम।

ह्रास – गुरुमूल्यवत्ता से लघु मूल्य की ओर परिणाम।

क्ष

क्षमता – वहन करने वाली क्रिया, निर्वाह करने वाली क्रिया, धारकता सहित वाहक क्रिया।

क्षमा – अनावश्यकता के प्रति उदासीन अथवा विस्मरण।

– अन्य के विकास के लिए की जाने वाले सहायता के समय उसके ह्रास पक्ष से अप्रभावित रहने की क्षमता।

क्षण – छोटा, क्रिया की अवधि।

क्षरण – रासायनिक एवं भौतिक क्रिया।

क्षमता सहज प्रमाण – जागृति संपन्नता, समझदारी संपन्नता, ईमानदारी संपन्नता, ज्ञान विवेक विज्ञान संपन्नता।

क्षेत्र – प्रभाव क्षेत्र, कार्य क्षेत्र, निवास क्षेत्र, भ्रमण क्षेत्र।

क्षेत्रफल – लम्बाई चौड़ाई।

क्षांति – अज्ञान की अस्वीकृति क्षमता।

क्षोभ – क्षमता एवं योग्यता की श्रम में परिणति के लिए विवशता।

श्र

श्रद्धा – श्रेय की ओर गतिशीलता, जागृति की ओर गतिशीलता, समझदारी की ओर गतिशीलता।

– आचरणपूर्णता की ओर गुणात्मक परिवर्तन।

श्रम – निपुणता कुशलता सहज मानसिकता पूर्वक शरीर के द्वारा उपयोगी कला मूल्य की स्थापना क्रिया के रूप में श्रम।

– इकाई की आशा और उपलब्धि की ऋण धनात्मक स्थिति ।

श्रम नियोजन – प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजनपूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य को स्थापित करना।

श्रम मूल्य - श्रम नियोजन पूर्वक उत्पादित वस्तु में उपयोगिता व कला मूल्य का मूल्यांकन के आधार पर श्रम मूल्य की निधारण क्रिया इसी आधार पर वस्तु विनिमय होना।

श्रमाधिक्य - अधिक श्रम आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में।

श्रवण - सुनने वाली क्रिया।

श्री - अभाव का अभाव, भाव, समृद्धि।

श्रुतिमान - बोलने वाला ।

श्रुति - अर्थ संगत शब्दों का श्रवण, उच्चारण।

- यथार्थ जीवन दर्शन पूर्ण अभिव्यक्ति।

श्रेय - जागृति की ओर गति व प्रमाण।

श्रेयवादी - जागृति सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन सहज संवाद।

श्रेष्ठ - मानवीयता अमानवीयता की अपेक्षा में श्रेष्ठ, देवमानवीयता मानवीयता से श्रेष्ठ, दिव्यमानवीयता देवमानवीयता से श्रेष्ठ।

श्रेष्ठतम - दिव्यता।

श्रृंखला - कतार एक से एक जुड़ी हुई कड़ियाँ।

श्रृंखला द्वय - प्रवर्तन = क्लेष परिपाकात्मक, हर्ष परिपाकात्मक मूल प्रवृत्तियाँ।

श्रृंगारिकता - शरीर व स्थान शोभाकरण क्रिया, सामग्री सहित।

ज्ञ

ज्ञान - अनुभव में आनन्द, व्यवसाय में नियम, अपरिणामता के कारण पूर्ण, सर्वत्र एक सा अनुभव में आने के कारण ईश्वर, ज्ञान में समस्त क्रियायें संरक्षित एवं नियंत्रित होने के कारण लोकेश, सर्वत्र एक सा विद्यमान रहने के कारण व्यापक, चैतन्य होने के कारण चेतना, आत्मा से अति सूक्ष्मतम एवं असीम अरूप होने के कारण परमात्मा प्रत्येक वस्तु संपृक्त होकर सचेष्ट होने के कारण निरपेक्ष शक्ति, संपूर्ण प्रकृति का आधार होने के कारण मूल सत्ता एवं प्राण।

ज्ञानानुभूति - प्रमाणिकता = जाना हुए को मानना एवं माने हुए को जानना = समझ = अस्तित्व में, से, के लिए दृष्टा पद = ज्ञाता पद = व्यापकता में जड़-चैतन्य प्रकृति का संपृक्तता पूर्ण स्वीकृति निरंतरता।

ज्ञापन - विधिवत् ज्ञान प्रदान करने के लिए की गई स्मरणीय प्रक्रिया।

प्रकाशित व प्रकाशनाधीन प्रबन्ध

''अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन'' के रुप में 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद है । इसके प्रणेता एवं लेखक श्री ए. नागराज, अमरकण्टक हैं । इसमें अस्तित्व दर्शन को विविध प्रकार से स्पष्ट किया गया है।

दर्शन

1. मानव व्यवहार एवं दर्शन	(प्रकाशित)
2. मानव अनुभव दर्शन	(प्रकाशित)
3. मानव अभ्यास दर्शन	(प्रकाशित)
4. मानव कर्म दर्शन	(प्रकाशित)

शास्त्र

1. व्यवहारवादी समाजशास्त्र	(प्रकाशित)
2. आवर्तनशील अर्थचिंतन	(प्रकाशित)
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान	(प्रकाशित)

वाद

1. समाधानात्मक भौतिकवाद	(प्रकाशित)
2. व्यवहारात्मक जनवाद	(प्रकाशित)
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद	(प्रकाशित)

योजना

1. जीवन विद्या योजना	(प्रकाशनाधीन)
2. मानव संचेतनावादी शिक्षा-संस्कार योजना	(प्रकाशनाधीन)
3. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना	(प्रकाशित)

अन्य

1. परिभाषा संहिता	(प्रकाशित)
2. जीवन विद्या - एक परिचय	(प्रकाशित)
3. अस्तित्व एवं अस्तित्व में परमाणु का विकास	(प्रकाशित)
4. मानवीय संविधान का प्रारुप	(प्रकाशित)
★ जीवन विद्या गीत (लेखक-प्रदीप पूरक)	(प्रकाशित)